

बादल छँट गये

(उपन्यास)

कृष्ण चन्द्र

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़
दिल्ली

प्रकाशक
नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़
दरीबा कलाँ, दिल्ली।

प्रथम संस्करण
सन् १९५७

मूल्य : ३ रुपये

मुद्रक :—
हरि हर प्रेस, दिल्ली

Badal Chhat Gayo : Krishan Chandar

भूमिका

"बादल लौट गए" कृष्ण चन्द्र का एक लघु उपन्यास है। जिसका विषय प्रेम और विश्व शान्ति है। कृष्ण चन्द्र के साहित्य की यह एक विशेषता रही है कि उनके पात्रों के निजी जीवन की सीमाएँ, मानव समाज के सामूहिक जीवन की सीमाओं से मिल कर एक व्यापकता प्राप्त कर लेती हैं। व्यक्ति समाज में और समाज विश्व में समा कर सारी मानव जाति की समस्याओं, आकाँक्षाओं और उनके संघर्षों का प्रतीक बन जाता है और पाठक उस सूक्ष्म परन्तु महत्वपूर्ण सम्बन्ध की झलक देख लेता है जो बीसवीं सदी के अन्दर व्यक्ति और पूरे समाज में पैदा हो गया है, जिसके कारण एक व्यक्ति पूरे मानव समाज का सन्तुलन बिगाड़ सकता है और पूरे समाज का बिगड़ा हुआ सन्तुलन व्यक्ति विशेष के जीवन की शान्ति और सुन्दरता का हनन कर सकता है। जीवन के अध्ययन को और उसके साहित्यिक विवेचन की यही विशेषता कृष्ण चन्द्र को अन्य साहित्यकारों से पृथक और प्रमुख स्थान प्रदान करती है।

"बादल लौट गए" यूं तो एक उपन्यासकार इसहाक की कहानी है, जो अपनी प्रेमिका जमीला का प्रेम पाने में असफल हो कर आत्म हत्या करने बम्बई के पास पहाड़ी स्थान खंडाले में आता है। लेकिन कृष्ण चन्द्र उसे आत्म हत्या करने नहीं देता। वह उसकी समस्याओं का समाधान पेश करता है और उसके जीवन में उन तत्वों का समावेश करता है जिनके कारण वह जीवन से निराश हो गया। वे तत्व क्या हैं और उन्हें लेखक ने किस प्रकार जुटाया है, इसी का पता लगाने की चेष्टा इस भूमिका में करूँगा।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है, एक तत्व जो इसहाक़ के जीवन में नहीं रहा था, वह है प्रेम। इसहाक़ अपनी प्रेयसी जमीला के प्रेम को अपने पर केंद्रित न रख सका। वह जमीला के प्रेम को केंद्रित क्यों न रख सका यह कदाचित सामान्य पाठक को अनोखा, अश्लील और अशिष्ट लगेगा। इसका कारण जमीला और जमीला का चरित्र है जो सामन्य पाठक की नैतिक भावना के लिए स्वीकार करने योग्य न हो। जमीला हमारे समाज की सामान्य नारी है। वह बम्बई के औद्योगिक नगर की ऐशपसन्दी की पैदावार है। वह वासना से फड़कती हुई माँसल देह है, जो आत्मा या नैतिक चेतना से पूर्णतया वंचित है। वह नाचती भी है तो उसके नाच में कला नहीं है क्योंकि कला कल्पना से पैदा होती है और कल्पना उन सूक्ष्म तत्वों का नाम है जो मानव के देह से नहीं, उसके सौन्दर्य ज्ञान और उसकी संवेदनशीलता से सम्बन्ध रखते हैं। एक तरह से जमीला मानव की विशुद्ध वासना का, उसके कच्चे सेक्स का प्रतीक है। और उसके द्वारा कृष्ण चन्द्र ने मानव के व्यक्तित्व में वासना के उन्हीं जैसे तत्वों का पता लगाने की कोशिश की है। इसहाक़ जैसे साहित्यकार का जमीला की ओर झुकना, उसके लिए अपना बौद्धिक पतन सहर्ष स्वीकार करना और अन्त में जीवन की बाजी लगा देना इस बात का सबूत पेश करता है कि मानव में सभ्यता और शिष्टता के विकास के उपरान्त, वहशीपन, पशुता और वासना के तत्व पर्याप्त मात्रा में शेष हैं। लेकिन कृष्ण चन्द्र डी० एच० लारेन्स नहीं है। वह फ्राइडवादी साहित्यकार भी नहीं है जो जीवन को बर्बरता की ओर ले जाने के लिए इस प्रकार के विशलेषण करते हैं। वह तो टीका तैयार करने वाले उस वैज्ञानिक की तरह है जो विषाणुओं का पता ही इस लिए लगाता है कि उनको

नष्ट करने का टीका बना सके। उदाहरण के लिए कृष्ण चन्द्र का यह विश्लेषण देखिये :—

"और जब इसहाक को धरती का ख्याल आया तो उसे इन्सान का ख्याल आया, क्योंकि इन्सान भी धरती की तरह है। वह भी अन्दर से खौलते हुए लावे की तरह है। करोड़ों वर्षों से प्रगति करते करते इस मंज़िल पर पहुंचा है कि आज उसकी अनियंत्रित भावनाओं और अनियमित प्रवृतियों पर सभ्यता और संस्कृति की एक तह जमी है, बहुत पतली सी तह। यह बहुत मजबूत नहीं है। इसमें जगह जगह छेद हैं और दराड़े हैं, जहां से लावा उबल उबल कर बाहर आ जाता है। तो भी यह एक तह तो इन्सान के पास है। इसी पर तो उसने अपना जीवन बनाया है।"

साहित्यकार कृष्ण चन्द्र विकल है मानव व्यक्तित्व से पाशविक और असामाजिक तत्वों को उखाड़ फैंकने के लिए और उनकी जगह सभ्य, सौम्य और सामाजिक तत्व लाने के लिए। और यहां से कृष्ण चन्द्र ने केवल फ्राइड वादियों से भिन्न रास्ता अपनाया है बल्कि नैतिक वादियों से भी। वह व्यक्ति के विकारों को केवल व्यक्ति के सुधार की कोशिशों से दूर करने को अपर्याप्त मानता है। वह धर्म या भगवान के नाम पर उसे चरित्रवान या सज्जन बनने को नहीं कहता। वह उसके अन्दर एक सामाजिक चेतना पैदा करके, उसकी शक्तियों को उन आदर्शों की प्राप्ति में लगाने के लिए, जिनका उनके सामाजिक भविष्य से गहरा सम्बन्ध है, उसे एक अधिक स्वस्थ, बौद्धिक और मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है। इस तरह वह उसे नैतिकता या भगवान के भूत से डराने धमकाने की कोशिश नहीं करता है। डराने धमकाने की चेष्टाओं को वह नकारात्मक

मानता है। वह तो मानव के व्यक्तित्व में निहित शक्ति के प्रवाह की पुरानी दिशाओं को बदल कर निर्माण की उन नहरों में बहाना चाहता है जो सामाजिक जीवन का अध्ययन करने वालों ने एक नए मानव समाज की स्थापना के उद्देश्य से बनाई हैं। और इस उपन्यास में वासन्ती और मर्देकर पात्रों द्वारा कृष्ण चन्द्र ने अपना यह उद्देश्य प्राप्त करने की चेष्टा की है। मर्देकर एक फौज से निकला सिपाही है। उसका एक हाथ, एक कान और एक टाँग कटे हुए हैं। वह अपंग और असुन्दर है। उधर वासन्ती एक मराठी लड़की है, जो होटल में बर्तन और कपड़े धोती है। वह सुन्दर है, जवान है, फिर भी मर्देकर को चाहती है। किस लिए? इस लिए कि मर्देकर एक अधूरा आदमी नहीं है। वह पूरा, सम्पूर्ण सभ्य सामाजिक मानव है। उसे शरीर के साथ साथ समाज की सुव्यवस्था का, सभ्यता की सुरक्षा का भी पूर्ण ज्ञान है। वह मानव के इतिहास से, उसके गलत और सही अनुभवों से कुछ नतीजे निकालने में कामयाब हो गया है। इस प्रकार उसकी बौद्धिक चेतना सम्पूर्ण है और इसी चेतना के कारण वह अपंग और मोची होते हुए भी खंडाले का एक सम्मानित, लोकप्रिय नागरिक है। वह लोगों के आपसी झगड़े सुलझाता है, उनको परामर्श देता है। उनको प्यार से रहना सिखाता है और सिखाता है उन लोगों से सतर्क रहना जो अपने स्वार्थ के लिए, व्यापार के लाभ के लिए, राजनैतिक विचारधारा के प्रचार के लिए

जंग कराते हैं, रहन सहन मँहगा बनाते हैं और स्वस्थ जवानों को लड़ाई में झोंक कर अपाहज, अपंग बनाते हैं। कि अपंग, असुन्दर और अपाहज मर्देकर को एक सुन्दर साधारण लड़की प्यार कर सकती है, उन गुणों के कारण, जिनका शरीर से सम्बन्ध नहीं है—जिनका उसके अपने जीवन की सुख सुविधा और ऐश्वर्य से सीधा सम्बन्ध नहीं है—यह प्रस्तुत करके कृष्ण चन्द्र ने प्रेम के एक अधिक प्रगतिवादी, अधिक सभ्य और सौम्य आधार और आदर्श का पता दिया है। कृष्ण चन्द्र की यह बासन्ती वह पौराणिक नारी नहीं है जो धर्म या संस्कारों से बाध्य हो कर एक अपाहज को अपना आराध्य मानती है। यह आज की वह चेतन नारी है जो स्वस्थ, सामाजिक और मानवीय आदर्शों का अपने जीवन के सुख और भविष्य से सीधा सम्बन्ध देखती है। प्रेम शरीर ही से नहीं, एक सकारात्मक विचार से भी तो हो सकता है—यह दिखा कर कृष्ण चन्द्र ने केवल इसहाक़ और जमीला के प्रेम का दूसरा रूख ही प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि इसहाक़ को प्रेरणा दी है कि जीवन जमीला के प्रेम में सीमित नहीं है। जीवन में प्यार करने को, कुर्बानी देने को और बहुत सी सुन्दर चीजें हैं, जैसे सुन्दर सामाजिक आदर्श।

और जिस सामाजिक आदर्श को इस लघु-उपन्यास में कृष्ण चन्द्र ने प्रस्तुत किया है वह है विश्व शान्ति का आदर्श। जर्मन नारी ऐलसा

को बीच में लाकर कृष्ण चन्द्र ने उपन्यास का क्षेत्र-फल विस्तृत करने की कोशिश की है। इस प्रकार के विदेशी पात्र कृष्ण चन्द्र के अन्य उपन्यासों में भी हैं। हो सकता है कि इस प्रकार के पात्र और विश्व-शान्ति जैसे मानवीय-राजनैतिक आदर्श, "विशुद्ध-साहित्य" के पाठकों को अखरें। क्योंकि विदेशी पात्र और बहुत से ऊँचे राजनैतिक आदर्श अभी तक हमारी चेतना का भाग नहीं बने हैं। लेकिन इस सम्बन्ध में पाठकों और आलोचकों को यह तथ्य याद रखना होगा कि साहित्यकार चेतना में मौजूद तत्वों को ही प्रस्तुत नहीं करता--वह उसमें नए तत्वों का समावेश भी करता है। वह चेतना का अनुवादक ही नहीं है, वह उसका निर्माता भी है। यदि ऐसा न होता तो साहित्य का मानव के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास में कोई महत्व न होता।

२२—८—५७ रेवती सरन शर्मा

नई दिल्ली

वह जमीला से निराश होकर खंडाले आया था और मरना चाहता था। इस के लिये उसने खंडाले के सब से बढ़िया होटल रोज़ में एक काटेज किराये पर ली—सात दिन के लिये। सात दिन तक वह खंडाले के सुन्दर संसार में रह कर मर जाएगा—ऐसा उसने बम्बई से चलते हुए ही सोच लिया था। बम्बई में वह मरना न चाहता था। अपने तंग फ्लैट में, जमीला के मकान के सामने, किसी लोकल गाड़ी के पहियों के नीचे, बन्दरगाह के गन्दे बदबूदार खारे पानी में डूब-डूब कर बुलबुले छोड़ती हुई मौत उसे पसन्द न थी। तभी उस सौन्दर्य-प्रेमी ने पश्चिमी घाट में एक नगीने की भाँति चमकते हुए खंडाले जैसे सुन्दर-सुरम्य स्थान को अपनी मौत के लिए पसन्द किया था और अपने बैंक में जितना रुपया था वह सब निकलवा के खंडाले चला आया था। अब उसके पास इतनी रकम थी कि वह बढ़िया से बढ़िया

होटल में सात दिन तक बड़ा सुन्दर और स्वच्छ जीवन व्यतीत कर सकता था—एक सुन्दर गीत की भाँति। इसके बाद वह चुपके से मर जायेगा—जिस तरह बहुत-से गीत अपने जन्म के सात दिन बाद मर जाते हैं। लेकिन यह सात दिनों का सौन्दर्य भी क्या कोई कम होता है? विश्व के श्यामल शयन-कक्ष में मानव के विस्मित नेत्रों ने करोड़ों वर्षों से तारों के प्रदीप्त रूप को देखा है, यहाँ तक कि उसके नेत्रों से विस्मय विलुप्त हो गया है, रूप मर गया है, केवल तारे बाकी रह गये हैं। अमर सौन्दर्य का यही अन्त होता है।

लेकिन पश्चिमी घाट में जब बादल बरस-बरस कर थम जाते हैं और रात के अन्धकार में धरती के वक्ष से लगी हुई कोई अमरबेल जब लाखों जुगनुओं समेत जग-मगा उठती है तो ऐसा लगता है जैसे रात अपने अंचल में आकाश गंगा बटोर धरती पर उतर आई है। इस एक क्षण के प्रदीप्त सौन्दर्य का दृश्य किसी ने देखा है—उस एक क्षण का जो अन्तिम अन्धकार से पहले और लाखों उज्यारों के बाद है। इस सौन्दर्य से उत्तम और उज्ज्वल उस तारे का दिल है।

उसने सोच लिया था कि मरने से पहले उसके जीवन की भीगी हुई शाम इसी तरह जुगनुओं से

जगमगाती होगी। केवल सात क्षण, इसके पश्चात् वह अन्धेरा आ जायगा, जिसके किनारों पर दूर-दूर तक कोई जीवन नहीं है।

उसने इस शाम के लिए बड़े सुन्दर होटल का चुनाव किया था। होटल रोज़ पहाड़ की चोटी पर स्थित था। उसकी लाल टाइलों वाली छतें और गुलाबी रंग की दीवारें देख कर ऐसा प्रतीत होता था मानो पहाड़ की चोटी पर कोई गुलाब का फूल खिल रहा है। बीच की ऊँची इमारत से हट कर पहाड़ की ढलानों पर सुन्दर काटेजें, फूल की पत्तियों की तरह फैली हुई थीं।

उसकी काटेज एक ओर टीले पर थी, जहाँ से दृष्टि जो ढलानों की हरियाली से फिसलती तो नीचे घाटी में गुजरने वाली रेल गाड़ी की लाइन तक पहुँच जाती थी। रेल गाड़ी की लाइन से परे जो पहाड़ों की शृंखला आरम्भ होती थी तो लोनावला के रमणीक स्थान तक पहुँच जाती थी। रेल की पटरी आखों मैदानों, झरनों और पुलों के गिर्द घूमती हुई कभी छिपती, कभी सामने आती हुई, हजारों अदाओं से बल खाती, कतराती चली जाती थी। परन्तु यह सब कुछ दिन में था। रात के समय वह अपनी काटेज के बरामदे से केवल झरनों का संगीत सुन सकता था, केवल

गाड़ी में पहियों की ताल, केवल इंजन की छाती से निकल कर गूँज-गूँज कर दूर-दूर तक भटक जाने वाली सीटी की वह मजबूर आवाज़ सुन सकता, जो यों कहती मालूम होती थी कि रात बहुत पास है, पर प्यार बहुत दूर है और रास्ता कहीं नहीं है; केवल किसी दैत्य की आंखों की भाँति जलते हुये सिगनल के लाल-लाल निशान हैं, जिनसे रोशनी रक्त की तरह रिस-रिस कर बहती है। 'हाय जमीला जब तू नहीं है तो यह रात भी किसी दैत्य की दानवी गुफ़ा की भाँति भयानक और डरावनी है। प्रेम के बिना कोई जीवन, किसी का जीवन समझ में नहीं आता। और जो जीवन समझ ही में न आ सके, उसे खत्म कर देना ही अच्छा है। इस-लिये जमीला अच्छा है कि मैं मर जाऊँ-ऐसा उसने आराम कुर्सी पर बैठे-बैठे सोचा—और उसे अपनी मृत्यु एक उत्तम, उज्ज्वल अनंन्त की तरह सुन्दर प्रतीत हुई।

उसने छैः कोर्स का डिनर खाया था। उसके होंट पान की खुशबू से महके हुए थे और उसकी भावनाएँ प्रेम की मद्धिम-मद्धिम आँच में इस प्रकार सुलग रही थीं कि वह उन से धूप-सामग्री का सा सूक्ष्म, सुगंधित धुँआ उठता देख रहा था। 'हाय इस तरह मर जाना कितना अच्छा है'—उसने मन ही मन अपनी सुन्दर और नूतन

कल्पना की प्रशंसा की और आराम कुर्सी पर अच्छी तरह लेटते हुए उसने अपने सामने के स्टूल पर अपने पाँव रख दिए। और उसके मस्तिष्क में आप ही आप वह झरोखा खुल गया जिससे झाँकते हुए उसने जमीला को पहली बार देखा था।

उस दिन बैलार्ड पीटर के ड्राइ डॉक में एस० एस० निज़ाम खड़ा था। उस पर मरम्मत का काम हो रहा था और यह काम कई रोज़ से जारी था। परसों यह जहाज़ ड्राई डॉक छोड़ कर समुद्र में जाने वाला था। इसलिए एस०-एस० निज़ाम के सैकिंड इन्जीनियर मुलतानी ने उसकी दावत की थी। सैकिंड इन्जीनियर से उसकी मुलाक़ात बैलार्ड पीटर रोड की चौकी के बाहर एक ईरानी रैस्तराँ में हुई थी। वह आम दिनों की तरह समुद्री जहाज़ के खलासियों और मल्लाहों के साथ एक मेज पर बैठा हुआ चाय पी रहा था और गप लड़ा रहा था और सीधे-सादे अनपढ़ जहाज़ियों से वह घटनाएँ सुन रहा था जो उनके साथ दूसरे बन्दरगाहों में, अजनबी देशों के अजनबी बन्दरगाहों में घटी थीं। उनके क़िस्से बहुत ही नंगे थे लेकिन ज़िन्दगी की तरह सच्चे थे। जो किसी किताब में नहीं लिखे जा सकते लेकिन जिन्हें सुनने वाले किसी कीमती से कीमती पुस्तक के जीवन-दर्शन और नैतिक पाठ से

अधिक महत्वपूर्ण समझ कर अपने मस्तिष्क में सुरक्षित रखते हैं। लेकिन सभी किस्से नंगे नहीं होते। कभी-कभी वे ऐसा लिबास पहन कर आते हैं कि ख़लीफा हारुन-उल-रशीद की अलिफ लैला की रात का भ्रम होता है, कभी ऐसे चीथड़े कि दरिद्रता की आँख से दीनता के आँसू रिस्ते नजर आते हैं, कभी ऐसे विकृत कि सुनने वाला, सुनाने वाले जहाज़ी का मुँह ताकता रह जाता है कि ऐसा अत्याचार भी क्या इस संसार में किया जा सकता है। वास्तव में जहाज़ियों की दुनिया उनके जहाज़ की तरह सीमित और जहाज़ के बाहर फैले हुए समुद्र की तरह निस्सीम होती है। बहुत दिनों से वह जाहाज़ियों के जीवन पर एक उपन्यास लिखने की सोच रहा था। लेकिन अभी तक वह इस विषय के दिल की धड़कन न पा सका था। इसलिए वह बार-बार बैलार्ड पीटर के चायखानों में जाता था। अनेकों जहाजियों से उसकी घनिष्ठता आप से तुम और तुम से गाली तक पहुँच चुकी थी। जहाजियों की गाली—यह भी एक आश्चर्यजनक शाब्दिक चित्रकला है जिस पर कभी गोगां की संकेतात्मकता का और कभी पिकासो की अतिशयोक्ति का भ्रम होता था। कभी-कभी उसे ये गालियाँ सुनते-सुनते विचार होता कि अगर ये गालियाँ चित्रों की तरह किसी प्रदर्शनी में लटकाई जाएँ तो

नूतनता और प्रयोगवाद के अनुयायी लज्जा से अपना मुँह छिपाते फिरें, अपने तमाम पांडित्य के बावजूद इतने अधकचरे, इतने बौने मालूम दें इन गालियों के चित्रकारों के सामने! परन्तु बुद्धिवादियों के इस संसार को क्या कहिये कि वे डाली जैसे चित्रकारों को तो पूजता है, पर इन कलाकार जहाजियों के अस्तित्व को स्वीकार भी नहीं करता।

हाँ तो वह एक दिन चायखाने की एक मेज़ पर बैठा हुआ जहाजियों की एक टोली को अपनी एक हास्य कहानी सुना रहा था कि उसने अनुभव किया—एक व्यक्ति उसकी कुर्सी के पीछे आ कर खड़ा हो गया है। उसने पलट कर देखा। उस दुबले-पतले, लम्बे पिचके हुए गालों वाले साँवले रंग के व्यक्ति ने, जिसके मुख पर कहीं-कहीं चेचक के निशान थे, उसे संकेत से अपनी कहानी जारी रखने के लिये कहा। वह फौरन पलट कर अपनी कहानी फिर से सुनाने में संलग्न हो गया। कुछ समय के बाद उसने अनुभव किया, वह व्यक्ति एक कुर्सी खिसका कर उसके निकट बैठ गया है। फिर थोड़ी देर के बाद उसे अनुभव हुआ कि उसकी कहानी में जहाजियों को जितना आनन्द पहले आ रहा था, अब नहीं आ रहा। उनकी हंसी मुस्कानों में दब गई,

मुस्कानें होठों के कोनों में भिच गईं। और थोड़ी देर के बाद जब कहानी खतम हुई तो एक एक करके सारे जहाजी वहाँ से खिसक गए और वह दुबले पतले व्यक्ति के साथ अकेला रह गया, और उसने बड़े क्रोध से उस आदमी की ओर देखा जिसने इस सुन्दर सभा को अस्त-व्यस्त कर दिया था। सूरत, कपड़ों और हाव भाव से यह व्यक्ति एक अफसर दिखाई देता था। और एक अफ़सर दूसरी दुनियाँ का होता है जिसकी सतह जहाजियों की दुनिया से भिन्न होती है और जब कभी ये दोनों दुनियाँ मिलती हैं तो उनकी रगड़ से किसी चिनगारी के फूट पड़ने का अन्देशा होता है। उसने इस मौन विस्फोट को कहानी सुनाते सुनाते ही अनुभव कर लिया था, और इसीलिये वह क्रोध से इस दुबले-पतले अफसर की ओर देख रहा था।

दुबले-पतले व्यक्ति ने अपना परिचय कराने से पहले उससे पूछा—"क्या आप प्रसिद्ध लेखक इसहाक़ हैं?

इसहाक़ ने जोर से मेज पर मुक्का मार कर कहा—"मैं इसहाक़ हूँ कि चक़माक़ हूँ कि बेबाक हूँ, आपको इससे क्या? आपको इस तरह आ टपकने की क्या जरूरत थी?"

दुबला-पतला व्यक्ति तनिक सहम कर पीछे हट गया। कुछ क्षण मौन रह कर बोला—"माफ कीजिएगा मुझे आप से मिलने का बड़ा शौक था। मेरा नाम मुलतानी है। मैं एस० एस० निजाम में सैकिन्ड इन्जीनियर हूँ। मेरा जहाज़ तीन दिन के बाद यहाँ से चला जाने वाला है। इसलिये जब मैंने आपको देखा, क्योंकि मैंने आपकी तस्वीरें अखबारों में देखी हैं, तो मैंने आपको पहचान लिया। क्योंकि मैं आपसे मिलना चाहता था, इसलिये मैं यहाँ बैठ गया, हाँलाकि मुझे मल्लाहों के साथ बैठना पसन्द नहीं है। लेकिन मैं आपको देखने के लिये बैठ ही गया, संजे ?

मुलतानी नाक में बात करता था, समझे को संजे कहता था। इसहाक़ को उसका संजे बहुत पसन्द आया और वह मुस्करा उठा। मुलतानी झिझकते-झिझकते फिर उसके निकट एक कुर्सी पर बैठ गया। कहने लगा—"कल शाम आप मेरे साथ खाना खायें—एस० एस० निज़ाम पर। आपको जहाज़ अन्दर से दिखाऊँगा और बढ़िया शराब पिलाऊँगा। आप शराब पीते हैं न ? सब राइटर लोग पीते हैं, संजे ?"

"संजे" ! इसहाक़ ने मुलतानी का हाथ जोर से पकड़ कर इस तरह दबाया कि वह बिलबिला उठा,

बोला–"तुम राइटर हो कि पहलवान हो ?" इसके बाद वह अपने मज़ाक पर आप ही हंस पड़ा। फिर बोला—

"जहाज़ पर मैं तुमको अपनी लाइफ स्टोरी बतलाऊँगा, तुम उसको लिख लो, मेरी लाइफ स्टोरी।"

"बहुत अच्छा"—इसहाक़ ने अपना पीछा छुड़ाते हुए उससे कहा, लेकिन मुलतानी कहाँ उसका पीछा छोड़ने वाला था। वह उसे बैलार्ड पीटर की कस्टम चौकी तक ले गया और कस्टम वालों से एक पास लेकर इसहाक़ के हाथ में दे कर बोला—"कल शाम के ठीक ६ बजे मैं आपका यहाँ इन्तजार करूँगा। जरूर आना, मेरा जहाज़ तीन दिन में दक्षिणी अमरीका जाने वाला है, संजे ? तुम कौन सी शराब पीते हो ? ह्विस्की कि बरांडी ? मैं दोनों ले आऊँगा। हमारे जहाज पर प्राहिबिशन बिल्कुल नहीं है। जहाज पर तुम सब कुछ पी सकते हो। और हाँ याद आया, मुझको अभी शैम्पेन भी तो लानी है कहीं से। सांई, किधर से लाऊँगा।"

'सांई सुन कर इसहाक़ ने उससे पूछा—

"क्या तुम सिन्धी हो ?"

मुलतानी प्रसन्न हो कर मुस्करा दिया।

इसहाक़ ने पूछा—"तुम्हारा पूरा नाम क्या ?"

"मोतीराम मुलतानी।"

"मिस्टर मोतीराम मुलतानी, क्या मैं आप से पूछ सकता हूँ कि व्हिस्की और बरांडी के होते हुए शैम्पेन की क्या ज़रूरत पड़ गई ?"

"इस लिये कि इस पार्टी में दो औरतें भी आ रही हैं।" मुलतानी ने उत्तर दिया।

"औरतें"—इसहाक़ मन ही मन में चिल्लाया। अब तक उस का विचार था कि वह मुलतानी से बिदा होते ही दावत के पास के पुर्जे पुर्जे कर देगा। अब उस ने बड़ी सावधानी से पास को तह करके अपनी जेब में डाल लिया। औरतें—शैम्पेन पीने वाली औरतें, अब तक उस ने अपने और दूसरे लेखकों के उपन्यासों में देखी थीं। कल वह उन्हें अपनी आँखों से देखेगा।

"ज़रूर आना, संजे ?" मुलतानी ने बड़ी विनती और बड़े आग्रह से कहा।

"कोशिश करूँगा"—इसहाक़ ने ऊपर से बनते हुए कहा, "कल सेंट ज़े वेर कालिज के प्रोफेसरों ने मुझे चाय पर बुलाया है। फिर चीनी दूतावास में मुझे हिन्दुस्तानी चित्रकला पर एक लैक्चर देना है। रात को फ़िल्म राइटर ऐसोसिएशन का डिनर ताज में है। समझ में नहीं आता कहाँ कहाँ जाऊँगा।"

"नहीं तुम को इधर जरूर आना है, संजे ? जरूर आना है।"

"भाई मैं कोशिश करूँगा, जरुर कोशिश करूँगा।" इसहाक़ ने बड़ी लापरवाही से कहा, और फिर मुलतानी से बिदा हो कर चला गया।

दूसरे दिन शाम के साढ़े पाँच बजे ही वह बैलार्ड पीटर के चैक पाइंट पर मौजूद था।

इस समय अपनी काटेज के बरामदे में आँखें बन्द किए हुए भी इसहाक़ जमीला से अपनी पहली मुलाक़ात को देख रहा था। वह और मुलतानी डैक पर खड़े थे। कालटैक्स कम्पनी के पैट्रोल के टैंकों, बड़े-बड़े अन्धेरे माल गोदामों और भीमकाय क्रेनों के सायों के नीचे से तंग-सी सड़क पर एक हरे रङ्ग की गाड़ी तेजी से जहाज़ की ओर आ रही थी। जहाज़ के जीने के पास वह गाड़ी आ कर रुक गई। गाड़ी का पट खुला और उसमें से एक के बाद एक तीन औरतें निकलीं और ज़ीने पर चढ़ने लगीं। पूर्वी देशों की औरत कभी यह

निर्णय नहीं कर सकती कि वह टखनों से ऊपर अपने शरीर का कोई भाग दिखाए या न दिखाए। उसका यह असमंजस किसी ज़ीने पर चढ़ते हुए दर्शनीय होता है। कभी तो वह अपनी साड़ी सँभालती है। उसे ज़रा सा अपने टखनों से ऊपर कर लेती है। फिर कुछ सोच कर घबरा जाती है और जल्दी से साड़ी नीचे गिरा देती है। इतने में ज़ीने पर चढ़ना कठिन हो जाता है और विवश होकर वह फिर अपनी साड़ी ज़रा ऊपर उठाती है, पेटीकोट नीचे घिसटने देती है। फिर ठिठक जाती है। आप ही आप फिर साड़ी उठाती है, फिर गिरा देती है। हँसती है, मुस्कराती है, लजाती है, शर्म से लाल हुई जाती है, उसकी कुछ समझ में नहीं आता कि वह क्या करे। इसहाक़ को यह दृश्य बहुत पसन्द था। औरत की एक ही समय में 'हाँ' और 'नहीं' वाली मनोवृति ज़ीना चढ़ते समय ही इस विनोदपूर्ण ढँग से अभिव्यक्त होती थी कि उसे आनन्द आ जाता था। इस समय भी वह उन तीनों औरतों को ज़ीना चढ़ते हुए वही हरकत करते देख रहा था। जब वह डैक के क़रीब आख़िरी ज़ीने पर पहुँचीं तो उनके कपोल पसीने में नहाए हुए थे। इसहाक़ और मुलतानी ने आगे बढ़कर, हाथ बढ़ा कर उन्हें डैक़ पर खींच लिया और तीनों औरतें खिल-खिला कर हँस पड़ीं। इस हँसी में भी कितनी निश्चिन्तता

थी, मानो वह हँसी कह रही थी, चलो यह समस्या भी किसी न किसी तरह हल हुई।

मुलतानी ने परिचय कराया—

यह जमीला है !

यह शकुन्तला !!

यह मिस संजाना !!!

जमीला अरबी रंग रूप लिये थी, शकुन्तला हिन्दुस्तानी और संजाना पारसी। तीनों की तीनों जवान, शोख़ और चंचल, पूरे चाँद की तरह मदमस्त करने वाली। इसहाक ने सोचा, आज ह्विसकी पीने का मज़ा आजाएगा।

लेकिन ह्विस्की पीने का ज़रा भी मज़ा न आया। दावत बिल्कुल ठंडी थी। सैकिण्ड इन्जीनियर के कमरे में तीनों औरतें एक दीवान पर सिकुड़ कर बैठी हुईं इस तरह शैम्पेन पी रही थीं, जैसे वह शैम्पेन नहीं कुनीन मिक्सचर पी रही हों। उनके सामने एक कुर्सी पर

मुलतानी बैठा हुआ पानी पी रहा था, क्योंकि वह शराब नहीं पीता था।

"मैं शराब पीकर नहीं, शराब पिला कर खुश होता हूँ, संजे ? बेबी को शैम्पेन बहुत पसन्द है इसलिये बड़ी मुश्किल से तीन बोतलों का प्रबन्ध करके आया हूँ, संजे ?"

वह जमीला को बेबी कहता था। इसके बाद वह एक लम्बी-चौड़ी भूमिका के बाद कि किस तरह उसने शराब का प्रबन्ध किया, एक किस्सा सुनाने लगा कि किस तरह वह एक बार अदन में अपना जहाज़ छोड़ते-छोड़ते बच गया। बहुत ही बोरिंग क़िस्सा था। जब यह क़िस्सा खत्म हुआ तो उसने दूसरा क़िस्सा आरम्भ किया कि किस प्रकार उसकी फर्स्ट इन्जीनियर से लड़ाई हो गई। क्यों हुई, कैसे हुई, बड़ा ही टैकनीकल क़िस्सा था, जिसमें शैफ्ट, इंजिन, ग्रैविटेशन और प्रैशर जैसे शब्द इतनी बार आए थे कि इसहाक़ को जहाज की पूरी मशीनरी से सदा के लिये नफ़रत हो गई। बीच में मुलतानी बार-बार पानी पी-पी कर इस तरह संजे कहता था कि इसहाक को मालूम हुआ कि वह सचमुच कोई बढ़िया स्काच ह्विस्की नहीं, किसी नाली का गला-सड़ा पानी पी रहा है। उसे इस संजे से अति घृणा होने लगी। उसका विचार था कि उसका दम घुट जायगा। एक बार

तो उसे मितली भी आई। लेकिन खैरियत हुई कि उसे मुलतानी ने अपने ऊँचे बिस्तर पर जगह दी थी, जहाँ से इसहाक टाँगें लटकाए इस तरह नीचे देख रहा था, जैसे वह ऊपर की मंजिल से निचली मंजिल के रहने वालों को देख रहा हो। उसके दाईं ओर बिस्तर के सामने गोल खिड़की थी, जिसके बाहर एक बड़ा रस्सा लटकता हुआ दिखाई दे रहा था। इसहाक का जी बार-बार चाहा कि वह उस रस्से से लटक कर आत्म-हत्या कर ले। बाईं ओर उसे एक शीशा दिखाई देता था, जिसमें वह उन तीनों औरतों के अक्स देख सकता था। बस इसी के सहारे वह समय काट रहा था, नहीं तो अब तक वह क्रोध से चीख़-चीख कर कभी का मर गया होता।

लोग कहते हैं प्रेम पहली नज़र में हो जाता है। यदि यह सच है तो उसे जमीला से नहीं, शकुन्तला से प्रेम होता। पहली नज़र में उस ने शकुन्तला को पसन्द किया था। लम्बा कद, छरेरा बदन, संभला हुआ लहजा—ऐसे तोल-तोल कर बात करती थी, नपे तुले अन्दाज में मुस्कराती थी। कभी इस प्रकार अपने आप में खो जाती थी कि वह उसे बड़ी ही भोली और गंभीर स्वभाव की मालूम होती थी। छिछोरापन तो उस में नाम को न था। इस के विपरीत संजाना बार-बार

हँसने की कोशिश करती थी। मुलतानी की बात को पलट कर कोई अपना किस्सा सुनाने की कोशिश करती थी। लेकिन मुलतानी कहाँ किसी की सुनने वाला था। वह अपनी धुन में बके जा रहा था। कोई डेढ़—दो घन्टे ही में केबिन सिगरेट के धुएँ से भर गया और जमीला ने एक अँगड़ाई ले कर कहा—"ज़रा बाहर चलें, हमारा तो धुएँ में दम घुटने लगा है।"

"चलो बाहर चलो"—मुलतानी ने फ़ौरन कहा-"बेबी का दम घुटने लगा है।"

इसहाक़ अपनी ऊँची सीट से कूद कर नीचे आ गया। मुलतानी ने बन्द केबिन का दरवाजा खोल दिया। वे पाँचों बाहर आ गए। फ़र्स्ट इन्जीनियर अपनी केबिन से झाँक कर लड़कियों को देखने लगा, और लड़कियों को मालूम था कि वह देख रहा है। उस समय भी जब वे केबिन से गुज़र कर डेक के जंगले से लग कर खड़ी हो गईं, उस समय भी उन्हें मालूम था कि वह उन्हें घूर-घूर कर देख रहा है। वे इसी तरह बार-बार अपनी साड़ी का आँचल सँभालतीं और ज़रा रुक-रुक कर घबरा उठतीं कि इसहाक़ को आभास हुआ कि हर औरत एक आँख अपनी गर्दन के पीछे भी रखती है।

वे फ़र्स्ट डेक पर खड़े थे, जहाँ नीचे बायलर रूम

को ताज़ा हवा पहुंचाने के लिये बड़े-बड़े भबके लगे हुए थे और नीचे की गन्दी हवा निकालने के लिये बड़े-बड़े नल, जिन के अन्दर घूमते हुए पंखों का मध्यम–मध्यम शोर यहाँ तक सुनाई देता था। एकाएक फ़र्स्ट इन्जीनियर ने अपने केबिन में ग्रामोफोन पर वाल्ज़ का एक रिकार्ड शुरू किया। और संजाना बे-काबू हो कर जंगले से अपनी ऊँची एड़ी के जूते टकरा-टकरा कर ताल देने लगी। मुलतानी को बहुत गुस्सा आया। उस ने उसी समय डैक से चले जाने का निर्णय किया। लेकिन कहाँ जाए, केबिन में तो अभी तक धुआं भरा था।

उसने इसहाक़ से कहा—"आप ने अभी तक जहाज़ का बायलर रूम न देखा होगा ?"

"नहीं देखा।"

जमीला ने प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा—"हम भी देखेंगे।"

"लेकिन बेबी तुम्हारी साड़ी काली हो जाएगी, आयल और ग्रीज से।"

"उँह ! हो जाने दो"—जमीला तुनक कर बोली। "आज हम बायलर ज़रूर देखेंगे।"

जमीला ताली बजा कर, बच्चों की तरह खिलखिला कर हँस पड़ी। जमीला का क़दम शकुन्तला और

संजाना दोनों से छोटा था। उसका शरीर भी दोनों से अधिक गदराया, बल्कि कुछ स्थूल-सा था। मगर इस समय जमीला इसहाक़ को बहुत अच्छी मालूम दी—विशेषतया उसका बच्चों की तरह खिलखिला कर हँस पड़ना और बायलर देखने का अनुरोध करना।

बायलर रूम जो जहाज़ के सब से निचले भाग में होता है, ऊपर के जंगले से एक नज़र देखने में बिल्कुल नर्क का अग्निकुण्ड मालूम होता था—उग्र उमस, घुटन और गर्मी; बड़ी-बड़ी काली ड्रमनुमा मशीनें और फर्श से छत तक टेढ़े-मेढ़े डरावनी शक्ल के लोहे के नल; गंदे, काले कपड़े पहने हुए कोयला झोंकते हुए खलासी, जो इतनी दूर से बिल्कुल बौने मालूम हो रहे थे। और एक चक्करदार जंगला विभिन्न नलों और यंत्रों के गिर्द घूमता हुआ नीचे तक चला गया था।

"यहाँ तो बहुत गर्मी है"—इसहाक़ ने अनुमान से कहा।

शकुन्तला ने कहा—"केबिन से तो कम ही होगी ? चलो नीचे चलो।"

नीचे जाने के लिए जगह बहुत तंग थी। एक समय में एक ही आदमी आसानी से जंगले से ऊपर-नीचे आ सकता था, और नीचे घूमते हुए मोड़ों पर तो यह जगह और भी तंग हो जाती थी। मगर लड़कियाँ नीचे जाते हुए, ज़ीने से अकेले उतरते हुए घबरा रही थीं। और इसहाक़ ने मोतीराम मुलतानी के बारे में महसूस कर लिया कि वह इन लड़कियों को खाना खिला सकता है, शराब पिला सकता है, बातें सुना सकता है, लेकिन हाथ नहीं लगा सकता। इस समय भी वह जंगले पर सब से पीछे खड़ा लड़कियों को हाथ के इशारे से नीचे उतरने को कह रहा था और साथ में यह सलाह भी दे रहा था कि उतरते समय साड़ियों को जंगले की सतह से न लगने देना, वरना उन पर काली ग्रीज़ लग जाएगी। अब यह सब काम हो तो कैसे हो ? लड़कियाँ अपने आप को सँभालें कि साड़ियाँ सँभालें, उई-उई कह कर चिल्लाएँ कि हाथ जंगले की सतह से बचायें। इतने सारे काम उनसे एक दम न हो सकते थे। हो भी सकते थे। उनमें से हर लड़की जंगले पर दौड़ती हुई नीचे जा सकती थी और फिर बिना थके

ऊपर आ सकती थी। वे अच्छी खासी तन्दुरुस्त और तगड़ी लड़कियाँ थीं। मगर मर्दों के सामने अपनी ताक़त का सबूत कैसे दें? एक तो यह अशिष्टता है, दूसरे मर्दों को भी यह अच्छा नहीं लगता। इसलिए नीचे कैसे उतरा जाए, इस पर कई मिनट तक लड़कियाँ झिझकती रहीं। आखिर इसहाक़ ने संजाना का हाथ पकड़ा और कहा—"आप आइये मेरे साथ।"

और 'ऊइ' कह-कह कर संजाना इसहाक़ के साथ नीचे उतरी। उसके पीछे शकुन्तला, जमीला और अन्त में मुलतानी, जिसका चेहरा इसहाक़ को संजाना का हाथ पकड़ते देख कर लाल हो गया था और जो रूमाल से अपना चेहरा पोंछ रहा था। जहाँ मोड़ तंग थे वहाँ इसहाक़ को लड़कियों की शारीरिक सहायता करनी पड़ी थी और इस सहायता के फलस्वरूप उसके हाथ अचेतन रूप से उनकी कमर में पड़ गए थे। और जब यूँ हुआ तो इन तीनों लड़कियों को जो शैमपेन पीए हुए थीं, एक अनोखा अपनत्व और समीपत्व का अनुभव इसहाक़ के प्रति हुआ। यह अनुभव तीनों लड़कियों में अलग-अलग था, मगर था। और अब उनकी आँखों में समझ की एक अजीब तरह की बिजली दौड़ने लगी

थी। और शैमपेन जो अब तक अपना काम न कर सकी थी, अब करने लगी थी।

नीचे उतर कर कोयला गोदाम के पास जा कर अपनी साड़ी को संभालते हुए एकाएक जमीला के मुँह से एक चीख निकल गई। उसकी साफ़ बे-दाग़ साड़ी पर कमर के पास तीन उँगलियों के काले निशान थे। इसहाक़ ने मुलतानी की बात की परवाह नहीं की थी, इसलिये जंगले की ग्रीज़ और इसहाक़ के हाथों की मचलती हुई चाह रंग लाई थी। जमीला के चीख़ते ही घबरा कर शकुन्तला और संजाना ने भी अपनी-अपनी साड़ियों पर नज़र डाली। कमर के पास उँगलियों का वही ठप्पा था, बिल्कुल कमर के कटाव के ऊपर। इसहाक़ ख़ूब हँसा, लड़कियों ने उसे ख़ूब लानत-मलामत दी। लेकिन वह हँसता ही गया, एक बार भी उसने क्षमा न मांगी। परन्तु मुलतानी ने बड़ी संजीदगी से उन्हें बताया कि क्यों उसने पहले ही उन्हें बायलर रूम में जाने से मना किया था। फिर उसने मानो पूरे जहाज़ की ओर से जंगले पर लगी हुई ग्रीज़ के लिये क्षमा माँगी, और फिर बड़ी तन्मयता से, मानो इस अपराध को धोने के लिये, वह औरतों को बॉयलर रूम की मशीनरी इस ढंग से समझाने लगा मानो उन्हें आज

ही सैकिन्ड इन्जीनियर बना कर छोड़ेगा। जमीला बड़े ध्यान से उसकी बातों को सुनती रही, लेकिन संजाना ने एक जम्हाई ली और इसहाक़ का हाथ पकड़ कर पूछने लगी—"वह क्या है ?"

"वह क्या है ?" वास्तव में एक बहाना था इसहाक़ को कोयला गोदाम के एक ओर ले जाने का, जहाँ कुछ ताँबे की नलकियों के ऊपर बैरोमीटर और थर्मामीटर की तरह के यंत्र लगे हुए थे और लाल और नीली बत्तियाँ कभी चमकती थीं और कभी बुझ जाती थीं।

इसहाक़ ने कहा—"मुझे क्या मालूम, मुलतानी से पूछो।"

"अरे वह तो बड़ा बोर है। मैं तो यूंही शैम्पेन के लालच में यहाँ आ गई। फिर मैंने कोई जहाज़ भी भीतर से न देखा था।"

संजाना का हाथ इसहाक़ के हाथ में था। लेकिन जब शकुन्तला भी वहाँ आ गई तो संजाना ने इसहाक़ का हाथ छोड़ दिया।

शकुन्तला ने भी बड़ी गंभीरता से ताँबे के यंत्रों की ओर इशारा करके पूछा—"यह क्या है ?"

इसहाक़ ने लम्बे कद वाली शकुन्तला को सिर से पाँव तक देखा। एक प्रतिमा की तरह सुन्दर शकुन्तला

जो उसके इतने समीप खड़ी थी कि वह एक क्षण के लिये संजाना को भूल गया। सब कुछ भूल गया। अपने चारों ओर का वातावरण भी भूल गया।

शकुन्तला ने उसे यूं खोया-खोया देख कर फिर अपना प्रश्न दोहराया—"यह थर्मामीटर क्या बताता है जी?"

इसहाक़ ने कहा—"देखिए, यह थर्मामीटर बताता है कि आपने कितनी शैम्पेन पी है?"

"और यह?" शकुन्तला ने मुस्कराते हुए दूसरे बैरोमीटर की ओर संकेत करते हुए कहा और फिर अपनी आँखें पूर्णतया इसहाक़ की आँखों में डाल दीं—इस प्रकार कि सारा संसार उसे घूमता हुआ दिखाई दिया।

"यह?" इसहाक़ ने दूसरे बैरोमीटर की ओर देख कर बताया—"यह बताता है कि अभी और कितनी आप पी सकती हैं।"

"और यह लाल बत्ती?" शकुन्तला ने बिल्कुल होले से पूछा। उसका साँस इसहाक़ के गालों को छूता चला गया।

"यह ख़तरे का निशान है—जब ज़्यादा पी ली जाती है।"

"ख़तरा क्या होता है ?" शकुन्तला बिल्कुल उसके करीब आ गई। लेकिन इसहाक़ कुछ कह न सका, क्योंकि उधर से संजाला ने उस का हाथ पकड़ कर झल्लाते हुए पूछा—

"और यह तीसरा बैरोमीटर क्या बताता है जी ?"

"यह कमर पर उँगलियों के दबाव को जाहिर करता है।" इसहाक़ की आँखें शरारत से चमक रही थीं।

दोनों लड़कियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं। जमीला भी दौड़ते-दौड़ते आई—"क्या बात थी, मुझे भी बताओ ?"

इसहाक़ ने कहा—"कुछ नहीं हुज़ूर—यह औरतें मुझसे गैस के दबाव के बारे में पूछ रही थीं। अब मैं क्या बताऊँ।"

मुलतानी बताने लगा—"गैस का दबाव द्रव्य के दबाव से भिन्न होता है। अगर गैस का वाल्यूम········।"

जमीला घबरा के बोली—"चलो ऊपर चलें"।

बॉयलर रूम छोड़कर वे लोग फिर केबिन में आ गए। दावत ग्यारह बजे तक रही। लड़कियों ने शैम्पेन की दो बोतलें खत्म कर डालीं, लेकिन उन्हें कुछ न हुआ। इसहाक़ ह्विस्की की बोतल तीन-चौथाई खत्म कर चुका था और पहले से अधिक होश में था। केवल मुलतानी पानी पी-पी कर नशे में आ गया था। उसका मुँह लाल था और आँखों में भयानक चमक थी और वह इस प्रकार बार-बार जमीला की ओर देखता था जैसे वह या तो उसे उठा कर अपने अन्तर में छिपा लेगा या फिर उसे काट-काट कर अपने पेट में भर लेगा, ऐसी भूख थी उसकी निगाहों में। वास्तव में उसका जहाज़, जैसा कि उसकी बातचीत से मालूम हुआ, दो-तीन दिन में बाहर जाने वाला था और वह अब छः महीने तक जमीला को न देख सकेगा, बेबी को न देख सकेगा, इसका ग़म उसे खाए जा रहा था।

ग्यारह बजे के लगभग वह जमीला को केबिन से बाहर ले गया—कुछ मिनटों के लिये। कुछ मिनटों के बाद फ़ौरन ही वे दोनों वापिस आ गए। उसके फ़ौरन बाद ही मुलतानी अपनी कुर्सी से खड़ा हो गया, बोला—"ग्यारह बज रहे हैं। इससे ज़्यादा का आर्डर नहीं है जहाज पर ठहरने का। मैं बेबी को छोड़ने जाता, लेकिन अब मेरी डयूटी शुरू होगी—इसहाक़ भाई! आप बेबी को उसके घर पहुँचा देना और आई एम वैरी ग्रेटफुल, संजे।"

इसहाक़ समझ गया। उसने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक मुलतानी से हाथ मिलाया—और मुलतानी ने उससे वायदा किया कि "वह छः मास बाद उसे अपनी लाइफ़ स्टोरी सुनाएगा, वह स्टोरी तुम लिख डालो।"

"मैं ज़रूर लिखूँगा।"

"मेरी लाइफ़ बहुत ग़ज़ब की है।"

"ज़रूर होगी।"

"तुम उसको लिख देना।"

"ज़रूर लिखूँगा।"

"बाई बाई।"

"बाई बाई बेबी।"

"बाई बाई मुलतानी भैया"—जमीला ने बड़ी कोमलता और नर्मी से कहा। शकुन्तला की हरे रंग की मार्स बैलार्ड पीटर के पिछवाड़े की सुनसान सड़कों पर दौड़ने लगी। लड़कियों की स्वाभाविक चंचलता उभर आई। वे हँसने लगीं, गाने लगीं। पिछली सीट पर इसहाक़ जमीला और संजाना के बीच में बैठा था। दोनों लड़कियाँ उस पर गिरी पड़ती थीं। शकुन्तला उसकी गोद में बैठी थी। तीनों का वजन मिला कर चार-पाँच मन से कम न होगा। लेकिन कभी-कभी औरत का वजन बिल्कुल महसूस नहीं होता, हालाँकि जो चीज जगह घेरती है अवश्य वजन रखती है—यह विज्ञान का सिद्धान्त है। पर औरत के सम्बन्ध में विज्ञान के बहुत-से सिद्धान्त जवाब दे जाते हैं। इसहाक़ सोचने लगा, शायद इसका कारण यह हो कि औरत स्वयं ही एक विज्ञान है।

इसहाक़ ने शकुन्तला से सवाल किया—"आपका पति क्या काम करता है?"

शकुन्तला उसकी गोद में ज़रा-सी उछली, फिर ठस हो कर बैठ गई। बोली—"वे स्टैनोग्राफर हैं।"

"स्टैनोग्राफर की बीवी मार्स कैसे रख सकती है?" इसहाक़ ने पूछा।

संजाना बोली—"बम्बई में एक खूबसूरत लड़की अगर चाहे तो एक पति रख सकती है जो उसे सामाजिक प्रतिष्ठा दे और उसके अतिरिक्त अगर वह जीवन के ढब जानती हो तो एक अन्य मालिक भी रख सकती है जो उसे भौतिक प्रसाधन जुटाए। शकुन्तला का मालिक एक काटन मिल का मालिक है।"

जमीला ने बड़े प्यार से कहा—"और शकुन्तला के पाँच बच्चे भी हैं।"

एकाएक इसहाक़ को एक धचका-सा लगा। थोड़ी देर में वह पाँचों बच्चों का वज़न और शकुन्तला का वज़न बल्कि उसके पति और उसके मोटे सेठ का वज़न भी अपने शरीर पर महसूस करने लगा। बोझ जो पहले कहीं न था, कैसे एकाएक वापस आ गया, इस बात पर उसे बड़ा अचम्भा हुआ। ज़रा रुक-रुक कर वह बोला—"भई मैं तो तुम तीनों औरतों के बीच में घुट कर मर जाऊँगा। शकुन्तला रानी क्या ही अच्छा हो अगर कुछ देर के लिये तुम सीट पर बैठो और मैं तुम्हारी गोद में बैठूँ।"

"हश, बड़े बदतमीज हो जी!" शकुन्तला बनावटी क्रोध से बोली।

पर जमीला और संजाना हँस पड़ीं। संजाना बोली—"बेचारा पाँच बच्चों का बोझ महसूस कर रहा है।"

इस पर शकुन्तला सचमुच नाराज़ हो गई और मोटर रोक कर अगली सीट पर जा बैठी। उसके उठते ही संजाना इसहाक़ की गोद में बैठ गई।

इस पर इसहाक़ ने पूछा—"और हुज़ूर की मार्स कहाँ है?"

"मेरे पास कोई मार्स नहीं है।"—संजाना बड़े गर्व से बोली—"लेकिन मेरे पिता के पास मार्स है।"

"और आपके पिता इस समय कहाँ हैं और कैसे उन्होंने आपको एक अजनबी की गोद में बैठने की इजाज़त दे रखी है?"

"उन्होंने इजाज़त तो नहीं दे रखी है, मैंने आप ही हासिल कर ली है। मेरे पिता वास्तव में बम्बई से चालीस मील दूर एक फार्म में रहते हैं। हमारे फार्म में फूलों के बाग़ हैं, सब्जी के खेत हैं और वहाँ चावल भी पैदा होता है। अगले दिसम्बर में मेरी शादी एक दूर के रिश्तेदार से होने वाली है।"

"और तब तक?"

"तब तक मैं जिन्दगी देख रही हूँ।"

इसहाक़ के नथनों में एक दुर्गन्ध उड़ती हुई आई— किसी के शरीर की दुर्गन्ध। उसने फिर सूँघ कर देखा। यह दुर्गन्ध संजाना के शरीर से आ रही थी। उसने बिना झिझक के पूछ लिया—"आपको बगल-गंध की बीमारी है क्या ?"

अब के संजाना उसकी गोद से उछली, फिर ठस हो कर बैठ गई। रोनी-सी हो कर बोली—

"इसीलिये मैं अपने रिश्तेदार से शादी नहीं करना चाहती। लगातार इन्टर ब्रीडिंग ही से हम पारसी लोगों में यह बीमारी फैलने लगी है। तेज़ से तेज़ इत्र भी इसका इलाज नहीं है। मैंने बहुत-सा इत्र आज लगाया था, लेकिन—"

वह इसहाक़ की गोद से उठ कर सीट पर बैठ गई।

शकुन्तला मुस्कराने लगी।

लेकिन थोड़ी देर के बाद जमीला रोने लगी।

"अब क्या हुआ ?" इसहाक़ ने हैरान हो कर पूछा।

"मुझे मुलतानी भैया याद आ रहे हैं।"

"लेकिन जब तक तुम वहाँ थीं, तो तुम उनसे खासी बोर होती दिखाई दे रही थीं।"

"वह और बात है"—जमीला ने बात समझाते हुए कहा—"जब तक वह मेरे सामने रहते हैं, मुझे उनसे बड़ी घिन आती रहती है। पर ज्योंही मुझ से दूर हो जाते हैं, मुझे वह याद आने लगते हैं। सचमुच मुलतानी भैया बहुत अच्छे हैं। वह हर माह अपनी पूरी तनख्वाह मुझे भेज देते हैं।"

"वह तुम्हारे भैया हैं?"

"भैया तो नहीं हैं, हाँ बन गए हैं। वह अगल में मुझे बड़ी मुहब्बत करते हैं, लेकिन उनमें इतना साहस नहीं है कि मुझे हाथ लगा सकें।"

"शायद यही तुम्हारे भैया की ग़लती है?"

"नहीं, अगर वह मुझे छू भी लें तो मैं चिल्ला पड़ूँगी, ऐसी नफ़रत है मुझे इस आदमी से।"

"फिर जिससे तुम्हें नफ़रत है उसके लिये रोती क्यों हो?"

"क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता। जब इस आदमी की पाक मुहब्बत देखती हूँ तो रोना आता है।

जब इसकी बुरी सूरत देखती हूँ तो मारे हँसी के साँस नहीं रोक सकती ।"

"अजब औरत हो ?"—इसहाक़ ने कहा ।

"हाँ हूँ तो सही ।"—जमीला अपने आँसुओं में हँस पड़ी और उसके आँसू आँखों से छलक कर मोतियों की तरह उसके गालों पर बिखर गए ।

इसहाक़ अपने रेशमी रुमाल से वे आँसू बड़ी सावधानी से उसके कपोलों से पोंछने लगा, जैसे वह मोतियों के दाने समेट रहा हो । और उसका हाथ काँपने लगा ।

इतने में मजगाँव कोर्ट आ गया, जहाँ जमीला रहती थी । मजगांव कोर्ट में जमीला का फ्लैट ऐसा था, जैसा कि जमीला जैसी लड़की का होना चाहिए । घर रहने वाले के चरित्र को प्रकट करता है, और कभी रहने वाला घर के चरित्र को प्रकट करता है, और कभी घर और रहने वाले दोनों एक-दूसरे के विपरीत और विरोधी स्वभाव और वातावरण के द्योतक होते हैं । ऐसे वातावरण में न तो घर खुश दिखाई देता है और न उसमें रहने वाला, एक अजीब-सी एन्द्रीय तना-तनी की दशा दोनों पर छाई रहती है । लेकिन कभी-कभी मकान और उसके वासी इस तरह घुले-मिले

नजर आते हैं कि पहचान करना मुश्किल होता है कि मकान कौन है और उसका वासी कौन है ?

जमीला जिस फ्लैट में रहती थी, वह ऐसा मालूम होता था, मानो जमीला के शरीर का एक अंग है या जमीला स्वयं उस मकान का एक मानवी रूप है। फ्लैट में घुसते ही एक छता हुआ बरामदा दिखाई देता था, जिसकी खिड़कियों में लटके हुए गमलों से ऊदे-ऊदे फूल बड़ी जिज्ञासा भरी और खोज पूर्ण निगाहों से आने वाले को तकते थे। बरामदे का फर्श ग़लीचे से ढका हुआ था। बरामदे का एक दरवाजा ड्राइंग-रूम में खुलता था, तो दूसरा बैडरूम में। यही हाल ड्राइंग-रूम का था। उसका एक दरवाजा बैड रूम में खुलता था तो दूसरा जमीला की मौसी के कमरे में, जिसने जमीला को बचपन से पाला था। यही हाल बैडरूम का था, जिसका एक दरवाजा बरामदे में खुलता था तो दूसरा ड्राइंग रूम में और तीसरा पिछवाड़े के बरा-मदे में, जिसके फिर तीन दरवाज़े थे। एक दरवाजा किचिन में जाता था और दूसरा दरवाजा बाथ रूम में और तीसरा दरवाजा पिछवाड़े से नौकरों या लुक-छिप कर आने वाले प्रेमियों के आने के लिये था। मकान की बनावट देख कर इसहाक़ को ऐसे लगा कि जमीला एक ऐसा घर है जिसके बहुत से दरवाज़े हैं।

पांव की चाप बरामदे में आते ही खत्म हो जाती थी, और उसके बाद दबीज़ ग़लीचा अपने सीने पर हर तरह के क़दमों की चाप और उनकी गन्दगी संभाल लेता था। ड्राइंगरूम में दोहरे पर्दे थे, रोशनी मध्यम-मध्यम थी, यहाँ तक कि हर एक लैम्प के शेड पर भी रेशमी जाली पड़ी हुई थी ताकि रोशनी और भी छन-छन कर आए, मेकअप और ज़्यादा मनमोहक हो जाये। बरामदे में सामने ही ड्राइंगरूम की बाहर की दीवार पर एक औरत का नग्न चित्र था जो अमरीकी पत्रिका लुक्ज़ या विक से काटा गया था। ड्राइंगरूम के अन्दर भी इसी तरह की चित्र-कला के नमूने संग्रहित थे। एस्क्वायर और टिक तथा डबल डाफ्ट से काटे हुए। 'वाह रे मेरे प्यारे अमरीका, तू कितनी दूर से आता है। न्योछावर मैं उन गलियों पर; हारलम और शिकागो के उन वैश्या-घरों पर, जहाँ यह गोरे-गदराये शरीर बिकते हैं; फोटोग्रव्योर के उन रंगीन छापाखानों पर, जहाँ इन शरीरों को काग़ज़ के साँचे में ढाला जाता है; उन तेज़ रफ्तार वाले हवाई जहाज़ों पर, जो पलक झपकने में इन पत्रिकाओं को संसार के कोने-कोने में बिखेर देते हैं। मेरे प्यारे अमरीका, गेहूँ की सुनहरी बालों वाले, इब्राहम लिंकन के आदर्श वाले, वाल्ट ह्वीटमैन की कविता वाले अमरीका, मैं तुझ पर न्योछावर कि

तू हमें बन्दूकें देता है और हवाई जहाज़ देता है और टेकनीकल सहायता देता है और सब कुछ देने के बाद वासना को उत्तेजित करने में भी सहायता देता है। इस पर भी जो लोग तेरे कृतज्ञय नहीं होते वह कितने कृतघ्न हैं।

ड्राइंगरूम में घुसते ही इसहाक़ का जी चाहा कि वह सिर झुका कर कोटि-कोटि धन्यवाद करे। लेकिन फिर हर तरह की अमरीकी सहायता की तरह उसने भी धन्यवाद को उधार में रखा और सोफे में धँस गया। सोफ़े के सामने एक बड़ा दीवान पड़ा था। उस पर शकुन्तला और संजाना बैठ गई। दाईं ओर कौच पर जमीला बैठ गई। इन तीनों के मध्य में एक बहुत बड़ा गालीचा था। चौथी ओर एक रेडियोग्राम था, जिसके पास कई रैक रिकार्डों से अटे पड़े थे।

जमीला ने कोच पर बैठते ही अपने दोनों हाथ छत की ओर उठाए और फिर उन्हें नीचे गिरा कर इस तरह इत्मीनान का साँस लिया जैसे प्रलय बीत गई हो और अब हर तरह की शान्ति हो। इसहाक़ अब विदा माँगने वाला ही था कि संजाना ने अपने पीछे से ह्विस्की की एक बोतल निकाल कर सामने की तिपाई पर रख दी और जोशीले स्वर में बोली—

"पार्टी तो अब शुरू होती है।"

जाम फिर भर दिए गए।

जमीला पीते-पीते एकाएक उठी, उसने रेडियोग्राम पर एक रॉक एण्डोल का रिकार्ड लगाया और नाचने लगी। और जब जमीला नाचने लगी तो फिर एकाएक इसहाक़ को मालूम हुआ कि यह मासूम हँसी वाली, पतले गुलाबी ओठों वाली, नशीली आँखों वाली, अपने शरीर की रूपरेखाओं में कितने सुन्दर, आकर्षक और ख़तरनाक वासनाप्रद कटाव और उभार रखती है। वह मूर्तिवत उसकी ओर देखने लगा।

नाच तो कई तरह का होता है। ऐसा नाच जिस में आकाश खुला होता है, खेत हरे होते हैं, माथे पर पसीने के सितारे चुने रहते हैं और नर्तकी के ओठों में चावल के दाने चमकते हैं। ऐसा नाच जिसमें चिड़िया चहचहाती हैं, झील का पानी डोलता है और मुहब्बत के बादलों में लिपटी हुई दो अलग-अलग आत्माएँ ब्रह्माण्ड के छोर को स्पर्श कर लेने के लिए उड़ती

दिखाई देती हैं। ऐसा नाच जिस में एक जाति का भाग्य जागता है, उसका पूरा इतिहास करवटें लेता है, उसकी संस्कृति की हरी-भरी फलदार शाखें मनुष्य के पूरे व्यक्तित्व पर साया करती हुई मालूम होती हैं और उसका मन इस नाच की महराब तले आदर से, भक्तिभाव से मानव की गरिमा के आगे झुक-झुक जाता है।

लेकिन यह किस तरह का नाच था जो अपनी हर अदा से कहता था, मुझे ले लो, मुझे ले लो। जो अपनी हर मुद्रा से पुकारता था कि मैं कितनी सुन्दर हूँ, आओ मुझे खा लो। जो अपने हर वहशी चक्कर में चीख-चीख उठता था, आओ मुझे अपनी बाहों में कस लो, मुझे भंभोर डालो, मेरी हड्डी-पसली, बोटी-बोटी अलग कर दो। आओ-आओ कि तुम मेरे कुत्ते हो और मैं तुम्हारी कुतिया हूँ।

मज़े की बात तो यह थी कि इसहाक़ सब कुछ अनुभव करते हुए भी इस नाच में खोया जा रहा था। उसके चक्कर में फंसा जा रहा था, उसके हर भंवर में उलझा जा रहा था। फिर उसकी उपचेतना में बुलबुले उठने और उबाल आने लगे। फिर उसकी उपचेतना में करोड़ों वर्षों का पशु जागा और पाशविकता लावे

की भाँति खौलने लगी। इसहाक़ का जोड़-जोड़ टूटने लगा। उसे लगा मानो हर तरफ़ की दीवारें ढह रही हों और धरती और आकाश चक्कर खा रहे हों। वह बिल्कुल वशिभूत हो कर सोफे से उठ खड़ा हुआ। जमीला नाचते-नाचते बरामदे में गई। वह उसके पीछे-पीछे हो लिया। वह उस से शरीर चुरा कर ड्राइङ्ग रूम में आई, वह उस के पीछे-पीछे एक अनदेखी जंज़ीर से बँधा हुआ वहीं चला आया। वह नाचते-नाचते बैडरूम में चली गई। झिलमिल रोशनियों में दो बैड चमक रहे थे। जमीला के होंट खुले थे, अलमारी का पट खुला था। और उसमें से साड़ियाँ, पेटीकोट और ब्रेज़ियर झांक रहे थे। जमीला नाचते-नाचते एक छलांग लगा कर फिर वापिस ड्राइंग रूम में आगई। इसहाक़ घिसटता-घिसटता फिर वापिस सोफ़े पर पहुँच गया। एकाएक रिकार्ड खत्म हो गया और जमीला एक चीख़ मार कर, बाहें फैला कर उससे लिपट गई और उसने अपने होंट उसके होठों पर रख दिए।

वह डूब गया, खो गया, गुम हो गया। वह तो वहाँ न था। वहाँ तो जमीला भी न थी, वहाँ तो कोई न था। वहाँ न कोई होंट थे और न कोई भावना। वहाँ एक अगाध समुद्र था, जिसमें वह डूबा चला जा

रहा था। एकाएक उसने महसूस किया जैसे उसको कोई बाज़ू काट खा रहा हो। इस दर्द से व्याकुल हो कर जब नीचे से उभरता-उभरता फिर वापस धरातल पर पहुँचा, तो उसने देखा वह तीनों लड़कियों के घेरे में है। संजाना ने अपने नाखून उसके बाज़ू में गाड़ दिए हैं और धीरे-धीरे दाँत पीसते हुए कह रही है—

"इन बाहों की मछलियाँ कितनी अच्छी हैं।"

संजाना की आँखें बिल्कुल ज़रा-ज़रा सी खुली थीं, उसका साँस तेज़ी से चल रहा था और उसका निचला ओंठ बहुत नीचे लटक रहा था। "और तुम्हारी यह गर्दन कितनी मज़बूत है।" जमीला उसकी गर्दन पर हाथ फेरने लगी—"हाय मेरे बैल।"

गंभीर और शाँत शकुन्तला अब एक वहशी की तरह उस पर झपट पड़ी। उसने इसहाक़ की कमीज़ तार-तार करदी, और उसके सीने के खुरदरे बालों से अपने गाल रगड़ते हुए तीन बार कहा—"हाय, हाय, हाय!"

एकाएक वह चीख़ मार कर उठा। उसने पूरी शक्ति से अपने बाज़ू और टांगों को चलाते हुए अपने आप को उन तीनों की पकड़ से छुड़ा लिया और बरामदे की ओर भागा। लड़कियाँ वहशी भेड़नियों

की तरह चीखने लगीं लेकिन इसहाक़ ने कोई आवाज़ न सुनी। उसने जल्दी से बरामदे का दरवाज़ा खोला और लड़खड़ाते हुए कदमों से सीढ़ियों से नीचे उतर गया। बाहर निकलते ही वह दौड़ता चला गया। जैसे भेड़िये उसका पीछा कर रहे हैं। वह मजगाँव कोर्ट से बाहर की सड़क पर सरपट भागता चला गया। उसे कमेटी का नल दिखाई दिया। उसने तुरन्त टोंटी घुमाकर नल खोला और अपना सिर उसके ठन्डे-ठन्डे ताज़े पानी की धारा के नीचे रख दिया। पानी उसके सिर को भिगोता हुआ, उसके मुँह पर चलता हुआ, उसकी तार-तार कमीज़ के अन्दर जब धड़कते हुए सीने पर पहुँचा तो उसे कुछ शान्ति अनुभव हुई। 'हाय मेरे ताज़े ठन्डे प्यारे पानी, तू तो शराब नहीं है, तू पानी है। तू खौलते हुए लावे को ठन्डा करता है। आग्नेय भावनाओं से झुलसते हुए जीवन को शीतलता प्रदान करता है। तू पानी है, जो संस्कृति और सभ्यता, शान्ति और संयम का सृजन-हार है।'

अपने कमरे में पहुँच कर, अपने बिस्तर पर बैठ कर, अपना सिर पकड़ कर वह देर तक सोचता रहा। इसहाक़ को धरती का ख्याल आया, जिसके ऊपर मिट्टी की एक बहुत-ही पतली तह है। लेकिन इस तह के अन्दर हज़ारों मील तक खौलता हुआ लावा चला गया है।

यह लावा हर तरह की जिन्दगी का दुश्मन है। लेकिन इस लावे के ऊपर मिट्टी की यह पतली-सी तह है, जिसके ऊपर हज़ारों वर्षों की मेहनत से इन्सान ने अपनी ज़िन्दगी बसाई है, अपनी संस्कृति सजाई है, खेतियाँ जमाई हैं, खेतों में नहरें बहाई हैं, नहरों से हरियाली उगाई है। इस हरियाली से शहर उगे हैं, शहरों में बिजली आई है, बिजली ने रुई से धागे निकाले हैं; और धागों ने सुन्दर और रंगीन वस्त्रों को जन्म दिया है। लेकिन सुन्दरता को जन्म देने वाली इस पतली तह के नीचे कैसा विनाशकारी तरल है, उष्णता है। कभी-कभी जब बाँध टूट जाते हैं, जब खौलता हुआ लावा करवट लेता है और ऊपर की सतह के किसी छेद से गरजता, गूँजता हुआ वह निकलता है, तो कैसे भूचाल आ जाते हैं। बस्तियाँ उजड़ जाती हैं, खेत झुलस जाते हैं, शहर खंडहर हो जाते हैं और जीवन अपनी समस्त सुन्दरता और संस्कृति समेत विनाश को प्राप्त हो जाता है।

और जब इसहाक़ को धरती का ख्याल आया तो उसे इन्सान का ख्याल आया, क्योंकि इन्सान भी धरती की तरह है। वह भी भीतर से खौलते हुए लावे की तरह है। करोड़ों वर्षों से उन्नति करते-करते वह इस मंज़िल पर पहुँचा है और आज उसको अनियंत्रित

भावनाओं और अनियमित प्रवृतियों पर सभ्यता और संस्कृति की एक तह जमी है। बहुत पतली सी तह है यह बहुत मज़बूत भी नहीं है। इसमें जगह-जगह छेद और दरारें हैं, जहाँ से लावा उबल-उबल कर बाहर आ जाता है। तो भी यह एक तह मनुष्य के पास है। इसी पर उसने अपना जीवन बनाया है। हज़ारों वर्षों के कठोर परिश्रम से, सभ्यता की सोम्यता, संस्कृति का स्वरूप, समाज की व्यवस्था और इतिहास के ज्ञान की तह ऊपर तह, खून पसीना एक कर के जमाई हैं। यह पतली सी तह मनुष्य के जीवन के लिये, उसके भविष्य के लिये, उसके विकास के लिये कितनी आवश्यक है, इसका उसे आज ज्ञान हुआ।

और उसने घबरा कर अपने कानों को हाथ लगाया और आप ही बोल उठा—"नहीं, नहीं, मैं आज से वहाँ कभी नहीं जाऊँगा।"

लेकिन दूसरे दिन वह फिर वहीं गया।

अपने मस्तिष्क को कुरेदते-कुरेदते इसहाक़ ने बार-बार कोशिश की कि वह किसी तरह से मालूम करे

कि वह जमीला के पास दोबारा क्यों गया। क्या चीज़ थी जमीला में जो उसे फिर वहाँ खींच ले गई। अगर किसी तरह से वह इसका विश्लेषण कर सके। लेकिन प्यार का विश्लेषण किसने किया है। क्यों मनुष्य को एक देवता या देवी से प्रेम नहीं होता, और एक पापी से हो जाता है? प्रेम सर्वोत्तम गुणों के पुलन्दे का नाम नहीं है। कवियों को छोड़ कर आज कौन आदमी विश्वास से कह सकता है कि रांझा गंजा नहीं था, और जूलियट की एक आँख दूसरी आँख से ज़रा छोटी नहीं थी, और कुम्हारिन सोहनी के हाथ खुरदरे न थे; और मजनू पिचके हुए गालों और टेढ़ी नाक वाला न था, और रूपमती नाक में गुनगुना कर बात न करती थी। प्रेम शरीर के अंगों के सुन्दरतम स्वरूप का नाम भी नहीं है। तो फिर क्या बुद्धि? क्या मनुष्य को अपने प्रेमी की बुद्धि से प्रेम होता है? अगर ऐसा होता तो मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य से प्रेम करने के बजाए दर्शन शास्त्र के किसी बड़े ग्रन्थ से प्रेम कर लेता। लेकिन ऐसा भी तो न था। इसहाक़ के जीवन में ऐसी लड़कियाँ भी आई थीं जिनकी बुद्धि को देख कर उनसे विवाह कर लेने और उनकी सूरत देख कर आत्म-हत्या कर लेने को जी चाहता था। अजीब बात है कि जब औरतें बुद्धिमति

होती हैं तो सुन्दर नहीं होतीं, और सुन्दर होती हैं तो बुद्धिमति नहीं होतीं, और जब कभी सुन्दर और बुद्धिमति भी होती हैं तो उन्हें आई० सी० एस० के भेड़िए उठा कर ले जाते हैं। लेकिन फिर भी उसके जीवन में समोचित बुद्धि वाली और समोचित सुन्दरता वाली औरतें भी आई थीं। तो फिर उसे उनसे प्रेम क्यों न हुआ ?

तो प्रेम में मनुष्य क्या अपने व्यक्तित्व का प्रतिबिंब देखता है ? अपने स्वभाव और अपनी रुचि की समान-अनुकूलता खोजता है। ऐसा उसने बड़े-बड़े दार्शनिकों से सुना था, जिन्होंने व्यवहारिक प्रेम तो एक आध बार ही किया होगा लेकिन पुस्तकी प्रेम दर्जनों बार कर लिया था। और प्रेम औरकाम विज्ञान के विषय पर अगणित पुस्तकें पढ़ डाली थीं। लेकिन यह भी क्या आवश्यक है कि मनुष्य को प्रेम का ज्ञान अपने मस्तिष्क में एक पूरी लाइब्रेरी समेट लेने के बाद हो।

और फिर उसके और जमीला के स्वभाव और मानसिक स्तर में कौन सी समता, समानुकूलता थी। जमीला घटिया, सस्ते रूमानी और जासूसी उपन्यास पसन्द करती थी और इसहाक़ को टाल्सटाय का "वार एण्ड पीस" पसंद था। जमीला को हालीवुड की

सनसनीपूर्ण फिल्में पसन्द थीं, और वह इटालियन यथार्थवादी फिल्में पसन्द करता था। जमीला को भड़कीले कपड़े पसन्द थे और वह उसे सफेद साड़ी में देखना चाहता था। इसहाक़ को सभ्य मजाक पसन्द था और वह उसे गन्दे चुटकुले सुनाती थी। इसहाक़ औरत और मर्द के सम्बन्ध को लाज और शर्म के परदे में लपेट कर रखना चाहता था, और इसके विपरीत जमीला के बेडरूम में तीन तरह के नंगे कोकशास्त्र रखे हुए थे।

फिर क्या मनुष्य प्रेम में विरोधी तत्वों को ढूँढ़ता है—अर्थात अगर वह शैतान है तो एक देवता को चाहता है और आप अगर सदाचारी है तो एक ऐयाश को पसन्द करता है। यह भी सही नहीं है, क्योंकि पुरुष और स्त्री एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं, एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति ने उन्हें बनाया ही इस तरह है कि एक के बिना दूसरा अपूर्ण है—फिर उसने ऐसे चौपाए भी तो देखे थे जो मानो एक ही साँचे में ढले हुए थे, एक ही स्वभाव, एक ही चाह रखते हुए भी एक दूसरे से अत्यन्त प्रेम करते थे।

फिर आखिर प्रेम है क्या ?

अब तक उसने इस प्रेम की वास्तविकता को जानने की इतनी कोशिश इसलिए की थी कि अगर किसी तरह से प्रेम का विश्लेषण कर सके, उसके तत्वों को अलग-अलग करके चिन्तन की कुठाली में परख सके, तो शायद वह इस प्रेम पर काबू पाने में सफल हो जाएगा। क्योंकि जब मनुष्य को किसी वस्तु की असलियत का ज्ञान हो जाता है तो वह मानो उस पर एक तरह से काबू पा लेता है।

लेकिन बहुत सोच-विचार के बाद भी जमीला से उसका प्रेम, उसकी समझ में न आ सका। वह केवल यह जान सका कि आज भी वह जमीला को चाहता है और इस क़दर चाहता है कि उसके लिये आत्म-हत्या करने पर तैयार हो गया है। वह मरना तो नहीं चाहता। कौन इस जीती जागती दुनिया में स्वयं ही मरना चाहता है। लेकिन अब वह तो जमीला की याद में, जमीला के प्रेम में इतना पागल हो गया है कि उसके सामने कोई दूसरा मार्ग ही नहीं रहा है। वह घबरा कर आराम कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बरामदे में टहलने लगा। 'क्यों ? क्यों ? आखिर ऐसा क्यों है ? जमीला ख़ूबसूरत है, लेकिन उस से सुन्दर लड़कियाँ भी तो इस संसार में हैं। वह एक

अच्छी नाचने वाली है, लेकिन उस से अच्छी नर्तकियाँ भी इस संसार में मौजूद हैं—लेकिन वह अपने मस्तिष्क को अधिक समय तक इस पटरी पर न चला सका। जैसे उसका मस्तिष्क आप ही आप उस से विद्रोह करता गया और उससे कहता गया—'तुम झूठ कहते हो, जमीला जैसी सुन्दर लड़की इस संसार में नहीं है। उस से अच्छा नाचने वाली लड़की मानव सभ्यता ने आज तक तैदा नहीं की। जमीला जैसी लड़की आज से पहले कभी इस संसार में न पैदा हुई, और न आगे होगी, और यह बिलकुल सच है। इस संसार में जितने मनुष्य हैं, उतने ही प्रेम हैं और हर प्रेम एक दूसरे से अनोखा, अनमोल और अलग है, और उस जैसा प्रेम फिर कभी पैदा न होगा। जब नये मनुष्य पैदा होंगे तो नये प्रेम जन्म लेंगे। लेकिन मेरे जैसा प्रेम फिर कभी न जन्म लेगा।

इसलिये जमीला......!......और हाँ केवल—जमीला !

वह बरामदे में टहलते-टहलते रुक गया और किसी के पगों की थाप सुनने लगा। एक क्षण के लिये उसे भ्रम हुआ—जैसे जमीला सामने से आ रही है। मगर वह तो चौकीदार था जो होटल के चारों ओर

घूम रहा था। इसहाक़ को इस समय बड़ी निराश हुई, क्योंकि जब वह जमीला से झगड़ कर चला था तो उसने जमीला को अल्टीमेटम दे दिया था, कि अगर वह छः दिन के अन्दर उसके पास रोज़ होटल में न आई तो वह आत्महत्या कर लेगा। और जमीला ने घबरा कर उसका हाथ पकड़ कर उसे इस पागलपन से दूर रहने की प्रार्थना की थी, और उस से कहा था कि अगर वह हठ पर अड़ा रहा तो वह ज़रूर उसे समझाने के लिए रोज़ होटल आएगी।

लेकिन यह तो चौकीदार था।

यद्यपि उसे जमीला के आने की अधिक आशा न थी, पर एक हल्की सी आशा जाने कहाँ से एक रंगीन तितली की तरह उड़-उड़ कर उसके सुहावने स्वपनों में घूम रही थी। वह जमीला की हंसी सुन सकता था, और उस के ऊँची एड़ी वाले सैंडिलों की चाप—लेकिन दो दिन और दो रातें गुजर चुकी थीं, और वह न आई थी और आज की रात गुज़री जा रही थी। आख़िरी गाड़ी आकर चली गई थी, अब बम्बई से कोई गाड़ी न आएगी, जमीला को लेकर। फिर भी न जाने क्यों, कैसे, अबतक वह आस लगाए हुए है।

"तो जमीला न आएगी। तो—यह अन्धेरा पूर्णतया प्रकाशहीन क्यों नहीं हो जाता।" इसहाक़ इस समय बिल्कुल उन्मत्त सा हो रहा था। वह इस समय ऐसी निराशा चाहता था, जिस में आशा का अंकुर भी न हो; ऐसा अन्धकार, जिस में प्रकाश की एक किरण भी न हो; ऐसा सन्नाटा जिस में स्वर की एक लहर भी न हो, ताकि वह पूर्णशक्ति से आत्महत्या कर ले।

यद्यपि रात बहुत गहरी थी, और अन्धकार बहुत गहन था, और सन्नाटा बिल्कुल स्वरहीन था। लेकिन फिर भी वह सब कुछ ऐसा होता था, जैसा इसहाक़ चाहता था। धरती अंधकार में गर्त थी और पहाड़ मौन थे।। लेकिन उन की गहराइयों में छोटे-छोटे घरों में कहीं कहीं प्रकाश उगा हुआ मालूम होता था। आकाश काला था और बादलों से अटा पड़ा था, तो भी कहीं-कहीं उस में तारों की झाँझियाँ लटकी हुई थीं। रात निस्तब्ध थी, फिर भी उसकी खामोशी के जाले में कितनी ही आवाजें अटकी हुई थीं—झींगरों की आवाजें, पत्तों के सरसराने की आवाजें, झाड़ियों से किसी जङ्गली जानवर के बिदक कर भागने की आवाज़—और दूर किसी शाख की अन्तिम टहनी पर बैठी हुई बुलबुल की आवाज़। और हर आवाज़ मानों जीवन का एक आमंत्रण थी।

इसहाक़ इस समय बुलबुल के नग़मे के व्यंग की ताब न ला सका और अपने कान लपेट कर, अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ते हुए, काटिज़ के भीतर आ गया। उसने पाँव से ठोकर मार कर ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया और बैड रूम में जाकर अपने बिस्तर पर गिर पड़ा। और जब वह अपने बस्तर पर गिर पड़ा तो उसे जमीला याद आई, उस की बाहें, उस के होंठ, उस का लिपट-लिपट जाना, उसकी मस्ती। जमीला बड़ी स्पष्टवादी औरत थी। उस ने उसे पहले दिन ही बता दिया था कि जब तक वह उस से प्रेम करेगी केवल उसी की होकर रहेगी। लेकिन कब तक यह प्रेम करेगी ? यह उसे आप पता नहीं। सम्भव है दो दिन या दो मास या दो वर्ष या सारी ज़िन्दगी।

जमीला ने उसे बताया कि उस रात जिस तरह वह उन तीनों लड़कियों को ठुकरा कर चला गया था, उसकी वह अदा उसे बहुत भाई थी और वह उस पर मर मिटी थी। और जमीला का मर मिटना सचमुच बड़ा मर मिटना होता था। इन छः मासों में इसहाक़ को उसका बहुत अनुभव हो गया था। मुलतानी भैया उसे हर महीने नौ सो रुपये भेजते थे, इसलिए उसे खाने-पीने की कतई फ़िक्र न थी। हर महीने चार छः

पार्टियों में उसे डान्स के लिये बुलाया जाता था, सात आठ सौ वह वहाँ से पीट लेती थी। इसलिए वह एक आजाद औरत थी---एक सुन्दर और एक आज़ाद औरत, जिसका एक मात्र स्वामी कोई न था। किसी सेठ की वह रखेल न थी, उसकी मौसी और उसका पिता उसके टुकड़ों पर पड़े थे। इसलिये वह भी उसे कुछ न कह सकते थे। वह जो चाहती थी, करती थी। उसे कोई रोकने वाला न था। वह दिन भर अपने ड्राइंग रूम में अपने इसहाक़ को नाच दिखा-दिखा कर रिझाती थी और लगभग हर फिल्मी गाने को अपने नाच पर ढ़ाल लेती। उसका नाच बड़ा अद्भुत था। ऐसा नाच इसहाक़ ने किसी फिल्म में न देखा था। किसी स्टेज पर उसकी प्रदर्शनी न हुई थी। यह नाच जमीला ने किसी मास्टर से न सीखा था। शायद यह नाच हर औरत के शरीर में होता है, लेकिन वह जानती नहीं है उसे। मगर जमीला जानती थी। वह अपने शरीर की हर अदा से परिचित थी और उसे इस्तेमाल करना भी जानती थी। शायद हर औरत अपने शरीर से परिचित होती है, लेकिन शर्म और लाज का आँचल उसके लिये एक सुन्दर दीवार बन जाता है, यद्यपि वह शर्मोहया के परदे में भी बहुत कुछ कह जाती है।

औरत बड़ी सलीकामन्द होती है। मगर जमीला को यह दबे-दबे अन्दाज पसन्द न थे। वह सम्पूर्ण माँसल देह थी। और वह ऐसा चीखता हुआ, खौलता हुआ, उबलता हुआ नाच नाचती थी कि एक बार तो इसहाक़ ने भावावेश में आ कर उसे बालों से पकड़ कर घसीटना आरम्भ कर दिया था और जमीला रोती जाती थी, और कहती जाती थी—"मुझे मारो, मुझे और मारो—मुझे छड़ी से मार-मार कर मेरा बदन लाल कर दो।" वह कहती जाती थी और रोती जाती थी और उसके होंटों से राल गिर रही थी। और इसहाक़ ने एकाएक घबरा कर, उसकी बात सुन कर, उसे बालों से घसीटना छोड़ दिया था, और अपने इस वहशीपन पर हैरान होकर वह सोफे में धँस गया था। यह औरत उसे कितने लाखों वर्ष पीछे ले गई थी और अब यही औरत उसे इतनी पसन्द थी कि वह उसके लिये मर सकता था, उसकी हर बात पर जान दे सकता था, उसकी हर चीज उसे अच्छी लगती थी। उसका वासना-पूर्ण नाच, उसके अश्लील चुटकले, उसका कामग्रस्त रोमान्स। जमीला ने उसे नर्क का द्वार दिखा दिया था और अब वह वहाँ पहुँच चुका था, जहां से साँपों की बाम्बी आरम्भ होती है। जहाँ पहुँचने के बाद कोई मुश्किल से ही वापिस आता है।

फिर उसके मस्तिष्क में वह रात आई, जिसे वह एक अर्से से आते हुए देख रहा था। क्योंकि अगर जमीला साक्षात देह थी तो इसहाक़ तो साक्षात देह न था, वह कुछ और भी था। वह कुछ सोचता था, कुछ समझता था, कुछ लिखता था, कुछ दूसरे सामाजिक कार्य भी करता था। फिर भी अब वह जमीला के प्रेम में पड़ कर सब कुछ भूल गया था। उसने ज़मीला को खुश करने के लिये जासूसी उपन्यास लिखने आरम्भ कर दिये थे। हालांकि जमीला को रुपयों की क़तई जरूरत न थी, फिर भी उसने जमीला पर बहुत रुपये खर्च करने आरम्भ कर दिए थे। 'अगर बालजाक़ जैसा महान् लेखक ऐसी बातें कर सकता है तो मैं क्यों नहीं कर सकता'—इसहाक़ ने सोचा और अपने मन को तसल्ली दे ली। अब वह ढूँढ़-ढूँढ़ कर गन्दे चुटकले लाता और जमीला को सुनाता। नंगे पोस्ट कार्ड और नंगी किताबें उसने ढ़ेरों पढ़ डालीं, और अपनी ओर से वह जमीला का सब से चहेता प्रेमी बन गया।

लेकिन हज़ार बिगड़ने पर भी वह उस सतह पर न पहुँच सका, जहाँ जमीला थी। कभी-कभी कोई रग उसके भीतर फड़कने लगती और वह कतरा जाता और जमीला उसकी इस कमज़ोरी और अन्तर्द्वन्द्व को फ़ौरन

अनुभव कर लेती। और यह बड़ी ख़तरनाक बात थी। जमीला प्रेम के मामले में दूसरी औरतों से बहुत भिन्न थी। दूसरी औरतें जब प्रेम करती हैं तो उसे एक फूल की सुगन्ध समझ कर अपनी छाती से लगा लेती हैं। लेकिन जमीला इस तरह प्रेम करती थी, जैसे मनुष्य रोटी खाता है या पानी पीता है। रोटी खाई और हज़म, पानी पिया और ख़तम। इसलिये जब किसी ऐसी औरत के खाने में कंकर आ जाए, तो वह क्या करेगी? जमीला ने पहली बार बुरा-सा मुँह बनाया, दूसरी बार नाराज़ हो गई, तीसरी बार उसने ग्रास मुँह से उगल कर बाहर फेंक दिया। "गैट आउट।"

लेकिन यह तो हुई सैद्धान्तिक बात। व्यवहारिक रूप में घटना इससे भिन्न ढ़ंग से हुई। कई दिनों से जमीला उकताई-उकताई-सी दिखाई दे रही थी। कभी तो वह नाचने से ही इन्कार कर देती, कभी उसके साथ खाना न खाती, कभी सिनेमा न जाती, कभी अच्छे कपड़े न पहनती, कभी रोने लगती, कभी आप ही आप हँसने लगती, कभी सिर दर्द का बहाना बनाकर उससे अलग कमरे में जाकर सो जाती। एक दिन जब वह इस तरह अलग कमरे में सो रही थी और वह उसके कमरे में घुसा, तो उसने जल्दी से किसी साये को जमीला के

कमरे से बाहर निकलते हुए सा देखा। कमरे में अन्धेरा था, इसलिये इसहाक़ भली प्रकार न देख सका।

इसहाक़ ने पूछा—"यह कौन था ?"

"मौसी थी" इतना कह कर जमीला ने मुँह फेर लिया। लेकिन इसहाक़ का सन्देह दूर न हुआ। उसने अपने दिल में सोचा। इस घर में इतने दरवाज़े हैं कि किसी शरीफ़ घर में न होने चाहिएं। और जमीला तो ऐसी प्यारी लड़की है जिसे ऐसे घर में रखना चाहिए जिसका केवल एक दरवाज़ा हो और उसमें भी ताला पड़ा हो।

इस घटना के तीन चार दिन पश्चात् एक शाम को जब इसहाक़ जमीला के घर पहुँचा तो ड्राइंग रूम में एक बहुत ही सुन्दर और सजीला युवक हँस-हँस कर जमीला से बातें करने में संलग्न था। जमीला ने परिचय करा दिया "यह हैं मिस्टर शरीफ़, अमरीकी रेयान के इम्पोर्ट मर्चेंट—आप हैं इसहाक़।"

थोड़ी देर तक नहीं, बहुत देर तक निस्तब्धता छाई रही। दोनों पुरुषों ने एक दूसरे को देखा, नापा तोला, जाँचा परखा और वज़न का अन्दाज़ा किया। और इसहाक़ को लगा कि न केवल शरीफ की जेब मुझ से भारी है बल्कि उसकी बाहों की मछलियाँ भी मुझसे तकड़ी हैं

और उसकी गर्दन भी ज़्यादा मोटी है। उसका दिल अन्दर-ही-अन्दर बैठने लगा। लेकिन उसने अपने आपको ढ़ारस दी और बड़े रोब से सोफ़े पर बैठा हुआ सिगरेट पीता रहा और इधर-उधर की बातें करता रहा।

उस रात जमीला उन दोनों के लिए नाची। इससे पहले ऐसा कभी न हुआ था। इन छः मास में कितने ही मित्र उसके ड्राइंग रूम में क्यों न बैठे हों—जमीला केवल इसहाक़ के लिये नाची थी। वह ही सदैव उसकी दृष्टि का, उसके हाव भावों का केन्द्र होता था। पर आज वह उन दोनों के लिये नाच रही थी, बल्कि इसहाक़ को ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे वह उसके लिये कम, और शरीफ के लिये ज़्यादा नाच रही है। 'लेकिन संभव है यह मेरा वहम हो''—इसहाक़ ने सोचा।

आज जमीला ने खाना भी अपने हाथ से पकाया था। उसे वह पहली रात का प्रेम याद आया, जब जमीला ने स्वयं अपने हाथ से उसके लिये खाना तैयार किया था। खाना पकाने की उसे आदत न थी, इसलिये मुर्ग़ी का मांस साफ़ करते हुए उसने अपना हाथ काट लिया था।

आज भी जमीला ने अपने हाथ से मुर्ग़ी पकाई थी। पर जैसे राख डाल कर पकाई थी, इसहाक़ की ज़बान पर ऐसा स्वाद था। जब वे लोग खाना खा चुके, सिगरेट के दो एक कश लगा चुके, तो जमीला ने शरीफ से कहा—"आप बैड रूम में तशरीफ़ ले जाइये, मुझे इसहाक़ से कुछ बातें करनी हैं।"

शरीफ एक अजीब अदा से मुस्कराता हुआ उठा और "बाई-बाई" कहकर बैडरूम में घुस गया। इसके बाद जमीला ने कहा—

"गैट आऊट"

और इसके बाद जितना झगड़ा हुआ, मारपीट हुई, उसकी और शरीफ़ की जो लड़ाई हुई, जो चीजें टूटीं या तोड़ी गई या खिड़कियों से बाहर फैंकी गईं, वह सब बातें इस समय इसहाक़ भूल जाना चाहता था। यदि उसका बस चलता तो वह जमीला को भी भूल जाता। लेकिन जमीला को वह इस बेवफ़ाई के बाद भी भूल न सकता था। उसकी हर अदा उसे तड़पा रही थी। जिस एकाग्रता से छः मास तक जमीला ने उससे प्रेम किया था, उसने उस सारी एकाग्रता को अपने अन्तर में समेट कर सुरक्षित कर लिया था और आखिरी दिन की नफ़रत को अपने दिल से भुला दिया था। मनुष्य अपने

को छलने के लिए क्या-क्या याद करता है और क्या-क्या भुला देता है। इसहाक़ का भी यही हाल था। उसे जमीला की हर हसीन अदा याद थी, और उसकी कोई बुराई याद न थी—यही चीज़ तो कम्बख़्त मुहब्बत कहलाती है।

रात के तीन बजे इसहाक़ ने निर्णय किया कि अब सब कुछ ख़त्म है—वह न आई न आयेगी। वह शरीफ़ के साथ ऐश कर रही है और मैं यहाँ उसकी प्रतीक्षा में कुढ़ रहा हूँ। अब सब खत्म है। अब मैं कल सुबह ही उस जगह जाऊँगा जिसे परियों का झरना कहते हैं और वहाँ से कूद कर अपनी जान दे दूँगा।

उसने बड़े ठण्डे दिल से यह निर्णय किया और चादर तान कर खूब गहरी नींद सो गया।

दूसरे दिन सुबह उठते ही वह रोज़ होटल के पूर्व की ओर ढलानों पर से गुज़रता हुआ परियों के झरने की ओर चला। उसे मार्ग ठीक तरह से मालूम न था। लेकिन इस समय जहाँ पर वह खड़ा था, वहाँ से भी वह

त्रिमूर्ति से परे, परियों के झरने को देख सकता था, जो तराई के सब से ऊँचे मैदान की ढ़लान से दूर नीचे एक गहरी खड्ड में जा गिरता था। जहाँ से झरना भी जरा-सा दिखाई देता था। वह उसे देखते-देखते मार्ग ढूँढ कर वहाँ पहुँच जाएगा।

वह ऊँची-ऊँची झाड़ियों से गुजरता हुआ एक तंग से रास्ते पर हो लिया। उस समय बड़ी निस्तब्धता छाई हुई थी। उसके मन को भी जैसे पूर्ण शान्ति प्राप्त हो गई थी। अभी सूर्य निकला न था, निकलने वाला था इसलिए आकाश धरती से अधिक प्रकाशमान था। उसकी नीलिमा में सुनेहरीपन घुला हुआ था और पर्वतों की चोटियों को आकाश रेखा अरुणिम प्रकाश की झालरों में झिलमिला रही थी, और हवा शबनम के मोती छिटकाती उसके गालों को स्पर्श करती जा रही थी। 'कितनी सुन्दर सुबह है'—इसहाक़ ने सोचा। ऐसा पवित्र और पावन प्रभात देखने को कम मिलता है। और एकाएक उसे जमीला का चेहरा याद आ गया। जब एक सुबह को वह किसी भयानक स्वप्न से चौंक कर उठा था, और जाग कर अपने पास सोई हुई जमीला का चेहरा देखा था—उस समय खुली खिड़की में सुबह अपना निर्मल, स्वच्छ श्वेत प्रकाश ले आई थी और इस

प्रकाश में इसहाक़ को सोई हुई जमीला का चेहरा एक सुकोमल कौमार्य के प्रकाश से प्रदीप्त दिखाई दिया। कैसा भोलापन था उस चेहरे पर, जैसे वह किसी ऐसी लड़की का चेहरा हो जिसने आज तक कोई पुरुष न देखा हो, या जैसे वह एक ऐसी सुबह हो जिसने आज तक किसी सूरज के दर्शन न किए हों।

इस तरह वह सोचता-सोचता आगे बढ़ गया। मार्ग तंग होता जा रहा था। दोनों ओर की झाड़ियाँ आपस में मिलने का प्रयत्न कर रहीं थीं। एक स्थान पर मार्ग खत्म हो गया। झाड़ियाँ एक दूसरे में मिल गईं। उन झाड़ियों के परे उसे एक खण्डित मेहराब दिखाई दी। जहाँ कोई दीवार न थी, कोई मकान न था—बस एक मेहराब खड़ी थी। वह झाड़ियों को चीर कर उस मेहराब तक पहुँचा। मेहराब एक मोड़ पर स्थित थी, जहाँ से सामने का दृश्य दिखाई न देता था। जब वह उस मेहराब के नीचे आया तो उसने देखा कि मेहराब किसी गिरजे की मेहराव से मिलती-जुलती हुई थी। जो एक तंग रास्ते को जाती थी। आगे का मार्ग कभी तराशे हुए पत्थरों का बना हुआ होगा, पर इस समय पत्थर जगह-जगह से उखड़ गए थे। मार्ग के अन्त पर एक और छोटी-सी मेहराब थी, जिसके आगे एक खुला क़ब्रिस्तान

था। वह क़ब्रिस्तान की सलीबों को देख कर चौंक गया। क़ब्रों पर सलीबें ऐसे खड़ी थीं जैसे औरतें घूँघट काढ़े, हाथ उठाए, हर क़ब्र पर फातह पढ़ रही हों। वह भी तो मरने वाला था, थोड़े दिनों में उसकी भी तो क़ब्र बनेगी। इसलिये उसे इन क़ब्रों में बड़ी दिलचस्पी पैदा हो गई और वह ध्यान से उन क़ब्रों पर खुदे हुए नाम पढ़ने लगा।

"बिलियम गारफील्ड, उम्र उन्नीस साल, मैसोपीटेमिया की लड़ाई में घायल हुआ। खंडाले में आकर मरा।" "जान ओ हारा, उम्र तीस साल, अफ़गानिस्तान की दूसरी लड़ाई में ज़ख़्मी हुआ। खंडाले में आकर मरा।" "डेविड सिलोन, उम्र इक्कीस साल, बसीन में मरहठों के विरुद्ध लड़ते-लड़ते ज़ख़्मी हुआ। खंडाले में आ कर मरा। उस की पत्नी और दो बच्चे अपने प्यारे पिता की मुक्ति की प्रार्थना करते हैं।"

'करो मुक्ति की प्रार्थना, प्यारे पादरी! माननीय लार्ड बिशप। पहले एक अठारह, उन्नीस, बीस वर्ष के लड़के को, किसी विलयम, जॉन, डेविड को उसके घर से उठा लो। लंकाशायर के किसी कारख़ाने से, स्ट्राटफोर्ड की किसी गली से, डीवोन के किसी गाँव से उठा लो उसे, जैसे खिलाड़ी शतरंज से

मोहरा उठाते हैं और फिर उसे रख दो मैसोपोटेमिया में या अफ़गानिस्तान में या बसीन में। उस के हाथ में एक बंदूक दे दो और उसे मर जाने को कह दो। मत ख़्याल करो कि अभी वह बच्चा है। अभी तो माँ का दूध भी उसके होटों से नहीं छूटा है। अभी तो उसने जी भर कर फुटबॉल भी नहीं खेला है। शायद किसी से प्यार भी नहीं किया है। तनिक ख़्याल न करो, इन छोटी-छोटी बातों का। उठा लो उसे अपनी उंगलियों में और फिर रख दो उसे एशिया और अफ़रीका के मैदानों में, पहाड़ों और घाटियों में। जहाँ लोहा है, तांबा है, और पीतल है और पटसन है और चाय है। जहाँ रोटी है और भूख है। सीमेंट है और एक टूटी हुई झोंपड़ी है। मत ख़्याल करो इन बातों का, मेरे सम्मानित बुजुर्गों ! क्योंकि लाभ ही जीवन का पवित्र धर्म है; कारख़ाना ही महान है; बैंक बैलैंस ही पूजने योग्य है। इसलिये निडर हो कर उठा लो उस भोले बालक को और रख दो उसे गोलियों की बाढ़ पर। और जब वह मर जाय तो उसकी क़ब्र पर एक संगमरमर की सलीब गाड़ दो और करो मुक्ति की प्रार्थना, उस परम पिता से, क्योंकि मुक्ति से बड़ी और कोई चीज़ नहीं।

इसहाक़ का ख़ून खौलने लगा। उसने बड़ी कठिनाई से अपने को शान्त किया। 'नहीं-नहीं, आज मुझे ऐसी

बात नहीं सोचनी चाहिए। आज जबकि मैं रोज़ होटल की ढ़लान से गुज़र कर मौत की घाटियों में जा रहा था तो हर चीज शान्त होनी चाहिए, हर चीज़ शीतल और बर्फ़ सी ठण्डी—जिससे कि वह मौत की घाटियों में फिसलता चला जाए।

उसने ढ़लान पर लम्बे-लम्बे डग भरने आरम्भ किए। थोड़ी देर में वह त्रिमूर्ति के पुल पर पहुँच गया, जहाँ एक छोटे-से नाले का पानी मानो सोता हुआ गुज़र रहा था। पुल के पार कदम का एक पेड़ था। पेड़ के आगे टाटा कम्पनी के बिजली के खम्बों की क़तार त्रिमूर्ति के मैदानों को बीच में काटती हुई चली गई थी। हर चीज़ उजली थी, धुली-धुलाई थी और खामोश थी—ख़ामोशी का वह आलम था कि वह झरने की आवाज़ तक न सुन सकता था—ऐसा सन्नाटा उस के दिलो-दिमाग़ पर छाया हुआ था।

वह बहुत देर तक झरने को देखता रहा, जो डेढ़ हज़ार फुट की ऊँचाई से नीचे एक खड्ड में गिर रहा था। इस खड्ड के किनारे-किनारे रेल की पटरी चली गई थी और घूमते हुए मोड़ पर एक सुरंग में दाख़िल हो जाती थी। उसने कल्पना में अपने आप को इस ऊँचाई से छलाँग लगा कर—अर्थात् कूद कर, झरने से

परे रेल की पटरी पर गिरते हुए देखा। थोड़ी देर में रेलगाड़ी आई और उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए। अब वह रेल की पटरी पर अपने शरीर के दोनों भाग देख सकता था। सिर अलग, धड़ अलग। यह सोचते हुए भी उसके मस्तिष्क में झुरझुरी तक न आई। वह बिल्कुल चेतनाहीन, विचार-शून्य होकर नीचे विनाश की उस खाई को देखने लगा, और धीरे-धीरे उस के क़दम आगे को घिसटने लगे।

एकाएक एक ज़ोर के झटके से किसी ने उसे बाज़ू से पकड़ कर पीछे खींच लिया—"क्या करते हो?" एक औरत की आवाज़ ज़ोर से गूँजी।

इसहाक़ ने घूम कर देखा—उस के सामने, उसका बाज़ू पकड़े हुए एक अनजान औरत खड़ी थी। उसकी रंगत सफ़ेद थी। उसने स्लैक्स पहन रखी थी। उस की नीली आंखों में एक जिज्ञासा-पूर्ण चमक थी और घबराहट और परेशानी।

इसहाक़ ने अपने माथे पर हाथ फेरते हुए कहा, "कुछ नहीं, कुछ नहीं, यूंही चक्कर सा आ गया था।"

वह हँसी—"इस तरह नीचे देखना बड़ा खतरनाक होता है—कभी-कभी इन्सान—!"

"हाँ कभी-कभी इन्सान—!" इसहाक़ चुप होगया। अब वह उसका बाजू थामे चल रही थी। झरने से परे, कदम के पेड़ के नीचे उसने उसका हाथ छोड़ दिया, बोली—"क्या अब तुम ठीक हो ?"

इसहाक़ नीचे धरती पर बैठ गया। उस की टांगें कांप रही थीं और नीचे घास के बड़े-बड़े गुच्छे ग़ालीचे की तरह कोमल थे। उसने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा—

"हाँ। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

अजनबी औरत ने अपनी मजबूत छड़ी का ऊपर का हुक खोला। अब छड़ी के ऊपर एक सीट-सी बन गई। उसने छड़ी को धरती में गाड़ दिया और उस सीट पर बैठ गई। इसहाक़ धरती पर बैठा था। अजनबी औरत ने इसहाक़ से पूछा—"इस टीले पर चढ़ोगे ?"

त्रिमूर्ति के मैदान के बीच में एक टीला था। जब बादल झुक कर आते थे तो ऐसा मालूम होता था मानो वह टीला आकाश को छू रहा है। वह औरत उसी टीले की ओर संकेत कर रही थी।

इसहाक़ ने कहा—"अभी नहीं, थोड़ी देर में।"

अजनबी औरत ने ज़रा रुक कर पूछा—"क्या तुम आत्महत्या करने आए थे ?"

"नहीं तो"—इसहाक़ ज़ोर से चिल्लाया—"मैं तो—मैं तो झरना देखने आया था।"

वह अजनबी औरत दुःख भरे स्वर में बोली—"परसों मेरी माँ मर गई। कल मुझे उसकी मौत का तार मिला, जो मेरे पति ने मुझे बम्बई से दिया था। मैं कल दिन भर और रात भर परेशान रही। दुनिया की किसी चीज़ में मुझे दिलचस्पी न रही। मेरी माँ बहुत अच्छी थी। हर माँ अच्छी होती है न ?"

"मुझे मालूम नहीं"—इसहाक़ ने जवाब दिया "मैं बहुत छोटा-सा था, जब मेरे माता-पिता, दोनों मर गए। मैं एक यतीमख़ाने की औलाद हूँ। मैं आप ही अपनी माँ हूँ और आप ही अपना बाप, आप ही अपना रिश्तेदार। ख़ून का रिश्ता क्या होता है, यह तो मुझे मालूम नहीं, हाँ प्यार का रिश्ता मुझे मालूम है और यह रिश्ता बड़ा दुख देने वाला होता है।"

वह चुप हो गया और अजनबी औरत के बाज़ू को देखने लगा, जिस पर एक काली पट्टी बँधी थी।

"तुम्हारी माँ बहुत अच्छी थीं न"—इसहाक़ ने पूछा "माँ ! माँ क्या होती है ? क्या वह प्रेमिका से भी

ज़्यादा प्यार करती है ? क्या वह कभी 'गेट आउट' नहीं कहती ?"

उसने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया ताकि वह अजनबी औरत उसके आँसू न देख सके। उसका सारा शरीर तेज़ हवा में लड़खड़ाते हुए पत्ते की तरह काँप रहा था। फिर उससे न रहा गया। उसने अपनी गर्दन धरती पर रख दी और फूट-फूट कर रोने लगा।

अजनबी औरत ने उसे सांत्वना या ढारस न दी। वह उसे दुख-भरी दृष्टि से तकती रही और कहती रही।

"मेरा नाम ऐलसा है। मैं जर्मन हूँ। मेरा पति एक यहूदी है। जंग से पहले हम लोग स्कीनवर्ग में रहते थे, जहाँ एक नदी बहती है, जिस का नाम ऐलसा है। उसी नदी से मुझे यह नाम मिला है। जंग से पहले हम लोग बहुत खुश थे। मेरे पति की एक छोटी-सी मिल थी, जहाँ हम बच्चों के डिज़ायन वाले बढ़िया कपड़े तैयार करते थे। हम लोग बहुत खुश थे। मैं और मेरा पति तथा मेरी बूढ़ी अस्सी साल की माँ। फिर जंग शुरू हो गई; क्योंकि मेरा पति यहूदी था, इसलिए हमें जर्मनी से भागना पड़ा। लेकिन मेरी माँ

वहीं रह गई। छिपते-छिपाते बड़ी मुश्किल से हम लोग पेरिस पहुँचे ; लेकिन एक दिन नाज़ी वहाँ भी आ पहुँचे और हमें फ्रांस से भी यूरुप भागना पड़ा। फिर मेरे पति ने सोचा यूरुप में इतनी जेलें कट्ठी हो गई हैं और अगर यूरुप वाले न बदले तो इतनी जेलें और कट्ठी हो जाएँगी कि स्वतंत्रता और सभ्यता का नाम तक मिट जाएगा। इसलिए हम लोग बम्बई चले आए, क्योंकि तुम एशिया वाले अपनी गरीबी और गन्दगी के बावजूद अभी तक ज़िन्दगी से प्यार करते हो। तुम्हारे चेहरों पर विषादों और विभीषिकाओं के बावजूद एक अजीब तरह का आशावाद झलकता है और जीवन के प्रति एक पवित्र पूजा-भाव है। हम यहाँ बड़े आराम से हैं। हमारी मिल तो अब नहीं है, लेकिन मेरे पति ने कर्ज़न रोड़ पर, बच्चों के कपड़ों की सिलाई की एक दुकान खोल ली है। वह कपड़े डिज़ाइन करते हैं, मैं सीती हूँ। हम लोग केवल दर्ज़ी हैं, लेकिन बहुत खुश हैं। मेरे कोई बच्चा नहीं है, लेकिन मेरे पास पाँच सुन्दर बिल्लियाँ हैं। बम्बई में जब तुम मेरे घर आओगे तो मैं तुम्हें दिखाऊँगी।"

देर तक वह इसी तरह बोलती रही और इसहाक़ सुनता रहा—अपनी आहों और अपने आँसुओं के बीच

सुनता रहा। धीरे-धीरे उसकी आहें दबती गई; धीरे-धीरे उसके आँसू दबते गये। कुछ समय के बाद उसने धरती से अपनी गर्दन उठाई। रुमाल से अपने मुँह को साफ़ किया और ऐलसा की ओर लज्जित दृष्टि से देखता हुआ मुस्कराने लगा।

ऐलसा ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया, बोली "आओ, अब बाहर चलें।"

इसहाक़ उठा, लेकिन उठते-उठते उसके हाथ उस स्थान पर फिर गए, जहाँ उसने गर्दन झुकाई थी, जहाँ वह रोया था। लेकिन वहाँ कुछ न था। धरती सारे आँसुओं को सोख लेती है।

ऐलसा ने धीरे से कहा—"अगली बहार में यहाँ फिर फूल खिलेंगे। फिर कोई राह चलती मराठी लड़की उन्हें उठाकर अपने बालों में लगा लेगी या खेतों से काम करके आती हुई कोई माँ अपने बच्चों का आंचल इन फूलों से भर देगी, और बच्चे की हँसती हुई आँखों से यह कोई न पहचान सकेगा कि यहाँ पर एक प्रेमी की आँखें रोई थीं। ऐसी प्यारी है यह जिन्दगी।"

दूसरे दिन इसहाक़ और ऐलसा ड्यूक्स नोज़ (Duke's Nose) पर चढ़ने के लिये रवाना हुए। ड्यूक्स नोज़ खंडाले के आस-पास की पहाड़ियों की चोटियों में सब से ज्यादा ऊँची है, और यह नीचे से देखने में बिलकुल किसी धनी व्यक्ति के घमंडी चेहरे की टेढ़ी नाक की तरह दिखाई देती थी। इसहाक़ खंडाले कई बार आ चुका था, लेकिन वह ड्यूक्स नोज पर आज तक न चढ़ा था, इसलिये उसे रास्ता भी मालूम न था।

ऐलसा ने पूछा—"तुम खंडाले कई बार आए लेकिन ड्यूक्स नोज़ पर कभी नहीं गए ?"

"नहीं।"

"वह सामने की पहाड़ी पर इटालियन मिशन देखा है ?"

"नहीं।"

"उस के आगे बढ़ी हुई पहाड़ी की चोंच से एक बड़ा सुन्दर झरना दिखाई देता है, जो एक गहरी घाटी में जा गिरता है, लेकिन यहाँ से नहीं दिखाई देता। तुमने उसे देखा होगा ?"

"नहीं।"

"खंडाला और लोनावाले के बीच में जो नदी बहती है, वह जिन घाटियों, ढलवानों, मार्गों से गुजराती है, तुमने उसके बहने के मार्ग को, खंडाले से लोनावाले तक तो देखा होगा ? बीच में बड़े सुन्दर मैदान भी आते हैं।"

"नहीं।"

"यहाँ से कुछ मील की दूरी पर लोनावाले की पहाड़ियों के पीछे जो झील है, जहाँ दूर-दूर तक कोई घर नहीं है, और कोई सड़क भी नहीं है, तुमने उसे तो देखा होगा ?"

"नहीं।"

ऐलसा चलते-चलते रुक गई। उसने अपनी छड़ी जोर से धरती पर गाड़ दी। इसहाक़ की ओर कुछ क्षण बड़े अचरज से देखती रही। फिर बोली—

"अच्छा तुम्हारे होटल से सौ फुट परे जो छोटी-सी झील है, जहाँ टाटा बिजली कम्पनी का एक छोटा-सा

कारखाना भी है जो यहाँ से पेड़ों के कारण दिखाई नहीं देता, तुमने उसे तो देखा होगा ?"

"नहीं ।"

"और उससे कुछ फुट और ऊपर जा एक सुन्दर पहाड़ी चश्मा है ?"

इसहाक़ ने उसकी बात काट के कहा—"देखो तुम समझती हो कि मैं नहीं समझता हूँ कि तुम मुझे क्या समझाना चाहती हो । जो तुम कह रही हो, वह बिल्कुल ठीक है । मैं इन स्थानों में से कहीं भी नहीं गया । मैं यहाँ कई बार आया, लेकिन सदा दोस्तों के साथ आया । हम लोग बन्द कमरों में बैठे शराब पीते रहे, ऐश करते रहे और रमी खेलते रहे । शाम को बहुत हुआ तो उठ कर बाजार में चहलक़दमी कर आए और लौट कर फिर शराब पीने लगे । खंडाले में ज़्यादातर हिन्दुस्तानी यही करते हैं ।"

ऐलसा बोली—"पहाड़ी स्थानों के लिए तुम लोगों का दृष्टिकोण बहुत-ही अजीब है । मैं तो सोच नहीं सकती कि आस-पास जब इतना सौंदर्य बिखरा पड़ा हो तो आदमी अपने को एक कमरे में बन्द करके शराब कैसे पी सकता है ?"

इसहाक़ चुप हो गया और आगे चलने लगा। रोज़ होटल से कुछ सौ फ़ीट ऊपर जाकर उन्होंने वह छोटी सी झील देखी, जिसका पानी रोक कर बाँध बनाया गया था। अभी सूरज निकला न था, इसलिए झील का पानी गहरा हरा दिखाई देता था। तीन ओर पेड़ों का घनेरा साया था, चौथी ओर बांध था।

इसहाक़ ने कहा—"यहाँ पर देखने को है क्या ?"

ऐलसा ने मान लिया और चुपचाप आगे चलने लगी। कुछ सौ फ़ीट और ऊपर जाकर वे दोनों एक पहाड़ी झरने के किनारे पहुँच गए, जो उनके रास्ते में पड़ता था। झरने पर जंगली अंजीर की टहनियाँ साया किए हुए थीं। झरने के आस-पास दूर-दूर तक फूलों के तख़्ते खिले हुए थे।

ऐलसा की आँखें खुशी से नाचने लगीं। उसने अपने माथे और गालों से पसीना पोंछा और फिर इसहाक़ की ओर बड़े विजयी-भाव से देखने लगी, मानो कह रही हो—"देखो, अगर मेरे साथ न आते तो ऐसे सौन्दर्य को न देख पाते।"

इसहाक़ ने इधर-उधर देखकर नथने फुलाये और बोला—"उँह, यहाँ भी क्या है ? घाटी की ज़मीन में कुछ

छेदों से पानी ज़ोर मार कर बाहर निकल आया है और बह निकला है। आस-पास कुछ झाड़ियों पर फूल हैं। बस, और क्या है ?"

ऐलसा का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसका मुँह कुछ कहने के लिये खुला। लेकिन इतने में अंजीर के पेड़ के पीछे से खटका हुआ और किसी के घास पर दौड़ने की आवाज़ आई। इसहाक़ और ऐलसा दोनों चौकन्ने हो गये। दिन दहाड़े तो इन पहाड़ियों पर कोई जंगली जानवर आने का साहस नहीं करता। फिर यह कौन जानवर था। इसहाक़ और ऐलसा ने सतर्क होकर, झरने के ऊपर के टीले पर जा कर देखना चाहा।

टीले पर दौड़ते हुए दो जानवर चले जा रहे थे— एक पुरुष, एक स्त्री। बहुत दुबले-पतले और काले और लगभग नंगे। वह टीले के ऊपर दौड़ते-दौड़ते खड़े हो गए—इसहाक़ और ऐलसा से काफी दूर, और मुड़कर देखने लगे, सहमे और डरे हुए। एकाएक उन दो जंगली जानवरों के पीछे से सूर्य निकल आया।

इसहाक़ ने इशारे से उन्हें अपने पास बुलाया, क्योंकि वह देख रहा था कि जहां से वे लोग भागे थे वहाँ ये लोग एक गढ़ा खोद रहे थे और गढ़े में से एक जड़, बहुत भारी और मोटी नजर आ रही थी। इसहाक़

ने झुक कर जड़ को चाकू से काटा और उसे एक जगह से पकड़ कर जो घुमाया तो जड़ पर से एक पतला-सा खोल, प्याज के छिलके की तरह से उतर आया, और भीतर से जड़ बहुत सफ़ेद और सुथरी निकल आई, जिसमें कहीं-कहीं पर गुलाबी रंग की हल्की-सी झलक थी।

"यह क्या है ?" ऐलसा ने जड़ की ओर संकेत करके कहा।

"मुझे खुद मालूम नहीं"—इसहाक़ ने जवाब दिया, और उसने फिर उन लगभग नंगे जानवर नुमा इन्सानों को बुलाया, जो ऊपर टीले के किनारे आबनूस के दो काले बुतों की तरह खड़े थे। लेकिन वे निकट न आए। उनमें से जो स्त्री थी वह फिर भागने लगी, लेकिन पुरुष ने उसे हाथ से पकड़ लिया।

तब इसहाक़ ने जोर से चिल्लाकर मराठी भाषा में उनसे कुछ कहा।

इस पर वे दोनों धीरे-धीरे उसके पास आ गये। स्त्री भी उतनी दुबली-पतली और काली थी, जितना कि पुरुष। दोनों के शरीर नंगे थे। शरीर पर कहीं भी माँस न था। स्त्री की छातियाँ सूखी, काली और लटकी हुई थीं।

वह केवल इन्हीं चिन्हों के कारण पुरुष से भिन्न दिखाई दे रही थी—नहीं तो उसके और पुरुष के कूल्हों तक में कोई अन्तर न था।

पुरुष ने कमर के चारों ओर एक धागा बाँध रखा था जिसमें एक चार गिरह कपड़े को बाँध कर—और इसी तरह स्त्री ने भी—अपनी नग्नता ढाँपने का प्रयास किया था।

थोड़ी देर तक इसहाक़ उन दोनों से बात करता रहा। उन दोनों ने कई बार सिर हिलाया—कभी इन्कार में, कभी इक़रार में। एक-दो बार छोटे-छोटे वाक्यों में उत्तर भी दिया। इसके पश्चात् इसहाक़ ने धरती में खुदी हुई जड़ की ओर संकेत करके कुछ कहा और फिर ऐलसा से कहने लगा—"आओ, अब आगे चलें।"

थोड़ी दूर आगे जाकर ऐलसा ने उससे पूछा—

"कौन थे ये लोग ?"

"मेरे दूर के रिश्तेदार थे।" इसहाक़ ने जवाब दिया।

ऐलसा जोर से चिल्लाई—"तुम्हारे ?"

"हाँ !"—इसहाक़ ने जवाब दिया—"मेरा और इन का रिश्ता आठ नौ हज़ार साल पहले का है।"

ऐलसा समझ गई। बोली—"तब तो मेरे भी रिश्तेदार थे वे।"

"हाँ" इसहाक़ बोला—"मगर हम में से किसी ने भी उन से रिश्तेदारों जैसा सलूक नहीं किया। तुमने हमसे नहीं किया, हमने इनसे नहीं किया।"

ऐलसा बोली—"बड़े भूखे मालूम होते थे वे ?"

इसहाक़ ने कहा—"हाँ वे पेड़ों की जड़ें खोद कर खा रहे थे। इस जड़ को वह कंदमूल कहते हैं।"

ऐलसा ने नज़र उठा कर दूर आकाश की ओर देखा, क्योंकि धरती पर उन दो वहशी इन्सानों की परछाईं बड़ी कष्टप्रद और निराशाजनक थी। ऊपर नीले आकाश पर एक हवाई जहाज़ उड़ रहा था—पूना से बम्बई की ओर जा रहा था।

"आकाश को देखती हूँ तो बीसवीं सदी मालूम होती है, नीचे धरती को देखती हूँ तो—तो कौनसी सदी मालूम होती है इसहाक़ ?" ऐलसा ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

इसहाक़ ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप चलता रहा। अब वह और ऐलसा टीले के ऊपर पहुँच गए थे, और जहाँ पहले ऐलसा और इसहाक़ खड़े थे,

वहाँ वे दो वहशी इन्सान पहुँच गए थे। थोड़े ही समय में उन्होंने जड़ को खोद-खोद कर बाहर निकाल लिया और अपने नाखूनों से उसके छिलके चीर-चीर कर उसके अन्दर का गूदा इस प्रकार भंभोड़-भंभोड़ कर खाने लगे कि कभी-कभी पुरुष और स्त्री में थोड़ी-सी छीना-झपटी भी हो जाती थी। ऐसी भयंकर भूख थी उन दोनों की आँखों में।

"देखो-देखो"—ऐलसा ने घृणा और दया के मिश्रित स्वर में कहा।

"मैं नहीं देख सकता, मैं नहीं देख सकता।"

इसहाक़ वहाँ से भाग खड़ा हुआ, और फिर एक झाड़ी के पीछे छुप कर मितली करने लगा।

ऐलसा ने उसे आकर संभाला।

ड्यूक्स नोज़ की चोटी पर बैठे-बैठे वे देर तक पूर्वी घाट की पर्वत-मालाओं को देखते रहे। उनकी निगाहें ढलवानों से फिसलती मैदानों पर आ जातीं।

वहाँ से आगे जाकर एक जंगल पर दृष्टि की सीमा समाप्त हो जाती थी, जिसके पार समुद्र चमक रहा था और समुद्र में एक लाइटहाउस खड़ा था।

ऐलसा ने अपनी दूरबीन से देखा, फिर इसहाक़ को दिखाया।

"अरे यह तो बम्बई के पास ही का एक लाइट-हाउस है।" इसहाक़ खुशी से चिल्लाया।

"हाँ," ऐलसा ने धीरे से कहा—"बम्बई के पास का, जहाँ मेरे पति रहते हैं।" ऐलसा के स्वर में एक गहरी आत्मसन्तुष्टि थी।

ऐलसा का यह स्वर एक बरछी की तरह इसहाक़ के दिल में चुभ गया।

"यह बम्बई है—जहाँ मेरी जमीला रहती है। मगर मेरी किस तरह ? वह तो—।"

और उस का शरीर सिर से पाँव तक काँपने लगा। उसकी आँखें भर आईं।

ऐलसा ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—"तुम फिर प्रेम करोगे ?"

"हरगिज़ नहीं, कभी नहीं ! दुनियाँ में मुहब्बत सिर्फ़ एक बार होती है।" इसहाक़ ने बड़े जोश से कहा।

"एक बार भी होती है।" ऐलसा ने बड़ी गंभीरता से जवाब दिया, "और कई बार भी होती है। और हर बार यह मुहब्बत पहली बार की तरह सच्ची, पवित्र और गहरी होती है। यह मुहब्बत पहली मुहब्बत से बिल्कुल अलग, बिल्कुल नई, मगर उसी की तरह बिल्कुल सच्ची और गहरे लगाव के साथ होती है। यह मैं तुम से अपने अनुभव के आधार पर कह रही हूँ। यद्यपि लोग धर्म के डर से, समाज के डर से, संस्कार के डर से इसका इक़रार नहीं करते, मगर है यह बात बिल्कुल सच। और फिर कभी इन मुहब्बतों के बीच ऐसे बंजर, वीरान महीने और साल आते हैं, जब मन की घाटियों में कुछ नहीं उगता। जब हर झरने का पानी सूख जाता है और हर डाल विधवा हो जाती है। जब नज़र एक हरे पत्ते के लिये और कान एक सुनहरे गीत के लिये तरसते रह जाते हैं। और मनुष्य उन्हें देख-देख कर सोचता है कि अब कुछ न होगा। मगर फिर बहार आती है, फिर गीत फूटते हैं, फिर चश्मे उबलते हैं और नज़र-से-नज़र तक हरे पत्ते फैलते-ही-फैलते चले जाते हैं। ज़रा सोचो तो इसहाक़! अगर इस दुनिया में बहार एक ही बार आती, अगर टहनी

फिर कभी दुल्हिन न बनती, अगर गहरे घाव फिर कभी न भरते तो जीना कितना मुश्किल होता ?"

"मैं सब समझता हूँ, मगर मैं क्या करूँ। मैं शायद अपनी मर्ज़ी का मालिक नहीं रहा। कोई मुझ से बार-बार कहता है 'उठ अब तेरे लिये सब कुछ ख़त्म हो चुका है। उठ और इस चोटी से छलाँग लगा दे।' अभी-अभी तुम्हारे करीब बैठा हुआ मैं सोच रहा था कि यहाँ से सिर्फ दस कदम पर मौत है—मौत, जिसे लोग इतनी दूर समझते हैं। असल में मौत कितनी पास, कितनी आसान है। इस चोटी पर कहीं भी, किसी तरफ़ भी मैं दस कदम आँखें बन्द करके चलूँ, मुझे मौत आ जाएगी। नवें क़दम पर चोटी ख़त्म हो जायेगी, दसवें क़दम पर मौत।"

ऐलसा घबरा कर बोली—"तुम निरे पागल हो। आओ वापस चलें। मैं तुम्हें यूँही पहाड़ की चोटी पर लाई।"

इसहाक़ ने कहा—"नहीं, नहीं, अभी दो दिन तक तो कोई ख़तरा नहीं है। मैंने अपने आपसे छः दिन तक के लिये न मरने का वायदा किया था—अभी दो दिन बाक़ी हैं।"

ऐलसा और वह दोनों चुपचाप चोटी से नीचे उतरने लगे।

ऐलसा का छरहरा शरीर देखकर इसहाक़ को पूर्ण विश्वास न हो सका कि वह उम्र में उसके बराबर है। जब ऐलसा ने उसे अपनी उम्र बताई तो वह अचम्भे में पड़ गया। ऐलसा रोज़ होटल में न ठहरती थी, वह बाज़ार के निकट होटल सैन्ट्रल में ठहरी थी। ड्यूक्सनोज से वापिस आकर वह लंच खाने के लिये अपने होटल चली गई। इसहाक़ ने उसे रोकना चाहा, लेकिन वह न रुकी। कहने लगी—

"लंच के बाद मैं अपने पति को ख़त लिखूँगी— उसे अपने आने की तारीख़ और गाड़ी के समय की सूचना दूँगी। इसके बाद ज़रा-सा सोऊँगी। फिर शाम को नदी के किनारे-किनारे हम घूमने जायेंगे। तुम्हारी यह फलालैन की पतलून नहीं चलेगी, क्योंकि जगह-जगह नदी के पानी में से गुजरना पड़ेगा। नीकर पहन कर आना और पाँच बजे होटल सैन्ट्रल में पहुँच जाना।"

ऐलसा के चले जाने के बाद वह फौरन डाइनिंग हॉल में खाना खाने चला गया, क्योंकि लंच का समय ख़त्म हो रहा था। हॉल में इस समय कोई न था, केवल एक मेज़ पर एक चितकबरे से मुँह वाला, लिजलिजे गालों और ढीले-ढाले हाथों वाला व्यक्ति खाना खा रहा था। उसके सिर पर एक मारवाड़ी ढंग की पगड़ी थी और वह अपने हाथ में एक बहुत बड़ी अँगूठी पहने हुए था। जिसका सफेद नगीना अगर सचमुच हीरे का था, तो पचास हज़ार से कम का न होगा।

इसहाक़ ने अपनी मेज़ पर बैठ कर लंच का आर्डर दे दिया। वह देख रहा था कि चितकबरा उसकी ओर देख रहा है; शायद बात करना चाहता है। मगर यही सोच कर इसहाक़ बात न करना चाहता था कि किसी मेंढक जैसे इन्सान से बात क्योंकर की जा सकेगी।

"ऐ मिस्टर" चितकबरे ने बड़े गर्वपूर्ण स्वर से उसे बुलाया।

"क्या है ?"—इसहाक़ ने उससे दुगने गर्वपूर्ण स्वर में जवाब दिया।

"यह पाकिस्तान वाला हमको मुक्का दिखाता है।" चितकबरे ने मेज़ पर से अख़बार उठाकर हाथ में झुलाते हुए कहा।

"तो मैं क्या करूँ ?" इसहाक़ ने पूछा।

"अमारे देशवाला इसको क्यों मुक्का नहीं दिखाता है ?" चितकबरा बोला।

"तो मैं क्या करूँ ?" इसहाक़ ने फिर पूछा।

"तुम साला राइटर क्या करेगा—" चितकबरा बिना संकोच के बोला—"लेकिन हम पूछता है अमारे देश की सरकार को क्या हुआ है ? क्यों उसको मुक्का नहीं दिखाता है साला !"

"मुक्केबाजी से लड़ाई शुरू हो जाएगी चितकबरे।"

"हो जाए—अपने को यही माँगता है। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में लड़ाई हो तो साला कुछ दिल ठंडा हो, साला रोज़ अख़बार पढ़-पढ़ कर अमारा ख़ून गर्म होता है। पर अपना नाम चितकबरा नहीं है—तुम को किसी ने ग़लत बताया। अमारा नाम रणछोड़लाल भेसिरया है।"

"तुम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जंग क्यों चाहते हो ?" इसहाक ने पूछा—"क्या तुम्हारे वहाँ कोई रिश्ते दार मारे गए थे ?"

"नहीं ।"

"पाकिस्तान से तुम्हें अपनी जायदाद छोड़ कर, भागना पड़ा ?"

"नहीं ।"

"पाकिस्तान में तुम किसी को जानते हो, जो तुम्हारा दुश्मन हो ?"

"नहीं, मैं तो जयपुर का हूँ"—चितकबरा बोला—"पाकिस्तान में न कोई मेरी जायदाद है न रिश्तेदारी, न मेरी कोई दुश्मनाई है ।"

"फिर तुम क्यों जंग चाहते हो ?"

चितकबरा बोला—"तुम साला राइटर लोग हमारा धन्धा क्या जाने । जंग चलती रहे, ज़रा मामला गर्म हो, ख़ून ख़राबा होता रहे, तो अमारा धन्धा ख़ूब चलता है ।"

"क्या धन्धा करते हो तुम ?"

"स्टाक एक्सचेंज का ।"

"समझ गया ।"

भैसरिया अपनी मेज़ पर मुक्का मार के बोला—"तुम क्या समझेगा साला राइटर । यहाँ बड़ा-बड़ा आदमी स्टाक एक्सचेंज का धन्धा नहीं समझ सकता । हमको

बीस साल हो गया यह धन्धा करते हुए, हमारी समझ में नहीं आया—तुम क्या समझेगा ? बस अपन तो यह जानता है, ज़रा जंग चलती रहे, ज़रा गर्मा-गर्मी रहे तो अपना मामला स्टाक एक्सचेंज पर खरा रहता है। साला जब से कोरिया में लड़ाई बन्द हुआ है अपने धन्धे का कुछ पता ही नहीं चलता।"

"तो इसलिये तुम चाहते हो कि अगर और कहीं न हो तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान ही में जंग हो जाए। जंग में शायद तुम पहले दिन ही भरती हो जाओगे ?"

चितकबरा हँसा, बोला—"तुम साला राइटर लोग हम से मजाक करता है। अरे हम साठ बरस का बूढ़ा है।"

"तो तुम्हारा बेटा तो होगा कोई ?"

"हमारा तीन बेटा है, मगर तीनों हमारे साथ काम करता है। लड़ना अमारा धन्धा नहीं है, अम सिपाही नहीं है।"

"हैरत की बात है"—इसहाक़ ने कहा—"जो लोग जंग की बात इस क़दर जोश से करते हैं, वे ख़ुद कभी नहीं लड़ते, ख़ुद कभी भरती नहीं होते कभी ख़न्दक

नहीं खोदते, कभी गोली नहीं खाते। और जब जंग ख़त्म हो जाती है तो उन्हें पहले से बड़ा ठेका, पहले से बड़ा ओहदा, पहले से बड़ा मंत्रीपद सौंप दिया जाता है—क्योंकि इस दुनिया में सिर्फ़ क़ब्रों की ही इज्ज़त है, इन्सानों की नहीं? क्यों? क्यों? मुझे बताओ ना चितकबरे।"

भेसरिया ने बात का रुख़ पलटने के लिये कहा—"सूप ठंडा हो रहा है और फिर मैं तुम को अपना नाम बोल चुका हूँ—मेरा नाम भेसरिया है भेसरिया, चितबकरा नहीं है।"

"चितबकरा नहीं, चितकबरा कहो"—इसहाक़ उसे समझाने लगा।

"चितबकरा क्या होता है?"

"बहुत अच्छा नाम है सेठ, ख़ास कर तुम्हारे लिये तो बिल्कुल जँचता हुआ, बहुत ही प्यारा और उम्दा नाम है। अपनी बीवी से कहो, वह तुम्हें इसी नाम से पुकारा करे।"

"मेरी घरवाली मर चुकी है?"—भेसरिया ने बहुत गंभीर हो कर कहा।

"तुमने कभी मुहब्बत की है?" इसहाक़ ने पूछा—चितकबरा सूप पीते-पीते हंसा। उसकी नेवले जैसी

मूंछ फड़कने लगीं। हँसी के साथ सूप का फ़व्वारा उसके कपड़ों पर बिखर गया।

चितकबरे ने बड़ी कठिनाई से कहा—"अमारे देश में मुहब्बत करने का रिवाज नहीं है, इस को बहुत बुरा समझा जाता है। तुम साला राइटर लोग जब मिलेंगा, मुहब्वत की बात करेगा। अम को होटल के प्रोपराइटर ने बताया, अधर अमारे होटल में एक राइटर तीन-चार दिन से आकर ठहरा है। अमने कहा, अम एक दिन तुम से बात करेगा। तुम कौन से अख़बार में काम करता है?"

"अख़बार नहीं, किताब लिखता है—बुक-बुक।"

"कौन सा बुक—रेस बुक?"

"रेस का बुक नहीं—नाविल, उपन्यास।"

"नाविल अमने कभी नहीं पढ़ा।"

"तुमने कभी नाविल नहीं पढ़ा, कभी मुहब्बत नहीं की, और कभी पौ फटते भी नहीं देखी?"

"वह क्या होती है?"

"जाने दो सेठ, लंच खाओ। तुम नहीं समझोगे।" इसहाक़ ने बड़ी निराशा से कहा।

थोड़ी देर तक ख़ामोशी रही। तीसरे कोर्स पर चितकबरे ने पूछा—"तुम कौनसी ज़बान में लिखते हो ?"

"उर्दू में।"

"तो तुम मुसलमान हो?" चितकबरे ने एक कष्टमय आश्चर्य से पूछा।

"हाँ।"

"जभी ?"

"जभी क्या ?" इसहाक़ ने चौंक कर क्रोध से कहा।

"कुछ नहीं।" चितकबरा धीरे से बोला।

"कुछ तो है, कुछ तो कहो। बताओ, साफ़-साफ़ बताओ क्या बात है ?" इसहाक़ ने पूछा।

"साफ़-साफ़ कह दूँ ?" चितकबरा बोला—"तुम बुरा तो नहीं मानोगे ?"

"नहीं"—इसहाक़ ने बड़ी गंभीरता से सिर हिला कर कहा। मगर उसका ख़ून अन्दर से खौलने लगा।

"बात यह है कि तुम सब मुसलमान ग़द्दार होते हो।"

थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा रहा, ऐसा कष्ट-दायक सन्नाटा कि इसहाक़ को अपनी सांस तक गले में रुकती हुई महसूस हुई।

थोड़ी देर के बाद इसहाक़ ने कहा—"मैं दूसरे मुसलमानों की बात नहीं करता, मैं सिर्फ अपनी बात करता हूँ। तुम ठीक कहते हो कि मैं इसहाक़ ग़द्दार हूँ बिल्कुल। सौ फी सदी ग़द्दार हूँ—तुम्हारा और तुम्हारे ऐसे उन तमाम लोगों का, जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जंग चाहते हैं और मैं तुम को यह भी बता दूँ सेठ कि मैं सिर्फ़ तुम्हारा और तुम्हारे ऐसे लोगों का ही ग़द्दार नहीं हूँ। मैं तो हर उस आदमी और उस विचार और हर उस नीति का ग़द्दार हूँ जो न सिर्फ़ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, बल्कि किन्हीं भी दो देशों के बीच जंग चाहता है। मैं तो ग़द्दार हूँ नफ़रत का, जंग का और बरबादी का। मैं वफ़ादार हूँ, बहिनों के सतीत्त्व का और प्रेमियों के प्यार का। और दुश्मन हूँ, बहिनों के वैधव्य का, प्रेम के हत्यारों का, और तुम्हारे ऐसे मुनाफ़ाखोर सौदागरों का, जो स्टाक एक्सचेंज पर गरीब लोगों की कब्रें बेचते फिरते हैं।"

इतना कहकर इसहाक़ ने इतने जोर से अपने तीसरे कोर्स की प्लेट चितकबरे के मुँह पर खींच कर मारी

कि वह सेठ के मुँह से लगकर और वहाँ से पलट कर धरती पर जा गिरी और गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गई। सेठ का मुँह और आंखें, नाक और माथा और गाल सब शोरबे में लिथड़े हुए थे और डबल रोटी के टुकड़े उसकी पगड़ी की तहों से बाहर बड़े हास्य-प्रद ढंग से झांक रहे थे। नौकर लोग आवाज़ सुनकर भागे-भागे अन्दर आये। मगर इसहाक़ उस समय तक हॉल से बाहर चला गया था। मारे क्रोध के उसका सारा शरीर काँप रहा था और उसका जी चाहता था कि वह सेठ के घिघियाते हुए गले को घोंट-घोंट कर मार डाले। ऐसा वहशी-सा वह भीतर से महसूस कर रहा था, उस समय।

थोड़ी देर के बाद मैनेजर और प्रोपराइटर चित-कबरे सेठ को लेकर उसकी काटेज में आये।

मैनेजर बोला—"प्रोपराइटर साहिब आप से कुछ कहना माँगता है।"

इसहाक इस समय लगातार सिग्रेट पिये चला जा रहा था। बोला—"बात करने की क्या जरूरत है। मैं खुद ही आज शाम तक एक कमरा किसी दूसरे होटल में ढूँढ लूँगा और यहाँ से चला जाऊँगा।"

"फिर भी"—मैनेजर ने दोबारा कहा—"प्रोपराइटर साहिब आपसे बात करना चाहता है।"

"क्या ज़रूरत है बात करने की ?" इसहाक़ चिल्लाया "मुझे मालूम हो जाता है जब मैं ग़लती करता हूँ। मैंने सेठ के मुँह पर प्लेट फैंकी, ऐसा करने का मुझे कोई हक़ नहीं था। मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ और मेरा मतलब है भेसिरिया सेठ से मैं माफ़ी माँगता हूँ।"

इसहाक़ ने सेठ के सामने हाथ जोड़ दिए। सेठ हँसने लगा, बहुत ख़ुश हुआ। प्रोपराइटर और वह दोनों इसहाक़ के संकेत से सोफों में धँस गये।

सेठ ने कहा "ग़लती मेरी थी—मैंने ऐसी बातें कह दीं जो सब मुसलमानों को बुरी लगती हैं। अमको क्या मालूम था साला राइटर भी मुसलमान है।"

होटल का प्रोपराइटर एक पारसी था। दुबला-पतला, बड़े-बड़े ख़रगोश से कान, माथा चौड़ाई में घटा हुआ और लम्बाई में जरूरत से ज़्यादा बढ़ा हुआ और बीच में चपटा-चपटा। बहुत ही मैले बदसूरत दाँत—नाक में बात-चीत करता था। ज़बान से सिर्फ़ चखने का काम लेता था। उसकी गोल-गोल कंजी आँखें हर समय चौकन्नी नज़र आतीं और निचले होंट का दाहिना किनारा हर समय, ज़रा-ज़रा-सी देर के बाद आप ही

आप एक ओर को इस तरह खिच जाता जैसे किसी ने गाल के अन्दर एक डोरी से उसे बाँध दिया हो और—उसे बार-बार पतंग की तरह ठुमकी देकर खींचता हो।

"बोलिए हरमज़ जी" मैनेज़र ने प्रोपराइटर से कहा।

हरमज़ जी ने बोलना आरम्भ किया। हर वाक्य के बीच में वह पतंग बार-बार खिचती थी। इसहाक़ को बड़ी दिलचस्प मालूम हुई वह पतंग। वह उसकी बातें सुनते-सुनते यही सोचने लगा—'या रब यह पतंग कब कटेगी ! जाने कैसा माँझा लगाया है इस डोर में किसी ने !'

हरमज़ जी कह रहे थे—"आपन को यहाँ दंगा नहीं मांगता। और तुम इधर दंगा करने आया काहे को ?"

"मैं दंगा करने नहीं आया था, प्रोपराइटर साहिब ! अब आप से क्या अर्ज़ करूँ।"

"अर्ज़ी की बात तो अदालत में होगी—पहले तुम बताओ, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो तुमने हमारे होटल को अखाड़ा बनाया। इधर साला पहले ही कुछ मुनाफ़ा नहीं होता, जब से अंग्रेज़ गया खंडाले से। ऊपर से तुमने आके हमारे नौकरों को वर्गलाया।

"मैंने ?—तुम्हारे ?—नौकरों को वर्गलाया ? क्या बात कर रहे हो ?"—इसहाक़ की हैरानी बढ़ती जा रही थी।

"तुम ध्यान से सुनो न—अम तुमको सब बताता है। परसों उधर बज़ार में जो फौजी पेंशनर बैठता है न———वह इधर एक चौपड़ी लेकर आया था।"

"चौपड़ी क्या ?" इसहाक़ ने पूछा।

"कागद का एक टुकड़ा समझ लो"—मैनेजर ने इसहाक़ को बताया।

"वह इधर कागद लेकर आया था—और हमारे *नौकरों से, सब से, सही (हस्ताक्षर) करा कर ले गया।* चौपड़ी में लिखा था—'कभी भी, किधर भी, किसी तरफ़ से भी साला जंग नही मांगता ए'। अमने अपने नौकरों को भी डाँटा, तुमने क्यों सही किया। बोले ऐसे ही सही कर दिया। हमने सब को माफ़ कर दिया। बोला फिर ऐसा दस्तखत नहीं करना मांगता। नौकर लोग ने हाथ लगाया कानो को। पर अपनी छोकरी हैं न वासन्ती जो कपड़े धोती है, उसने कानों को हाथ नहीं लगाया। बोली—"अम तो फिर कोई ऐसा कागद ले कर आएँगा तो फिर अँगूठा लगाएँगा। अम ने पूछा

क्यों ? बोली' क्योंकि अम औरत है !' साला कोई जवाब है। अम ने उसको निकाल कर बाहर किया।"

"तुमने उसे क्यों निकाल दिया ?" इसहाक़ ने पूछा।

"आपनको इधर कोई पालीटिक्स का लफड़ा नहीं मांगता है। आज नौकर लोग बोलेंगे, जंग नहीं चाहिए; कल बोलेंगे, अखा दिन काम नहीं चाहिए। अब होटल में अखा दिन काम है, सुबहा से शाम करना होगा। अब क्या करेंगा अम ग्रेट होटल वाला, अगर नौकर लोग का दिमाग़ खराब होगा तो, अभी खंडाले में होटल वालों का धन्धा अच्छा नहीं है। आमारे का बहुत जूना होटल है, बहुत जूना होटल है। जब के अंग्रेज़ इधर आया, पूना में छावनी डाला, तब से इधर हमारा होटल चलता है। मैसोपोटेमिया में जंग हुआ, आफ़गानिस्तान में जंग हुआ, किधर-किधर जंग हुआ, सब जख्मी सिपाही, अंग्रेज़ सिपाही इधर रखा जाता था। इधर आमारे होटल में दो-दो बैंड था, स्वीमिंग पूल था, डान्स हाल था, बार था। अब सब बन्द हो गया। अम को लाखों की आमदन थी, अब होटल की मरम्मत नहीं करा सकता। अम प्रोपराइटर लोग कल तक हम समझता था कि यह कागद का पुर्ज़ा, चौपड़ी पर मर्डेकर ने दसखत यूँही कराया होगा। अम ने कल

पुलिस इन्सपैक्टर को बुलाकर मर्देकर को अन्दर करवा दिया। पर आज मालूम हुआ यह तो बड़ी गहरी चाल है। उधर बम्बई से तुम आया है, अमारे होटल का बिजनिस खराब करने को। असल दंगा करने वाला तुम है।"

इसहाक़ ने कहा—"मुझे कुछ मालूम नहीं, मिस्टर। मैं बिल्कुल बेक़सूर हूँ। यह बातें मैं अभी तुम्हारे मुँह से सुन रहा हूँ, न मैं किसी मर्देकर को जानूँ, न किसी वासन्ती को। सेठ ने ऐसी उल्टी सीधी बातें कहीं कि मुझे भी गुस्सा आ गया वरना मैं यहाँ जंग के बारे में कुछ कहने सुनने नहीं आया था। मैं तो किसी—किसी और ही।"

"क्या ?—क्या ? किस काम से तुम यहाँ आए थे ?" प्रोपराइटर ने व्यँग से पूछा !

इसहाक़ ने गुस्से में भड़क कर कहा—"मैं यहाँ जहन्नुम में जाने के लिये आया था, तुम्हें इससे क्या ?"

हरमजा जी ने सोफ़े से उठते हुए कहा—"मैंने पुलिस-इन्सपैक्टर को रिपोर्ट कर दी है। पुलिस अभी आती होगी। वह तुम्हारे ऐसे बदमाशों को ठीक जहन्नुम का रास्ता दिखाएगी।"

खंडाले का जेलख़ाना (बन्दीगृह) बाज़ार और रेलवेस्टेशन के मध्य में एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। सब-इन्सपैक्टर सामन्त, इसहाक़ को जेलखाने में डालकर बहुत प्रसन्न हुआ। मारे खुशी के उसके हाथ पाँव फूल गए। इस खुशी में उसने इसहाक़ को चाय भी पिलाई, डबलरोटी खिलाई और लगभग उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जैसे वह बन्दीगृह में न आया हो, उसके घर अतिथि बनकर आया हो। बाद में जब सब कुछ हो चुका और रजिस्टर में नाम भी लिखा गया और रोज़नामचे में रिपोर्ट भी लिखी गई, तो सब-इन्सपैक्टर सामन्त ने बड़े इतमीनान से इसहाक़ के पास बैठकर उसका ब्योरा भी दिया। सामन्त एक अधेड़ उम्र का आदमी था। मंझोला क़द, मगर मोटापे के कारण और छोटा दिखाई देने लगा था। उसके फूले-फूले गालों पर उसकी झुकी-झुकी मूछें उसके चेहरे को एक

अजीब तरह की स्नेहमयता प्रदान करती थीं। उसके नौ बच्चे थे और तीन बेकार रिश्तेदार थे जो उसके घर पर स्थाई रूप से पड़े रहते थे।

"ज़िन्दा रहना बड़ा मुश्किल है भाई।" सामन्त इसहाक़ को समझाने लगा—"घर हो या पुलिस स्टेशन हो, बड़ी मुसीबत है हर जगह। अब देखो यहाँ खंडाले में कुछ होता ही नहीं, ऐसा सोया हुआ क़स्बा है यहाँ कुछ होता ही नहीं—कोई चोरी नहीं करता, क़त्ल नहीं करता, अपहरण तक का केस नहीं आता। पहले जब खंडाले में जख्मी गोरों के लिये हस्पताल था तो आसपास के इलाक़े से लड़कियों के भागने के और अपहरण के बहुत केस आते थे। अब न जाने दुनिया को क्या हो गया है, हवालात कई-कई महीने खाली पड़ा रहता है। अब सब-इन्सपैक्टर कारगुज़ारी दिखाए तो कैसे? और उसकी तरक्क़ी हो तो कैसे? नौ तो मेरे बच्चे हैं भाई—और मुझे डाल दिया खंडाले में। मैं कैसे गुज़ार करता हूँ मैं ही जानता हूँ। अफ़सर लोग कहते है कि पुलिस इन्सपैक्टर को सक्रीय और सरगर्म होना चाहिए। अब मैं क्या सरगर्मी दिखाऊँ। लोग इतने ठंडे हो चुके है कि कोई जुर्म ही नहीं करते।

अब मैं मुजरिम उगा तो नहीं सकता ज़मीन से। क्या करूँ बड़ी मुसीबत है। वैसे यह हवालात बहुत अच्छी जगह पर है। इस खिड़की से तुम रेलवे स्टेशन का नजारा देख सकते हो और इस दूसरी खिड़की से तुम्हारी निगाह होटल रोज़ तक जा सकती है। इस इलाके में यह सबसे बढ़िया हवालात है। लोनावाला पुलिस स्टेशन के पास भी इतनी अच्छी हवालात नहीं है। लोनावाला का हवालात तुमने देखा है ?"

इसहाक़ ने मुस्करा कर कहा—"ज़िन्दगी में पहली हवालात देख रहा हूँ।"

सामन्त ने बड़े स्नेह से अपना हाथ उसके कन्धे पर रख कर कहा—"कोई बात नहीं, धीरे-धीरे और भी देख लोगे और आदत भी हो जायेगी। पहली बार सचमुच बड़ा अजीब-सा लगता है। यहाँ इधर खंडाले में तुम्हारा कोई जमानती हो सकता है ?"

इसहाक़ ने रुक कर कहा—"यहाँ तो—मैं किसी को नहीं जानता।"

"अच्छा-अच्छा, बहुत अच्छा।" सामन्त के चेहरे पर हर्ष की लाली दौड़ गई। फिर उसने कहा—"और बम्बई में ?"

"बम्बई में भी मेरा कोई नहीं है।" इसहाक़ ने ज़रा चिन्तित होकर कहा।"

"बहुत अच्छा, बहुत ही अच्छा है।" सामन्त अति-प्रसन्न होकर बोला—"तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम कुछ दिन हमारे मेहमान रहोगे। भई यह तो बहुत अच्छा है। मैं तो पुलिस स्टेशन में अकेला पड़े-पड़े सड़ने लगा था। हाँ, ज़रा इस हवालात में मच्छर बहुत हो जाते हैं। मैं तुम्हें एक मोटा कम्बल भेज दूँगा, रात को। उसे ओढ़ कर सो जाना, मच्छर बिल्कुल नही काटेंगे।"

"ए अब्दुलमजीद"—सामन्त ने एक सिपाही को आवाज़ देकर कहा।

"साहिब के लिये एक चाय और लेकर आओ।" इतना कह कर सामन्त वहाँ से चला गया। और अब्दुलमजीद एक चाय की प्याली इसहाक़ को दे गया।

चाय पीकर इसहाक़ ने हवालात के चारों ओर नज़र डाली। हवालात में उस समय केवल एक और व्यक्ति था और वह बहुत अजीब व्यक्ति था। जब सामन्त उससे बातचीत कर रहा था तब इसहाक़ रह-रह कर उस अजीब आदमी की ओर देख लेता था। लेकिन जिस ढंग से सामन्त ने उसका कोई नोटिस नहीं लिया था, इसे देखते हुए इसहाक़ को साहस न हुआ कि

सामन्त के होते हुए उस व्यक्ति से बात कर सके या उसके सम्बन्ध में पूछ ही ले। हाँ, अब सामन्त और सिपाही के जाने के बाद वह उस व्यक्ति की ओर मुड़ा।

सब से पहली बात तो यह थी, कि उस व्यक्ति का एक कान न था। वह एक भरे हुए घाव का बड़ा सा चिन्ह था, जो दायें गाल तक आता था। फिर उस व्यक्ति का एक बाज़ू भी न था—आधा बाज़ू कटा हुआ था, और उसके साथ एक नक़ली हुक नुमा बाज़ू लगा हुआ था। फिर उस व्यक्ति की एक टाँग भी न थी। एक बैसाखी उसके दूसरे बाज़ू की बग़ल से नीचे कदमों तक लटक रही थी। दायाँ बाज़ू और बाईं टाँग के कट जाने से उसका शरीर अजीब बेडौल और बेढ़ंगा सा हो गया था। मगर उसकी आखें बहुत बड़ी, बहुत काली और बहुत चमकीली थीं और एक अद्‌भुत अल्हाद से ओत-प्रोत थीं। यद्यपि उसका रंग गहरा सांवला था, लेकिन जब कभी वह मुस्कराता था तो उसके होंटो में उसके सुन्दर दांत मोतियों की लड़ियों की भांति चमक उठते थे। उसकी मुस्कान बड़ी प्यारी थी और मुस्कान का सम्बन्ध सदैव आत्मा से होता है। इसहाक़ कई क्षण उसकी ओर घूर कर देखता रहा और उसे इस अद्‌भुत व्यक्ति में एक अनोखा आकर्षण दिखाई दिया।

इसहाक़ ने कहा—"इस वक्त हवालात में हम सिर्फ़ दो हैं, क्यों न अपनी जान-पहिचान एक-दूसरे से कर लें। मेरा नाम इसहाक़ है।"

"मैं अनन्त मर्देकर हूँ।"

दोनों ने हाथ मिलाया। अनन्त मर्देकर का हुक और इसहाक़ की पाँचों उंगलियाँ एक अनोखे मिलाप में मिल गईं। एक अजीब तरह की झुरझुरी इसहाक़ के शरीर में दौड़ गई।

अनन्त मर्देकर ने पूछा—"तुम क्या काम करते हो? अगर यह बताओ तो मैं मालूम कर लूंगा कि तुमने क्या अपराध किया होगा?"

इसहाक़ ने मुस्करा कर कहा—"मैं एक लेखक हूँ।"

अनन्त ज़ोर से हँसा और उसकी सुन्दर हँसी ने इसहाक़ के दिल को भी गर्मा दिया। "तो तुमने खूब शराब पी होगी और तुम्हारे पास शराब का परमिट न होगा, और होटल में आकर पुलिस ने तुम्हें क़ैद कर लिया होगा?"

अब इसहाक़ की बारी थी ज़ोर से हंसने की। उसने कहा—"बिल्कुल ग़लत। मुझ पर यह इलज़ाम

है कि मैंने होटल के नौकरों को मालिक के ख़िलाफ़ भड़काया है और शान्ती की अपील पर उनसे दस्तख़त करवाए हैं—हालाँकि मुझे इस पूरी घटना का कोई इल्म नहीं है। मैंने किसी से इसके सम्बन्ध में कुछ कहा ही नहीं। मैं तो यहाँ एक और ही काम से आया था, मगर इन लोगों ने मुझे हवालात में डाल दिया।"

"तो प्रोपराइटर को सन्देह कैसे हुआ ?"

"अमन और जंग पर वहीं होटल में मेरी एक अहमक़ सेठ से बहस शुरू हो गई और बहस की गर्मा-गर्मी में मैंने खाने की प्लेट खींच कर उसके मुँह पर दे मारी।"

मर्देकर उसके निकट आगया—"तुम लड़ाई के हक़ में रहे होगे, तभी तो इस क़दर तेज़ी में आ गए।"

"नहीं"—इसहाक़ ने मुस्कराते हुए कहा—"मैं अमन के हक़ में बोल रहा था, और देखो तो मैंने क्या किया ? वाक़ई मुझे बड़ा अफ़सोस है।"

"नहीं, तुम ने अच्छा किया"—मर्देकर उसके और निकट हो कर बोला और उसका हुक़ हवा में निर्णायक-सा लहराया। फिर उसने अपना लोहे का हुक़ इसहाक़ के कन्धे पर रखकर कहा—

"मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने शान्ति के कागज पर खंडाले के सारे होटलों के नौकरों से हस्ताक्षर कराए थे। होटल वाले मुझ से बहुत नाराज हैं।"

"मैं सब सुन चुका हूँ। सेठ हरमज़ जी मुझे सब बता चुके हैं"—इसहाक़ ने कहा—"उन्होंने ही मुझे यहाँ हवालात में पहुँचाया है, भेसरिया सेठ की शिकायत पर।"

इसहाक़ कुछ देर चुप रहा। फिर बोला—"लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई, तुम्हें अमन और जंग की बहस से क्या वास्ता? तुम इस क़दर टूटे-फूटे आदमी हो—आधे इन्सान दिखाई देते हो। तुम्हारे लिये तो रोज़ाना काम करना और अपनी जिन्दगी की आम ज़रूरतें पूरी करना मुश्किल होता होगा?"

"इस जंग ही ने यह मुश्किल पैदा की है मिस्टर मेरे लिए—दूसरे महायुद्ध में भरती होने से पहले मैं भी तुम्हारी तरह पूरा इन्सान था। यह उस महा-युद्ध ने ही सब कुछ किया है मेरे साथ। मेरा कान खा लिया, बाज़ू खा लिया, टांग खा ली, वह तो भाग्य अच्छा था कि किसी तरह बच गया।"

"अच्छा था या बुरा था?" इसहाक़ ने कहा—"इससे तो यही अच्छा था कि तुम मर जाते।"

मर्देकर ने कहा—"पहले मैं भी तुम्हारी तरह सोचता था। धीरे-धीरे मेरी राय अपने जीवन के सम्बन्ध में बदल गई—और अब देखो तो—अब मैं जीवित भी हूँ और खुश भी हूँ और जीवित रहना भी चाहता हूँ।"

"तुम क्या काम करते हो ?"

"मैं बाज़ार में जूते बनाता हूँ और पुराने जूते भी मरम्मत करता हूँ। मेरा काम बहुत अच्छा होता है, इसलिये मेरे पास ग्राहकों की कोई कमी नहीं है। फिर मैं यहाँ बहुत-से लोगों का सलाहकार हूँ। बाजार के दुकानदार, छोटे-छोटे किसान, नौकरी पेशा लोग अपनी तकलीफें मुझे सुनाने आते हैं, मुझ से सलाह करते हैं। बाज़ार और खंडाले के आस-पास के लोगों के बहुत-से झगड़े मैं अकेला ही चुका देता हूँ, उन्हें पुलिस या अदालत में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। और मैं अनुभव करता हूँ कि मैं एक अच्छा काम कर रहा हूँ। और इस से मेरे शरीर में जीवन-शक्ति का संचार होता है।"

"शायद इसी लिये सब-इन्स्पैक्टर सामन्त तुम से ठीक तरह बात नहीं करता। तुम उसकी रोज़ी पर लात मार रहे हो।"

मर्देकर हँस कर बोला—"चार-चार महीने तक कचहरी में कोई नहीं जाता। और मैं किसी से कोई फ़ीस भी नहीं लेता, अपने जूते गाँठता रहता हूँ और फ़ैसले करता रहता हूँ।"

"तुम पढ़े-लिखे हो ?"

"मैट्रिकुलेट हूँ।"

"मैट्रिकुलेट होकर तुम जूते गाँठते हो, तुम्हें बम्बई में——"

मगर अनन्त मर्देकर ने उसकी बात पूरी न होने दी। बोला—"बम्बई में धनवान् व्यक्तियों के जूते चाटने से खंडाले में ग़रीब आदमियों के जूते बनाना अच्छा काम है। मैं बहुत खुश हूँ।"

"लेकिन तुमने यह तो बताया ही नहीं कि तुम शान्ति और युद्ध की बहस में क्यों पड़े ?"

अनन्त मर्देकर ने क्रोध से अपना हुक़ हवा में लहरा कर कहा—"मैं नहीं पड़ूंगा तो और कौन पड़ेगा ? तुम मेरा हुलिया नहीं देखते हो। जंग ने जो कुछ मुझ से लिया है, क्या मैं उसे दूसरे युवकों से लेने की अनुमति हँसी-खुशी दे दूँगा ? तुम बहुत ग़लत समझते हो मिस्टर ?

ये लोग मेरी लाश को रौंद कर ही खंडाले के किसी युवक को जंग में भेज सकेंगे।"

"ये लोग कौन ?"

"ये होटल वाले, जो अङ्गरेज़ों का ज़माना वापिस आ जाने के स्वप्न देखते हैं। जो कभी कोरिया में, कभी चीन में और अमरीका में, कभी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जंग देखना चाहते हैं। जो जंग चाहते हैं और घायलों के हस्पताल चाहते हैं। चाहे कहीं भी हों।"

इसहाक़ ने कहा—"बुनियादी सवाल जंग का नहीं है, सवाल इन लोगों की रोज़ी का है। इन लोगों के होटल ख़त्म हो रहे हैं—अङ्गरेज़ चले गए, मुनाफ़ा ख़त्म हो गया—अब ये लोग अंग्रेज़ों को वापिस लाने के स्वप्न न देखें, जंग कराने की कोशिश न करें तो क्या करें ?"

"ये बहुत कुछ कर सकते हैं"—मर्देकर ने ज़ोर देकर कहा—"लेकिन ये आराम पसन्द हो गए हैं—और आराम से रुपया कमाना चाहते हैं। मैं भी तो खंडाले का भला चाहता हूँ। मैं भी यहाँ के एक दर्जन होटलों को आबाद देखना चाहता हूँ। लेकिन अब यह काम पुराने ढ़ंग से न होगा। अठारह रुपये रोज़ पर

कमरा लेकर खंडाले का सौंदर्य-पान करने की शक्ति किस में है? इन लोगों को अपने किराये कम करने पड़ेंगे—तीन-तीन कमरों के काटेज की क्या आवश्यकता, हर काटेज में बारह बैड रखो; आठ बैड रखो। हर बैड पर दो रुपया, एक रुपया चार्ज करो। आठ कोर्स का डिनर क्यों देते हो! आठ आने में दाल रोटी दो। देखता हूँ कैसे बम्बई से हर शनिवार को भरी हुई गाड़ियाँ खंडाले में कैसे नहीं आती हैं। खंडाले के सौंदर्य को जन-साधारण तक पहुँचने दो, वे स्वयं उसकी रक्षा करेंगे। लेकिन यह सुस्त, काहिल हरमज़ जी, और नौसरवाँ जी क्या खा कर इस काम को करेंगे। शराब इन की रगों में बहती है। कभी मेहनत नहीं की। आम लोगों से ये डरते हैं। इसलिये बस अंग्रेजों को वापिस लाकर अधिक से अधिक लाभ कमाने के स्वप्न देखा करते हैं।"

जब जेलखाने में शाम हो गई तो सुबह की तरह सफेद और सुता हुआ चेहरा लिए एक सुन्दर छरहरे

शरीर वाली मराठी लड़की अपने हाथों पर एक थाली के ऊपर दूसरी थाली और दूसरी थाली के ऊपर तीसरी थाली औंधी रखे, जेलखाने के दरवाज़े तक आई। अब्दुल हमीद ने जेल का दरवाज़ा खोल दिया। वह लड़की निगाहें नीची किए अन्दर आई। थालियाँ उसने नीची करके लकड़ी के एक बेंच पर रख दीं। फिर उसने झुक कर मर्देकर के चरण छुए और मुड़ कर इसहाक़ को प्रणाम किया। फिर मर्देकर की ओर पलट कर वह धीरे से मराठी में बोली—

"मैं आप दोनों के लिए खाना लाई हूँ।"

"इतनी तकलीफ़ करने की क्या जरूरत थी ?" मर्देकर बोला और फिर इसहाक़ को सम्बोधित करके कहने लगा—

"यह वासन्ती है जो होटल में कपड़े धोती है। इसी को हरमज़ जी ने नौकरी से जबाव दिया है।"

इसहाक़ उस बहादुर लड़की को ग़ौर से देखने लगा, जो अन्त तक यह कह कर डटी रही कि 'मैं शान्ती की अपील पर दस्तखत करूँगी, क्योंकि मैं औरत हूँ।"

वासन्ती बोली—"सेठ ने मुझे फिर नौकर रख लिया है।"

"तूने माफ़ी मांगी होगी ?"—मर्देकर ने अनमने स्वर में कहा।

"नहीं" वासन्ती चिल्ला पड़ी—"होटल के नौकरों और दूसरे होटल के नौकरों ने हड़ताल कर दी और सेठ को तुरन्त अपना हुक्म वापिस लेना पड़ा।"

मर्देकर का चेहरा खिल उठा।

वासन्ती ने बात बदल कर अनुरोध किया—

"खाना तो खा लो, ठण्डा हुआ जा रहा है।"

"और क्या खबरें हैं ?" मर्देकर ने पूछा।

वासन्ती खबरें सुनाने लगी और मर्देकर तथा इसहाक़ खाना खाने लगे।

"होटलों के सब नौकर हड़ताल पर चले गये हैं और आपकी ज़मानत का प्रबन्ध करने के लिए रुपये जमा कर रहे हैं। बाज़ार वाले भी आपकी ज़मानत के लिये रुपया दे रहे हैं और उन्होंने त्रिमूर्ति के मैदान में सभा भी रखी है, जहाँ आपका भाषण होगा।"

"हूँ—यह कठल तो बड़ा अच्छा बना है—मां ने पकाया है या तूने ?"

वासन्ती शरमा कर बोली—"यह मैंने बनाया है·········और भेसरिया सेठ डर के मारे बम्बई भाग

गया है और जान बटलर कह रहा था कि अब बम्बई वाले साहब पर केस नहीं चल सकेगा।"

"वाह, यह गोश्त तो बहुत उम्दा पका है। किसने पकाया है?" इसहाक़ ने मज़े से खाते हुए कहा।

"यह माँ ने पकाया है।" वासन्ती लाज से दूहरी हो गई—"मुझे गोश्त पकाना नहीं आता। माँ ने इसलिए मुझे डांटा कि किसी दूसरे के घर जायेगी तो क्या बस कपड़े ही धोयेगी? रसोई बनाना न सीखेगी? घर में कोई मुसलमान भाई आ जाये तो क्या पका कर खिलाएगी उसे? मैंने कहा—अबकी बार पका दे माँ, फिर मैं सीख लूँगी।"

वासन्ती ने लज्जा से लाल अपना लजाया चेहरा साड़ी के पल्लू में छिपा लिया।

"माँ ने सालन सचमुच बहुत अच्छा पकाया है"—इसहाक़ चटखारे लेता हुआ बोला—"होटल में तो ऐसा गोश्त एक बार भी नहीं मिला।"

इस पर वे तीनों हँसने लगे।

जेलखाने में लगा हुआ बिजली का बल्ब टूट गया था इसलिए वहाँ रात अंधेरी थी। एक मैला-सा चाँद बादलों के पीछे से, कभी-कभी खिड़की में से मद्धिम-मद्धिम-सा प्रकाश लेकर आता था जिससे मर्देकर और इसहाक़ के गाल चमक उठते थे। वे दोनों एक दूसरे के बहुत पास-पास खिड़की में बैठे थे। एक हाथ दूसरे के हाथ में था और एक का शरीर दूसरे के शरीर से बड़े मैत्री पूर्ण ढंग से सटा हुआ था और वे बड़े धीमे-धीमे स्वर में एक दूसरे को अपने जीवन की कटु और मधुर स्मृतियाँ सुना रहे थे। मर्देकर कह रहा था—

"और जब मैं लड़ाई से लौटा तो कमला गाँव में न थी। पहले दिन तो गांव में किसी ने मुझे न बताया लेकिन दूसरे दिन पता चल गया कि कमला का ब्याह उसके पिता ने पाँडूरंग फूल वाले से कर दिया, जो बम्बई में रहता है और गिरगाँव रोड पर फूल बेचता है।

दो चार दिन रह कर मैं गाँव से चला आया। मेरा जी अपने घर में न लगा। गाँव की प्रत्येक पगडंडी जैसे मेरे पग थाम लेती और मैं खड़ा उन पगों के स्वप्न देखने लग जाता जो कमला के थे और जिसकी मैंने पूजा की थी। और जब मैं हस्पताल में मौत और जिन्दगी के बीच पड़ा था, और जब उन्होंने मेरा बाजू काट डाला और मेरी टाँगें काट डाली तो उस समय मौत के द्वार पर खड़ा भी मैं उन्हीं पगों को अपनी छाती से लगाए था। इसहाक़—क्या तुम समझ रहे हो? मैं क्या कह रहा हूँ? इन्सान कैसे किसी के पगों को अपनी छाती से चिपटा लेता है?"

इसहाक़ को जमीला के नाच में थिरकते पग याद आए और उसने भर्राई आवाज़ में कहा—

"हाँ, समझ रहा हूँ अनन्त।"

"ऐसी ही काली, मैली, मलिन रात थी जब मैं बम्बई पहुँचा। शाम हो चुकी थी। ठाकुरद्वार रोड के नाके पर रोशनियाँ जगमग-जगमग कर रही थीं। पाँडूरंग फूल वाले की दूकान के सामने एक बिजली के खम्बे की ओट में खड़ा होकर मैं कमला को देखने लगा। गुलाबी रंग की साड़ी में, जिसका पल्ला गहरे लाल रंग का था, वह कितनी सुन्दर लग रही थी। वह

सूत के धागों में चम्पा के फ़ूलों का एक बना बाँध रही थी और इस तरह उसका शरीर पाँव के अँगूठे से हाथ के पोर तक एक कमान की तरह खिंच गया था।

"तुम उसके सामने गए? उसने तुम्हें देखा ?"

"नहीं, मैं ओट में खड़ा उसे देखता रहा—अपनी कमला को, जिसे उन्होंने एक फ़ूल वाले से ब्याह दिया था। वह कितनी सुन्दर और सुखी दीख रही थी। मैंने सोचा, मैं उसके सामने कैसे जाऊँ! क्या कहूँ उससे ? आया था इतनी दूर से, कुछ कहने को, कुछ गिला करने को। लेकिन जब मैं उसके पास से गया था तो पूरा इन्सान था, अब लौटा तो आधा इन्सान था। मैंने सोचा— 'वह तो मुझे पहचान भी न सकेगी और जब मेरे बताने पर वह मुझे पहचान लेगी तो जिन निगाहों से मुझे देखेगी, उन निगाहों को मैं कहाँ ले जाकर रखूँगा। मेरे हृदय में तो कमला की हर बात और उसकी हर निगाह के लिए स्थान है। पर उस निगाह को रखने के लिए मैं अपने शरीर और अपनी आत्मा में कौन सी जगह निकालूँगा।"

"अनन्त?" इसहाक़ ने उसका हाथ ज़ोर से दबाया।

"इतने में वह अपना काम पूरा करके पाँडूरंग की ओर मुड़ी। पाँडूरंग जो सुन्दर था, सजीला था और पूरा था। और दोनों के हाथ—पाँडूरंग और कमला के हाथ—एक दूसरे से मिल गए, घुल गए। और मैं जो अब तक न रोया था—न किसी युद्ध-क्षेत्र में, न किसी हस्पताल में, न जिन्दगी के सामने, न मौत के सामने—उस समय कमला के हाथों को पाँडूरंग के हाथों में जाते देख कर रो पड़ा—उसी खम्बे की ओट में, एक दीवार के साये में खड़े-खड़े मेरी आँखों से आँसू उबलने लगे। लाख रोकने पर भी वह रुक न सके और मुझे लगा जैसे मेरा दिल गल-गलकर आँखों की राह आँसुओं में बह जाएगा। अब ज़रा सोचो तो! जिस युद्ध ने मेरे पाँव से मर्द की चाल छीन ली, जिसने मेरे हाथ से प्रेमिका की कमर छीन ली, कान से संगीत का स्वर छीन लिया—मैं उसके विरुद्ध न लड़ूँगा तो क्या कमला के विरुद्ध लड़ूँगा, जिससे मुझे प्यार है? इसहाक़, नफ़रत इन्सान को इन्सान से न होनी चाहिए। नफ़रत उस सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था से होनी चाहिए जो उसे मजबूर, मुफलिस, बुरा और बे सहारा बना देती है।"

एकाएक इसहाक़ को लगा कि उसे उसका जवाब मिल गया—वह जवाब जिसकी अब तक वह तलाश में था। और इस अनुभव से एक नई आशा और एक नूतन जागृति उसके सारे शरीर में दौड़ गई और वह विह्वल होकर अनन्त से लिपट गया।

"क्या हुआ ?" अनन्त ने विस्मित हो इसहाक़ से पूछा।

पर इसहाक़ ने कोई उत्तर न दिया।

उसने अनन्त को लकड़ी की चौड़ी बेंच पर सुला दिया और स्वयं जेलखाने के ठण्डे पथरीले फ़र्श पर कम्बल बिछा कर लेट गया।

रात के तीसरे पहर इसहाक़ को आँख खुल गई। कोई उसे हिला-हिला कर जगा रहा था। इसहाक़ हड़बड़ा कर उठ बैठा। नींद से बोझिल आँखों से उसने कई एक बड़े-बड़े, फैले-फैले चेहरे देखे जो उसे घूर रहे थे। घबरा कर इसहाक़ ने फिर आँखें मलीं और फिर

देखा। अब्दुलमजीद कानिस्टबिल उसे जगाने की कोशिश कर रहा था और उसके सिर पर ऐलसा खड़ी मुस्करा रही थी तथा उसके पास सब-इन्सपैक्टर सामन्त परेशान हाल खड़ा था। उसके मोटे पेट पर से उसकी काली पेटी ढलक गई थी और नैकर भी ढलक कर घुटनों तक पहुँच गई थी।

ऐलसा ने कहा—"उठो, और अपने साथी को भी जगा दो। मैंने तुम दोनों की ज़मानत दे दी है।"

सामन्त ने बौखलाए हुए स्वर में कहा—"रात भर मेम साहिब ने सोने नहीं दिया। कभी लोनावाले के हैडक्वार्टर को टेलीफ़ून, कभी यहां की चौकी में टेली-फ़ून। कभी मैजिस्ट्रेट को डॉट, कभी होटल वाले को फटकार—मेम साहिब ने तो हमारा नाक में दम कर दिया।"

फिर उसने शिकायत भरी निगाहों से इसहाक़ की तरफ़ देख कर कहा—

"तुम तो कहते थे कि तुम्हारा यहाँ कोई नहीं है?"

इसहाक़ मुस्कराया और अनन्त मर्देकर को जगाने लगा। ऐलसा ने सामन्त से हँस कर कहा—"मुझे तुम

से सचमुच सहानुभूति है। यह क़स्बा वास्तव में सोया हुआ क़स्बा है। लोग आठ बजे ही खाना खा कर सो जाते हैं।"

सामन्त ने कहा—"तनिक-सी रौनक़, तनिक-सी भाग-दौड़ शुरू हुई थी। कुछ दिन तो अच्छी तरह से बीतते। आपने मेम साहिब आ के सब चौपट कर दिया।"

इसहाक़ कम्बल तह करने लगा।

"अब तुम यह सब कुछ रहने दो"—सामन्त तनिक कटु-स्वर में बोला—"अब्दुलमजीद यह सब कुछ कर लेगा। अब तुम दोनों मेम साहिब के साथ जाओ।"

जेलखाने का लोहे का द्वार खुला और जब वे लोग बाहर निकल गए तो ज़ोर से बन्द हो गया।

इसहाक़ ने चैन और निश्चिन्तता का साँस लिया।

जब वह पुलिस चौकी से जाने लगा तो सामन्त ने बड़ी प्रफुल्लता से हाथ मिलाया। वह एक नेक-स्वभाव आदमी मालूम होता था और जिस तरह उसने हाथ मिलाया उससे पता लगता था कि उसके दिल में कोई कटुता बाक़ी नहीं रही थी—बस तनिक खेद-सा था।

"अव्वल तो यहाँ कुछ होता नहीं, और अगर कुछ होता है तो लोग जमानत देने आ जाते हैं।" सामन्त ने ज़ोर से हाथ मिलाते हुए अन्त में कहा—

"फिर कभी आना—।"

पुलिस चौकी से निकल कर वे तीनों नीचे की सड़क पर हो लिए। इसहाक़ के क़दम स्वतः होटल की ओर मुड़ गए। मगर ऐलसा ने उसका बाज़ू थाम कर कहा—

"उधर नहीं, इधर।"

वह सामने रेलवे स्टेशन की ओर इशारा कर रही थी।

"मैं तो अभी बम्बई न जाऊँगा।"—इसहाक़ तनिक कठोर स्वर में बोला—"क्या यह भी मैजिस्ट्रेट का हुक्म है ?"

ऐलसा ने कहा—"नहीं, तुम यहाँ जितने दिन चाहो रह सकते हो, पर मुझे तो जाना होगा सुबह की

गाड़ी से। और अब—" उसने अपनी कलाई की घड़ी देख कर कहा—"अब गाड़ी आने में केवल तीन घण्टे बाक़ी हैं। मेरा सामान वेटिंग रूम में रखा है—वहीं चल कर बातें करेंगे।"

फिर उसने अनन्त मर्देकर की ओर देखकर उससे पूछा—"तुम्हारे पास समय है ?"

मर्देकर ने बड़ी गंभीरता से सिर हिलाया, परन्तु उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं।

स्टेशन के वेटिंग रूम में कोई न था। एक बड़ी मेज, चार कुर्सियाँ, एक तरफ़ ऐलसा का थोड़ा-सा सामान और छत का पँखा धीमे-धीमे चल रहा था।

ऐलसा ने कहा—"इस समय चाय को जी चाह रहा है।"

"रात के तीन बजे हैं। अब तो चाय वाला भी अपनी दूकान बन्द करके सो रहा होगा।"

"नहीं"—अनन्त मर्देकर ने कहा—"चाय वाला मेरा दोस्त है। सो भी रहा होगा तो जगा के चाय बनवा कर ले आऊँगा।"

थोड़ी देर बाद चाय आ गई—प्यालों में से गर्म-गर्म भाप उठाती हुई, चेहरों पर ताजगी लाती हुई।

ऐलसा, इसहाक़ और मर्दकर ने अपनी-अपनी कुर्सियाँ पास खिसका लीं।

ऐलसा अपनी प्याली को दोनों हाथों में उठा कर, अपनी हथेलियों में धीरे-धीरे घुमाती हुई बोली—

"यह चाय कितनी अच्छी है, कितनी दूर से आती है, कितनी दूर तक पहुँचती है। कितने ही रंगों, नस्लों, धर्मों और राष्ट्रों के भेद मिटा कर, इन्सान की ज़बान पर वही एक ताजगी पैदा करने वाला ज़ायका ले आती है—यह चाय की नन्हीं-सी पत्ती!"

मर्दकर ने कहा—"चाय मिलाती है, पर जेलखाने जुदा करते हैं।"

"हाँ"—ऐलसा ने कहा—"अभी तक संसार में उन चीज़ों का राज्य है जो जुदा करती हैं। मेरी एक मौसी है। वह पश्चिमी बर्लिन में रहती है और मेरी माँ सकसैनी में रहती थी जो पूर्वी जर्मनी है। मरते समय भी मेरी माँ अपनी बहन को याद करती रही। अन्तिम समय तक भी मेरी माँ को उसके आने की आस बनी रही, मगर उन लोगों ने—चाहे वे कहीं के हों, पर उन लोगों ने जो मिलाते नहीं जुदा करते हैं—एक बहन को दूसरी बहन से न मिलने दिया। ये निराशा के कफ़न कब

तक इन्सानों के सीनों पर लदे रहेंगे। अरे मैं कहती हूँ रंग, नस्ल, धर्म और राष्ट्र के भेदों को बना रहने दो; इनकी सीमाओं को ज्यों का त्यों कायम रहने दो; मगर दिलों को तो मिलने दो। कहीं तो एक सम्मिलित स्थान, एक पंचायत, एक संगम ऐसा रह जाए जहाँ हर तरह के इन्सान सिर जोड़ कर बैठ सकें। जहाँ वे जीते और मरते समय एक-दूसरे का चेहरा देख सकें। अभी तो चेहरे इतने पर्दों और इतने गिलाफ़ों में छिपे हैं कि पास होते हुए भी एक दूसरे को दिखाई नहीं पड़ते।"

थोड़ी देर तक खामोशी रही। तीनों चुपचाप चाय पीते रहे। फिर इसहाक़ ने हौले से कहा—

"मैं बहुत परेशान हूँ। मेरी समझ में कुछ नहीं आता। मेरी तरफ देखो। मेरा नाम इसहाक़ है। मेरा नाम रामलाल नहीं है तो क्या मैं इसी लिए ग़द्दार हूँ? कुछ लोग यही कहते हैं। मैं तुमसे पूछता हूँ अगर इसहाक़ अलग नाम है, तो सुब्रामनियम भी तो रामलाल से अलग है। विठ्ठल राव भी तो रामलाल से जुदा है। नूतनसिंह भी तो रामलाल से जुदा है। ऐन्ड्रूज़ भी तो रामलाल से जुदा है।"

अनन्त मर्देकर चुप रहा।

इसहाक़ तैश में आ कर बोला—"मैं मुसलमान हूँ। मेरी जड़ें इस मुल्क में हैं। यहीं मैं जन्मा हूँ और यहीं पनपा हूँ और यहीं फलूँ फ़लूँगा। लेकिन तुम जानते हो जब पेड़ उगता है, बढ़ता है, फलता-फूलता है तो वह धरती के भीतर ही नहीं रहता। वह धरती के भीतर से ऊपर आता है और आसमान की तरफ देखता है और उसकी शाखें चारों ओर फैलने लगती हैं। मेरी जड़ें हिन्दुस्तान में हैं, मेरा तना हिन्दुस्तान में है, लेकिन मेरी शाखें बहुत से देशों में फैली हुई हैं—पाकिस्तान में और ईरान में; मिश्र में और अलबानियाँ में; मराको और ट्यूनिस में; और इनसे भी आगे रूस में और स्पेन में, इंगलैंड में और अमरीका में; चीन में और मलाया में। जगह-जगह मेरा नाम सुनाई देता है। कहीं पर अगर कोई मेरे नाम पर छुरा चलाता है तो मेरे अन्तर में घाव पैदा होता है और वहाँ से लहू बहने लगता है। मैं पत्थर नही हूँ, एक जानदार इन्सान हूँ—लोग इस बात को क्यों नहीं समझते ?"

ऐलसा ने कहा—"तो तुम्हें बस अपने नाम से प्यार है।"

"नहीं" इसहाक़ ने बड़े ज़ोर और विश्वास से कहा—"मुझे ऐलसा और मर्देकर, नूतनसिंह और एण्ड्रूज;

सुब्रामनियम और रामलाल इन सब नामों से प्यार है। लेकिन मैं इसहाक़ से भी प्यार करता हूँ। क्या अपने नाम से प्यार करना ग़द्दारी है?"

"सिर्फ अपने नाम से प्यार करना और दूसरे नामों से नफ़रत करना ग़द्दारी है।" मर्देकर ने हौले से कहा।

"और नाम से नफ़रत क्यों हो?" ऐलसा ने चाय की प्याली की ओर देखते हुए कहा, "हर नाम एक फूल है।"

"तुमने बड़ी अच्छी बात कही।" इसहाक़ ने ऐलसा के हाथ को चूमते हुए कहा, "ऐसी खूबसूरत बात तो किसी कवि ने भी नहीं कही। लेखक होते हुए भी यह बात कभी मेरे ख्याल में न आई। लेकिन अब तुम्हारी बात से मुझे कितने फूल याद हो आए हैं— फ़ैज़ अहमद फैज़, अहमद नदीम क़ासमी, शफ़ीकुर्रह्मान, हाजरा मसरूर, कुर्रतुलएन हैदर, इबादत बरेलवी। इनमें से हर लेखक एक फूल ही तो है; एक किताब ही तो है; एक इन्सान ही तो है। मैं इनसे कभी नहीं मिला। मैं पाकिस्तान कभी नहीं गया। लेकिन मैंने इनकी किताबें पढ़ी हैं। इनके दिल की धड़कनें सुनी हैं। इनके राजनैतिक और सामाजिक अलग-अलग विचार हैं। लेकिन फूल रंग रूप में एक-दूसरे से जुदा होते हुए

भी तो फ़ूल होते हैं। ये सब फ़ूल हैं। इसलिए जब लोग लड़ाई की बात करते हैं। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में लड़ाई का नारा लगाते हैं तो मेरा दिल काँपने लगता है। मैं सोचता हूँ क्या मैं बन्दूक लेकर इन लोगों की छाती पर चढ़ूंगा ? क्या मैं इन फूलों को मसल डालूंगा ? क्या मैं इन किताबों को टुकड़े-टुकड़े करके तबाह कर दूंगा ? यह किस तरह की देश भक्ति है कि बस अपने देश से प्रेम करो, बाकी लोगों और देशों से नफ़रत करो। अगर मौका मिले तो बन्दूक का कुन्दा मार कर उनके सिर कुचल डालो। और अगर कोई ऐसा कहने वाले के मुंह पर प्लेट खींच मारे तो उसे हवालात में बन्द कर दो।" इसहाक़ ने गुस्से से सिर झटक कर कहा—"कभी कभी तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं एक गहरी खाई में हूँ।"

मर्दकर ने अपना हुक इसहाक़ के कन्धे पर रख दिया। और जब इसहाक़ को वह लोहे का हाथ अपने कन्धे पर महसूस हुआ तो एकाएक उसे झटका सा लगा। उसे लगा जैसे वह उस गहरी खाई में अकेला नहीं है। उसका एक साथी भी है जो नफ़रत की जंग में उससे ज्यादा नुकसान उठा चुका है। इसहाक़ कुछ शर्मिन्दा सा हो कर चुप हो गया।

मर्दकर ने कहा—"गुस्से से या प्लेट मुंह पर मारने से कुछ न होगा। लड़ाई के विरुद्ध हमारा आन्दोलन बहुत ही शान्तिपूर्ण, गंभीर और ठण्डे तरीकों से होना चाहिए। लोग तो हर देश में बसते हैं और उनके नाम बहुत प्यारे होते हैं और जिन लोगों के तुमने अभी नाम लिए, उनसे भी अधिक प्यारे लोग उस देश में बसते होंगे, जिन्हें कोई नहीं जानता। ऐसे ही प्यारे लोग संसार के हर कोने में बसते हैं। अपने नामों, धर्मों और कलचरों के साथ जीवन बिताते हैं। और जैसा जीवन वे बिताना चाहते हैं, उसके बिताने का उन्हें अधिकार है और किसी को अधिकार नहीं पहुँचता कि पूंजीवाद या समाजवाद या किसी अन्यवाद के नाम, किसी धार्मिक या राष्ट्रीय हित के नाम पर, उनके सिर पर बन्दूक ले कर चढ़ जाएं। असली सवाल तो यह है कि किस तरह इन्सान के हाथ से बन्दूक छीनी जाए और उसके बदले हाथ में एक फ़ूल दे दिया जाए! तुम्हें मालूम है जब कोई फ़ूल ले कर किसी से लड़ने जाएगा तो कितना मूर्ख मालूम होगा।"

इसहाक़ हंसने लगा।

मर्दकर ने कहा—"मगर यह कोई आसान काम नहीं है बन्दूक छीन कर हाथ में फ़ूल दे देना।"

इसहाक़ ने बात की धारा बदलने के उद्देश्य से कहा—"तुम जा रही हो, हालाँकि तुमने मुझे इटालियन मिशन के सामने वाला झरना दिखाने को कहा था।"

"वह प्रोग्राम तो तुम्हारी प्लेट ने बदल दिया। अब तुम अकेले ही झरना देखोगे।"

"आज रुक जाओ।"—इसहाक़ ने कहा—"कल चली जाना।"

"नहीं मुझे आज ही जाना होगा।"

"एक दिन में क्या फर्क पड़ जाएगा ?"

"नहीं मैं आज ही जाऊँगी।"

"अच्छा तो शाम की गाड़ी से चले जाना। अब तो मैं तुम्हें एक दिन भी ठहरने के लिए नहीं कह रहा। बस कुछ घण्टों की बात है।"

"नहीं मैं तो इसी गाड़ी से जाऊँगी।"

"बड़ी ज़िद्दी हो ?" इसहाक़ ने मुस्करा कर कहा।

परन्तु ऐलसा मुस्करा न रही थी। उसका चेहरा सफेद था, उसके होंट अन्दर को भिंचे हुए थे और उसकी आँखों की पुतलियाँ सुकड़ गई थीं और इसहाक़ न समझ सका कि उसने ऐसी क्या बात कह दी जो ऐलसा को इतनी बुरी लगी। उसने ऐलसा से पूछा—

"भई मैंने क्या कोई ऐसी बुरी बात कह दी जो तुमने यूँ मुँह लटका लिया। ऐसा है तो मुझे माफ कर दो, मादाम।"

ऐलसा बोली—"तुम नहीं जानते, अनजाने में तुमने मुझे किसी बीती हुई बात की याद दिला दी।"

"क्या ?"

ऐलसा बहुत देर चुप रही। उस समय चारों ओर सन्नाटा था। पौ फटी न थी। गाड़ी कोई आने वाली न थी। स्टेशन बिल्कुल सूना था।

"कभी-कभी मुझे मालूम होता है" ऐलसा एकाएक नामालूम तौर से बोलने लगी—"यह पैरिस का स्टेशन है। मैं और मेरे पति एक गाड़ी का इन्तजार कर रहे हैं। लड़ाई के दिनों में, मैंने तुम्हें बताया कि मेरे पति और मैं, बड़ी मुश्किल से बच कर पैरिस आ गये थे। मेरी माँ ने तो मेरे साथ आने से इन्कार कर दिया, पर मेरे पति के माता पिता चूँकि यहूदी थे, हमारे साथ चले आए। जब खतरे की सीमा पार करने का समय आया तो जो लोग भागने में हमारी सहायता कर रहे थे, उन्होंने नाजियों से बचाने के लिये हमें दो-दो के जोड़े में सीमा पार पहुँचाया। पहले हमें पहुँचाया गया और तय पाया कि दूसरे दिन अमुक गाड़ी से मेरे पति के माता पिता को भी पैरिस पहुँचा दिया जायेगा। और हम उस गाड़ी पर उनको लेने स्टेशन पहुँच जायें।

दूसरे दिन हम गाड़ी पर उन्हें लेने पहुँच गए। लेकिन उस दिन वह गाड़ी न आई।

मुझे याद है मेरे पति बैंच से उठ-उठ कर बार-बार आउट सिग्नल की ओर देखते थे। दूर तक रेल की पटरियाँ खाली पड़ी थीं। वे बार-बार बेचैन होकर घड़ी देखते थे। घण्टे बीतते चले गये पर गाड़ी न आई।

निराश हो हम घर लौट आए।

दूसरे दिन फिर पहुँचे, उसी समय।

दूसरे दिन गाड़ी आई, पर उसमें माता पिता न न आये। हमने सारी गाड़ी छान मारी पर उनका पता न मिला। गाड़ी आ गई थी, पर गाड़ी से आने वाले न आए थे। मेरा जी अन्दर से बैठने लगा। फिर भी मैंने अपने पति को सान्त्वना देने के लिए कहा—"हो सकता है वे लोग उन्हें आज सीमा पार न करा सके हों, गाड़ी में न चढ़ा सके हों। हो सकता है कल उन्हें भेज दें।"

अगले दिन फिर वे स्टेशन गये।

तीसरे दिन फिर वे लेने गए।

चौथे दिन भी गये।

इसी तरह पन्द्रह दिन तक जाते रहे।

हर रोज़ गाड़ी आती रही, मगर वे न आए जिन्हें आना था। वे कभी न आए।

उस दिन से मेरे पति को एक अजीब-सा सदमा बैठ गया है। यूँ तो वे बिल्कुल ठीक हैं। मगर कभी-कभी रात के सन्नाटे में जब किसी गाड़ी की सीटी या गाड़ी की आवाज़ सुन लेते हैं तो सोते में उठकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगते हैं—"माँ, माँ, पिता जी।"

ऐलसा चुप हो गई।

मर्देकर की आँखों में एक नन्हा-सा आँसू काँपने लगा।

"अब तुम समझ गये, इसी गाड़ी से मेरा जाना क्यों ज़रूरी है? वे मुझे स्टेशन पर लेने आयेंगे। अगर मैं इस गाड़ी से न जाऊँ?"

"नहीं-नहीं, ऐलसा" इसहाक़ ने जोर से ऐलसा के हाथ दबाते हुए कहा—"तुम इसी गाड़ी से जाओगी।"

यह जर्मन नस्ल की औरत ऐलसा इसहाक़ को बहुत पसंद आई थी। इसहाक़ ने होटल की ओर जाते हुए

सोचा—'ज़िन्दगी के कड़वे घूटों से उसने कड़वाहट नहीं ली—बस अनुभव की गहराई ली। कितनी समझदार औरत है।'

इसहाक़ चलते-चलते उसकी बातों पर ग़ौर करने लगा। गाड़ी में बैठ कर, खिड़की से हाथ निकाल कर उसने इसहाक़ का हाथ अपने हाथ में ले लिया था और यद्यपि वह उसी की उम्र की थी, फिर भी बड़ी बहन के अन्दाज़ में कहा था—"तुम नहीं मरोगे। दुनिया में उतने ही प्यार हैं जितनी कि औरतें—इसलिए तुम नहीं मरोगे—वायदा करो इसहाक़ कि तुम जिओगे।"

मगर इसहाक़ उससे कोई वायदा न कर सका। मुहब्बत की बात आजाने से एक बरछी-सी उसके दिल में उतर गई, और चाकू के फल की तरह उसके दिल में बार-बार घूमने लगी। और उसकी आँखों में जहाँ एक क्षण पहले प्रफुल्लता थी वहाँ अब वेदना और विषाद झलकने लगा था। उसने ज़ोर से अपने होंट भींच लिए और फिर बलपूर्वक होंटों पर मुस्कराहट पैदा की—छोटी सी मुस्कराहट, क्योंकि यह मुस्कराहट न थी, एक घाव था। कहीं घाव खुल न जाए, इसलिए वह बस तनिक-सा मुस्कराया।

खंडाले के बाज़ार में जाकर मर्देकर ने उस से विदा ली। विदा लेते समय वह बोला—

"आज शाम को त्रिमूर्ति के मैदान में सभा है। तुम आओगे न ?"

मगर इसहाक़ ने कोई उत्तर न दिया—न हाँ, न ना में। वह चुपचाप उससे हाथ मिलाकर विदा हुआ और सिर झुकाए उस पहाड़ी पर चढ़ने लगा जिस पर उसका होटल था। जब वह चोटी पर पहुँच गया तो तेजी से होटल के अहाते में दाख़िल हुआ और सीधा दनदनाता अपनी काटेज में घुस गया और वहाँ जा कर अपने सोफ़े में धंस गया। सहसा उसकी आँखों में आँसू भर आए। कि वह कमरे में अकेला नहीं है, उसे उस समय तक मालूम न हो सका जब तक एक तरफ़ से आवाज़ न आई—

"मैं कब से तुम्हारी बाट देख रहा हूँ, सन्जे।"

इसहाक़ ने पलट कर देखा—दायीं ओर के सोफे पर मुलतानी बैठा था।

जब इसहाक़ ने पहली नजर में मुलतानी का चेहरा देखा तो उसे वह चेहरा बड़ा अजीब-सा लगा।

यूं तो हर चेहरा अजीब होता है, विभिन्न विशिष्टता लिए हुए होता है और क्योंकि वह एक व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व का द्योतक होता है, इसलिए किसी दूसरे चेहरे से नहीं मिलता। लेकिन उस समय मुलतानी का चेहरा कुछ अधिक ही अजीब, अलग-सा, अनदेखा-सा लगा। चेहरा केवल व्यक्तित्व का द्योतक ही नहीं होता, वह मूड का चित्र और मनोदशा का समाचार पत्र होता है और विशेष स्थितियों में आत्मा की मंज़िल का पता भी देता है। इसहाक़ ने मुलतानी के चेहरे को कुछ इस तरह ध्यान से देखा जैसे उसे पहली बार देख रहा हो। सुता हुआ चेहरा, पीला रंग, खुरदरे गालों पर चेचक के हल्के गढ़े, मोटी नाक—होटों के ऊपर से अजीब ढंग से उठी हुई, घनी भवों के नीचे आँखों के

फटे-फटे अन्दाज़, और वे होंट—मोटे और साँवले, किनारों से तंग और बीच में से इस तरह तनिक से खुले हुए कि ऊपर के दो दाँत साफ़ दिखाई पड़ रहे थे।

उसके होंट ऐसे तो कभी न थे। चेहरा कभी ऐसी मनोदशा का सूचक तो कभी न था। वह बदसूरत था, पर इतना बदसूरत तो कभी न था। उसके शरीर और उसके व्यक्तित्व में घृणित तत्व अवश्य थे, पर वह इतना सम्पूर्ण रूप से घृणित तो कभी नज़र न आया था। आज तो वह कुछ डर से ज़्यादा मुरझाया हुआ, टूटा हुआ, चुरमुराया हुआ दिखाई पड़ रहा था।

सहसा उसके मस्तिष्क में एक विचार आया और उसने मुलतानी का हाथ ज़ोर से पकड़ कर कहा—

"जमीला तो ख़ैरियत से है ?"

मुलतानी ने बोलने की कोशिश की, लेकिन वह न बोल सका। उसका गला सूख गया था। उसने तिपाई पर रखा पानी का जग उठाया और उसे मुँह से लगा कर ग़टाग़ट पानी पीने लगा। जब वह पानी पी चुका तो इसहाक़ ने और भी घबरा कर मुलतानी का कन्धा पकड़ लिया और उसे झंझोड़ते हुए बोला—"बोलते

क्यों नहीं क्या हुआ है जमीला को ? साफ़-साफ़ बताओ?" मुलतानी ने कहा—"बेबी बिल्कुल ठीक है।"

और जब इसहाक़ को मालूम हो गया कि जमीला बिल्कुल ठीक है तो उसके मन में दूसरा विचार आया और उसने क्रोध से मुलतानी की ओर देख कर कहा—

"जमीला बेबी नहीं है। उसकी उम्र पच्चीस बरस की है।" मुलतानी ने उत्तर में कहा—"मैं उसको उस समय से जानता हूँ जब वह उन्नीस बरस की थी और बिल्कुल बेबी की तरह बात करती थी। मेरे लिए तो वह सदा बेबी रहेगी।"

इसहाक़ ने उससे पूछा—"तुम पहली बार उससे कैसे मिले ?"

मुलतानी ने अपनी आंखें बन्द कर लीं। उसके दोनों पपोटों पर भी चेचक के दाग़ थे और इन बन्द पपोटों से उसका चेहरा और भी अजीब मालूम होता था। वह कहने लगा—

"आज से छैः साल पहले हमारा जहाज़ अदन से बम्बई आया था। बन्दरगाह में उतरते ही हमें शराब और औरतों की ज़रूरत हुई। तब तो मैं भी दूसरे जहाज़ी अफसरों की तरह था, जिनकी हर बन्दरगाह में एक बीवी होती है। इसलिए उस रात को जो पार्टी

हुई, उसमें मैंने जमीला को देखा। उसे एक दलाल लाया था। उसने कहा था वह बिल्कुल नई है और जमीला के वास्ते मैंने उसे डेढ़ सौ रुपये दिये थे। पर रात को जब मैं जमीला के पास गया तो उसने कहा—"क्या दुनिया में कोई मर्द ऐसा नहीं है जो एक बे-सहारा औरत की आबरू बचाए?" सन्जे, यह उसने मुझसे कहा, और मैंने उससे कहा—'मैं तेरी आबरू बचाऊँगा।' क्योंकि उसने बताया कि वह अब तक किसी मर्द के पास नहीं गई है और घर वालों की गरीबी से मजबूर हो कर आज की रात पहली बार········।'

"उसकी हर रात पहली रात होती है"—इसहाक़ ने गुस्से से कहा—

"तुम झूठ बोलते हो।" मुलतानी गरज कर बोला। उसका चेहरा एक दम लाल हो गया। उसके हाथ पाँव काँपने लगे और वह इस तरह वहशी नज़रों से इसहाक़ की ओर देखने लगा जैसे उसे कच्चा ही खा जाएगा।

इसहाक़ ने उसे ठंडा किया, उससे माफ़ी माँगी—"अच्छा, अच्छा जाने दो। मैं माने लेता हूँ कि वह कुँवारी है, आबरू वाली है, सुबह की तरह पाक है।"

"मैं बेबी के खिलाफ़ कोई बात नहीं सुन सकता।"—मुलतानी आँखें झुका कर बोला—"सुन ही

नहीं सकता। सुनते ही मुझे कुछ हो जाता है। मैं उस आदमी को जान से मार सकता हूँ।" मुलतानी की आवाज़ में उस भयानक संकल्प की दृढ़ता की गूँज थी जिसके कारण इसहाक़ को उसकी बात पर विश्वास करना पड़ा।

"मैं उसे छः साल से जानता हूँ। जिस रात वह मेरे पास आई बिकने के लिए, उस रात से आज तक मैंने उसकी इज्जत की है, उसकी आबरू को बचाया है। पहिले मैं साढ़े छः सौ रुपये लेता था और उसे पांच सौ भेज देता था। फिर जब मैं सैकिन्ड इन्जीनियर हुआ तो मुझे बारह सौ मिलने लगे और मैं उसे नौ सौ रुपया भेजने लगा—और आज तक भेजता हूँ। मजगाँव में यह फ्लैट मैंने उसे ले कर दिया है। बेबी को नाचने का बड़ा शौक था। मैंने उसे डान्स मास्टर रख दिया। बेबी को अच्छे कपड़ों का, अच्छे फर्नीचर का बड़ा शौक है। मैंने उससे कहा—बेबी आज से मैंने अपना हाथ तुझे दिया—तू आज से अपना हर शौक पूरा कर सकती है। और तुमने उसका घर देखा है? तुम जानते हो वह किस ठाठ से रहती है, मेरी बेबी ?"

इसहाक ने कहा—"मैंने उसके बहुत से शौक़ और बहुत से ठाठ देखे हैं। तुम जो कहते हो, सब सच है।

और वह है भी बड़ी प्यारी और ख़ूबसूरत।"

"मेरी बेबी दुनिया में सब से प्यारी और खूबसूरत लड़की है। इसीलिए मैं उसे भूल नहीं पा रहा हूँ।" मुलतानी ने मेज़ पर मुक्का मार कर कहा—"मैं सारी दुनिया में घूमा हूँ। साउथ अमरीका तक गया हूँ। हर मुल्क और हर देश की बन्दरगाह मैंने देखी है। मगर बेबी जैसी लड़की मैंने कहीं नहीं देखी।"

"इसमें क्या शक है"—

अब मुलतानी उसे बोर करने लगा। "छैः साल से मैं उसे सम्भाल रहा हूँ। उसको बचाए हुए हूँ। औरत को अगर सुख मिले, धन-दौलत मिले तो वह बुरा काम क्यों करेगी? ठीक है न?" मुलतानी ने चौंक कर इसहाक़ से पूछा।

"बिल्कुल ठीक कहते हो तुम।" इसहाक़ ने सिर हिला कर जवाब दिया।

"मेरी बेबी सरीखी नेक और शरीफ लड़की दुनिया में नहीं है। मुलतानी ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

इसहाक़ चुप हो गया। थोड़ी देर बाद बोला—

"क्या तुम्हें जमीला ने यहाँ भेजा है?"

"नहीं, मैं आप यहाँ आया हूँ।" मुलतानी ने फिर मेज़ पर मुक्का मारा।

इसहाक़ ने पानी का जग तिपाई पर से उठा कर परे रख दिया। फिर एक सिग्रेट आप सुलगाया और एक मुलतानी के मुँह में दिया। फिर सिग्रेट का कश लेते हुए बोला—"तुम्हें जमीला से किस तरह की मुहब्बत है—तुमने कभी सोचा ?"

"क्या मतलब ?"

"मेरा मतलब है कि तुम जमीला से किस तरह की मुहब्बत करते हो ? तुम उसे एक भाई की तरह चाहते हो या एक मर्द की तरह ? दोनों की मुहब्बतों में बड़ा फ़र्क होता है।"

सिग्रेट पीते-पीते मुलतानी के गले में फन्दा पड़ गया। खाँसते-खाँसते बे-दम हो गया। इसहाक़ ने उसे फिर पानी पिलाया। जब उसका साँस ठीक हो गया और वह संभल गया तो भी उसने इसहाक़ के सवाल का जवाब न दिया।

इसहाक़ को इससे तनिक भी परेशानी न हुई। उसने सोफ़े से उठते हुए कहा—

"तुम्हारे लिए नाश्ते का आर्डर दे दूँ ?"

"नहीं, बैठो—मुझे तुमसे एक बात करनी है।" मुलतानी ने एकाएक बड़ी कठोरता से कहा और फिर एक दम चुप हो गया।

इसहाक़ ने कहा—"तुम्हें जमीला ने यहां भेजा है ?"

"हाँ" मुलतानी ने उससे निगाहें चुराते हुए कहा—"जमीला ने मुझे सब कुछ बता दिया है, सन्जे ।"

"सब ?" इसहाक़ ने पूछा ।

"हाँ सब ! कैसे तुमने उससे मुहब्बत करने की कोशिश की । कैसे मेरी बेबी ने तुम्हें इन्कार कर दिया । कैसे तुमने उसे शराब पिला कर उसकी इज्ज़त लूटना चाही, कैसे उसने अपने आपको तुम से बचाया । कैसे तुमने मेरे पीछे छः महीने तक उसके घर के चक्कर लगाए और वह हर बार तुम्हें ठुकराती रही । आखिर तुमने उससे शादी को कहा, पर मेरी बेबी न मानी और उसने तुम्हें दरवाजा दिखाया । कैसे तुमने मर जाने की धमकी दी और यहां चले आए । मेरी बेबी बड़ी नर्म दिल है । उसने मुझे सब बता दिया । वह नहीं चाहती कि तुम मरो या कोई मरे उसके लिए । वह तुम्हारी जान बचाना चाहती है इसलिए उसने मुझे यहां भेजा कि मैं तुम्हें समझाऊँ । मुझे मालूम नहीं था कि तुम एक राइटर हो कर एक लड़की की इज्ज़त लोगे । मैं तुम्हारी बड़ी इज्ज़त करता था । मुझे क्या मालूम था कि तुम मेरी ही बेबी पर हाथ साफ़ करोगे ।

मुझे क्या मालूम था कि मैं एक साँप को पाल रहा हूँ, संजे।"

"आपने मुझे नहीं पाला मिस्टर।" इसहाक ने ताव में आकर कहा—"मैं आपकी बेबी नहीं हूँ।"

"मैं ने तुमको शराब पिलाई, खाना खिलाया, एक शरीफ लड़की से तुम्हारी जान पहचान कराई, और तुमने मेरे ऐहसान का यह बदला चुकाया ?"

मुलतानी बिल्कुल वहशियों की तरह आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी तरफ़ देख रहा था।

इसहाक़ का खून खौलने लगा। वह सोफ़े से खड़ा हो कर कमरे में टहलने लगा। मगर उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। वह बड़ी तेज़ी से मुलतानी की ओर बढ़ा और बड़ी सख्ती से अपने हाथ उसके कन्धे पर जमा कर बोला—

"तुम, मोतीराम मुलतानी बड़े बेवक़ूफ और अहमक हो। तुम्हें क्या यह नहीं मालूम कि औरत सुख, आराम घर, फर्नीचर और रुपये पैसे के अलावा कुछ और भी चाहती है—वह जो तुम न दे सके। जो तुम देना चाहते थे, पर दे न सके। अहमक़ आदमी, मैं आज तुम्हें बताता हूँ कि असल में तुम उसे एक भाई की

तरह नहीं, एक प्रेमी की तरह चाहते हो। मगर तुम्हारी हिम्मत ही नहीं पड़ती। तुमने आज तक बन्दरगाहों पर औरतों को फलों और शराब की बोतलों की तरह खरीदा। इस तरह तुमने छः सौ या नौ सौ रुपये माहवार पर एक औरत की मुहब्बत को खरीदना चाहा। मगर तुम्हारी हिम्मत न पड़ी कि तुम इस बात को जबान पर लाओ। तुम हर महीने उसे रुपये भेजते रहे, और हर महीने तुम्हारा दिल और ज्यादा काँपता चला गया। अन्दर ही अन्दर सिमटता, सिकुड़ता चला गया और तुम उसे हाथ भी न लगा सके। और तुमने अपने दिमाग़ में एक औरत की बजाए एक बेबी, एक अनसमझ बालक, एक देवी की तस्वीर घड़ ली। हालाँकि सच यह है कि तुम्हारी बेबी, तुम्हारी जमीला एक बेबी नहीं है, बालक नहीं है, देवी नहीं है, कुवाँरी नहीं है। वह उस समय भी ऐसी नहीं थी जब वह उन्नीस साल की थी और तुम्हारे पास बिकने आई थी। वह उस रात भी ऐसी न थी, जिस रात तुमने उसे मुझसे मिलाया। आज मैं तुमसे कहता हूँ कि वह तुमसे छः साल तक झूठ बोलती रही, और तुम भी छः साल तक अपने से झूठ बोलते रहे हो। अपने को धोखा देते रहे हो। इसमें जमीला का इतना क़सूर नहीं है, जितना तुम्हारा। आज मैं

तुम्हारी आँखों से धोखे का पर्दा हटाता हूँ। सुन लो, मेरी ज़बान से सुन लो। तुम्हारी जमीला स्वर्ग की अप्सरा या देवी नहीं है, मिस्टर मोतीराम मुलतानी सैकिन्ड इन्जीनियर एस० एस० निज़ाम। मैं आज तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारी जमीला उतनी ही पाक है जितनी कि वह औरत, जो हर रात एक नए आदमी की गोद में सो जाती है।"

मुलतानी ने पानी का जग उठाया और उसे इसहाक़ पर खींच मारा। इसहाक़ जरा हट गया और काँच का जग दीवार से टकरा कर, फर्श पर गिर कर चूर-चूर हो गया। मुलतानी एक कुर्सी उठा कर मारने वाला था कि इसहाक़ ने उसे पकड़ लिया। मगर मुलतानी पागलों की तरह उसे पीटने लगा और इसहाक़ को पीटना उस समय तक बन्द न किया, जब तक इसहाक़ ने उसके जबड़े पर ज़ोर का एक घूँसा न दिया। घूँसा खाकर मुलतानी ज़ोर से चकराया और इसहाक़ के बिस्तर पर गिर पड़ा। गिरते ही उसका शरीर तड़पने लगा। वह फिर उठ न सका। उसने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया और सिसक-सिसक कर रोने लगा। वह इस तरह रोया जैसे उसकी आत्मा का बाँध टूट गया हो, और वह इस तरह डकराया जैसे किसी

जानवर के गले पर क़साई ने छुरी रख दी हो। इसहाक़ ने उसे कुछ न कहा, बस रोने दिया। वह झुक कर फर्श से काँच के टुकड़े बीनने लगा। टुकड़े बीन कर उसने रुमाल में रखे और उन्हें बाहर फेंक आया। अन्दर आकर उसने बाथरूम में हाथ धोये, मुँह साफ किया और वापिस ड्राइंग रूम में आकर सोफ़े पर सिग्रेट पीने लगा।

मुलतानी अब तक बिस्तर पर औंधा पड़ा था, पर उसकी सिसकियाँ बन्द हो गई थीं। इसहाक़ धीरे से अपने सोफ़े से उठा और बिस्तर पर मुलतानी के पास बैठ गया और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा। कुछ देर में मुलतानी सीधा होकर लेट गया। इसहाक़ ने तकिया उसके सिर के नीचे रख दिया। मुलतानी अब सुबक नहीं रहा था, लेकिन आँसू उसकी आँखों में अब भी भरे थे और उबल रहे थे।

मुलतानी ने आँखें मूँदे-मूँदे, लेटे-लेटे उससे कहा—"कल रात मैंने उससे शादी को कहा, उसने इन्कार कर दिया।"

थोड़ी देर तक खामोशी रही, फिर इसहाक़ बोला—"इन्कार की क्या वजह बताई ?"

"कहने लगी, तुम मुसलमान नहीं हो, अमीर नहीं हो, खूबसूरत नहीं हो। इसलिए मुझे तुमसे मुहब्बत नहीं हो सकती।"

"तो!" इसहाक़ पूछने लगा, "तो—मुहब्बत में क्या यह ज़रूरी है कि आदमी मुसलमान हो, हिन्दू हो, सिक्ख या ईसाई हो? उसकी एक कार हो, चौदह सौ रुपये तनख्वाह हो, चार इंच से कम लम्बी नाक और चालीस इंच से कम चौड़ी छाती न हो।" मुलतानी कुछ न बोला। 'फिर तो यह मुहब्बत न हुई'—इसहाक़ सोचने लगा, 'यह तो सीमेंट की बोरी हुई, नाइलान की साढ़ी हुई, ऊँची एड़ी का सैंडिल हुआ। मगर कुछ लोग मुहब्बत भी इस तरह करते हैं जैसे पाँव के जूते खरीदते हैं।"

इस तरह इसहाक़ ने सोचा, पर मुलतानी से कुछ न कहा। मुलतानी का जबड़ा सूज गया था और मुँह से खून बह निकला था। इसहाक़ ने रुमाल से खून साफ़ किया।

थोड़ी देर बाद मुलतानी बिस्तर से उठ बैठा और बोला—"अब मैं जाऊँगा।"

"कहां जाओगे?"

थोड़ी देर तक मुलतानी चुप रहा। व्यथा और पीड़ा की एक बड़ी मार्मिक भावना उसकी आँखों में पैदा हुई।

पर दूसरे ही क्षण वह लोप हो गई। उसने धीरे से कहा—

"मैंने फैसला कर लिया है। अब मैं एस० एस० निजाम की नौकरी छोड़ दूँगा और बाहर के किसी जहाज़ पर नौकरी कर लूँगा। एक साउथ अमरीकी जहाज़ पर मुझे फर्स्ट इंजीनियर की नौकरी मिल रही है—सोलह सौ रुपये की। वह अब मैं मंजूर कर लूँगा और बम्बई कभी न आऊँगा। हाँ, हर महीने बेबी को बारह सौ रुपये भेज दूँगा।"

"सब कुछ जानते हुए भी ?"

"हाँ, सब कुछ जानते हुए भी।" मोतीराम मुलतानी ने धीरे से, बहुत धीरे से कहा।

इसहाक़ अचरज से मुलतानी की ओर देखने लगा। मुलतानी बोला—"जो कुछ तुमने कहा, जो कुछ बेबी ने मुझ से कहा, जो कुछ लोगों ने मुझ से कहा, जो कुछ इन छः सालों में मेरे दिमाग ने मुझ से कहा—उस सबके बावजूद मेरे दिल में जमीला की जो तस्वीर है, वह तो वही है। वह तो मिट न सकेगी, संजे ?"

इतना कह कर मुलतानी बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। इसहाक़ की ओर देख कर धीरे से मुस्कराया।

और जब वह मुस्कराया तो इसहाक़, जो अब तक संजे को न समझ सका था। उसको जैसे बहुत कुछ समझ गया। एकाएक इस नन्हीं-सी मुस्कराहट ने पहली बार इसहाक़ की नजरों में मुलतानी का चेहरा बदल दिया। वह उसके बदसूरत चेहरे को पिघलते हुए और उसके अन्दर से एक खूबसूरत चेहरे को उभरते हुए देखने लगा, जिसमें रोमयो की महानता, रांझे की वफ़ादारी और महीवाल के तेवर घुले हुए थे। यह निस्वार्थ प्रेम, यह महान त्याग, यह अडिग अमर भावना—कौन कहता है कि आज का मानव भाव-शून्य और भौतिकवादी हो गया है।

इसहाक़ की आँखों में आँसू चुभने लगे। वह उसे कुछ न कह सका। उससे हाथ तक न मिला सका। मुलतानी ने अपनी टोपी उठाई, उसे सिर पर रखा, एक बार फिर बुझी-बुझी शर्माई-शर्माई-सी निगाह से इसहाक़ की तरफ देखा और अंग्रेज़ी में बोला—

"It is an Investment in a dream."

उसने ज़रा-सी टोपी उठाई, इसहाक़ को सलाम किया और बाहर निकल गया।

इसहाक़ उसके पीछे-पीछे बरामदे तक गया। मगर उसने उससे कुछ कहा नहीं। उसे मालूम था कि आज

के बाद वह मुलतानी को कभी न देख सकेगा। किन-किन समुद्रों में उसकी नैया डोलेगी। किन-किन किनारों पर उसका विकल, व्यथित मन भटका-भटका फिरेगा। किन आसमानों के तले और किन जमीनों की अजनबी गोदियों में उसे नींद आएगी। उसके लिए कोई आस बाकी न रहेगी, कोई गीत शेष न रहेगा, पर फिर भी वह प्यार करता ही जाएगा। संसार में ऐसे भी प्राणी बसते हैं जो कुछ नहीं कहते, कुछ नहीं माँगते, कुछ नहीं पाते और अपने जीवन की सारी निधि एक सपने पर लुटा देते हैं।

'It is an investment in dream'' शब्दों का कौन-सा समूह, भाषा की कौनसी शैली, दर्शन शास्त्र का कौन-सा सिद्धान्त आत्मा की इस तृष्णा और मानव के इस निस्स्वार्थ आत्म-त्याग की व्याख्या कर सकता है।

'विदा, अन्तिम विदा, संजे !'

आज उसके जीवन का अन्तिम दिन था। इसलिए उसे कुछ मालूम न हुआ कि समय कब बीता, कैसे बीता।

आज उसने नाश्ता भी न किया, खाना भी न खाया। उसे कुछ याद ही न रहा, वह अपने विचारों ही में खोया रहा और दिन भर सिग्रेट फूँकता रहा। तीसरे पहर जब काटेज के पिछवाड़े साये लम्बे हो गये तो वह बाहर एक आराम कुर्सी डलवा कर उस पर लेट गया। आकाश पर बादल घिर आये थे और उसे कुछ मालूम न था। वह विचारमग्न था, और अतीत के चित्र, चल-चित्र की भाँति उसके मस्तिष्क में आते चले जा रहे थे।

वर्षा की एक बूँद उसके पाँव पर पड़ी। एक बूँद, फिर दो बूँदें, फिर तीन बूँदें, फिर बूँदें ही बूँदे उसके शरीर में समाती चली गई। पहले उसके जूते भीगे, फिर कमीज़ भीगी, फिर पतलून भीगी, अन्त में उसके हाथ में जलता हुआ सिगरेट भीग कर बुझ गया और इसहाक़ को ऐसा लगा जैसे उसके शरीर में हजारों नदी नाले बह रहे हैं और उसके दिल की ओर बढ़ रहे हैं। फिर वहां से यह पानी, खून में मिलकर, हज़ारों रगों और नसों में होता हुआ शरीर के अंग-अंग में लहरें ले रहा है। और जब वर्षा थमने के बाद आराम कुर्सी से उठा तो उसे ऐसा लगा जैसे वर्षा की इन बूँदों ने हज़ारों वर्ष पुराने घाव भर दिये और मन का कौना-कौना फिर इतना पुनर्जीवित हो चुका है कि अब फिर सहर्ष लाखों घाव खा सकता है।

एकाएक उसे ध्यान आया कि आज त्रिमूर्ति के मैदान में जलसा है। इस बात के याद आते ही वह काटेज से निकल कर भागा। वह उन्हीं भीगे कपड़ों में भागता चला गया। उस समय वर्षा थम गई थी और आकाश पर बादल फट कर अलग होते जा रहे थे। हवा के शीतल झोंके उसके शरीर और उसके कपड़ों को सुखा रहे थे और वह भागता चला जा रहा था।

त्रिमूर्ति के मैदान के पास एक टीले पर पहुँच कर वह रुका और नीचे देखने लगा। त्रिमूर्ति के मैदान में कोई न था। पुल के नीचे नदी बह रही थी। पुल के पार कदम का पेड़ खड़ा था। कदम के पेड़ के एक ओर से मर्देकर आ रहा था, धीरे-धीरे अपनी बैसाखी सँभाले हुए। कदम के पेड़ के दूसरी ओर से वासन्ती आ रही थी, धीरे-धीरे सिर झुकाए हुए। फिर सहसा दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया। चौंक कर उन्होंने इधर-उधर देखा। मगर वहाँ तो उनके सिवाये और कोई न था। एकाएक उनके कदम तेज़ होने लगे और आखिरी फासला उन्होंने लगभग दौड़ते हुए तै किया और जब वे कदम के पेड़ के तले मिले तो सारे संयम और सारे संकोच भुला कर एक-दूसरे के बाहुपाश में चले गये। और एकाएक टीले पर से देखने वाले इसहाक़

ने महसूस किया कि जो पहले आधा था, अधूरा था, वह अब सम्पूर्ण, सर्वांग हो गया। वह जिसका बाज़ू नहीं था, जिसकी टाँग नहीं थी और एक कान नहीं था, वह आज वासन्ती को पाकर सम्पूर्ण हो गया। और अनोखे हर्ष से इसहाक़ का मन भरपूर हो गया। उसने घूम कर अपने चारों ओर टीले पर से देखा। अब एक-एक करके घाटियों, ढलवानों और टीलों पर से किसान आ रहे थे। किसी के हाथ में हल था तो कोई दराँती पकड़े हुए था। कोई अपना बच्चा उठाए हुए था तो कोई अपनी घरवाली से बातें करता आ रहा था। औरतों की बाहों में धान की बालियाँ थीं और वह धरती की उपज, आकाश की भव्यता और जीवन की पवित्रता के गीत गा रही थीं। और बच्चे तेज़ी से दौड़ते, उछलते-कूदते हुए, खुशी से धूम मचाते हुए सभा-स्थल की ओर बढ़ रहे थे।

और मर्दकर वासन्ती की लजीली आँखों को देखकर कह रहा था—"संसार में केवल जीवन ही पवित्र है। इस खुले आसमान के तले, इस धरती के ऊपर बस जीवन ही पवित्र है। जीवन है तो प्रेम है, जीवन है तो देश है, जीवन है तो राष्ट्र है, धर्म है, समाज है, उसके चर्चे और उसकी चहल पहल है। और अगर जीवन

नहीं है तो कुछ नहीं है। इस लिए हम इस धरती पर सदा इस जीवन की रक्षा करेंगें।"

हज़ारों कंठों से जीवन और प्रेम के नारे फूट पड़े। इन नारों ने पृथ्वी और आकाश को गुँजा दिया। एका एक पास के एक टीले पर दो नंग-धड़ंग इन्सान दिखाई पड़े। एक मर्द, एक औरत- भूखे, दुबले, हड्डियों का ढाँचा, वृक्षों की जड़ें खोद कर खाने वाले, वे क्षितिज पर एक व्यंग पूर्ण प्रश्नसूचक चिन्ह की तरह खड़े थे और विस्मित हो उस सभा की ओर देख रहे थे।

उन्हें देखकर इसहाक़ को विचार हुआ 'मुझे जिन्दा रहना होगा, केवल अपनी पाँच हजार वर्ष की सभ्यता को बचाने के लिए ही नहीं बल्कि उसमें दस हजार वर्ष पूर्व की बर्बरता के अवशेषों को मिटाने के लिए भी।' फिर इसहाक़ के मन में ऐलसा के पति के माता-पिता का ख्याल आया। उसने सोचा, 'मुझे जिन्दा रहना होगा, उस एक ट्रेन को वापिस लाने के लिए जो अभी पैरिस के स्टेशन पर आयी नहीं।' फिर उसके मन में मुलतानी के निस्वार्थ प्रेम का विचार आया। और उसने सोचा, 'इस खुले आसमान के तले, प्रेम की इस भव्य मेहराब के तले प्रेम में निराश होके आत्म-हत्या करना प्रेम का सबसे बड़ा अपमान होगा।'

और यकायक उसके मन में आत्म-हत्या की भावना कमज़ोर होती हुई स्वतः मर गई और उसके स्थान पर जीवित रहने की प्रदीप्त भावना एक सोते की तरह फूट कर बह निकली। और उसने बेताव होकर अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठा दिये, जहाँ बादलों में दरारें ही दरारें थीं और छेद ही छेद थे। और आकाश के इन झरोखों और रोशनदानों से प्रकाश इस तरह छन-छन कर आ रहा था जैसे किसी ने आकाश के शयन-कक्ष में लाखों दीपक जला दिए हों। "ऐ रौशन आसमान !" इसहाक़ खुशी से चिल्लाया।

फिर वह बाँहें फैलाए हर्षोन्मत, पुलकित, त्रिमूर्ति के मैदान की ओर दौड़ता चला गया।